पाठ सात

पहली फसल

बन्त व्यापार व तिजारत

1– पेशा–कुफ़ल साज़ी

1. आट– (स्त्री.) डब कुफ़ल साजो की इक्तलाह में कुफ़ल के मुँह के ढ़कने की रोक को बनी हुई चूलें यानि खाँचे जिसमें ढ़कने की लोरें अटकी रहती है और ढ़कना ऊपर नीचे सरकाने में अपनी जगह कायम रहता है। देखो डब।
2. ईट (स्त्री)– कुफ़ल में क्फ़ल में कुंजी के घर के मुँह पर जड़ी हुई मुस्त्तील शकल की शॉम जो मुँह की हिफाजत और खुशनुमाई के लिए लगाई जाती है। उसके ऊपर ढ़कना रहता है। जड़ना जमान के नाम से बोला जाता है देखो – कुफ़ल
3. पिरन्जी– (स्त्री.) छोटी किस्म की पितली की जो बाज किस्म के कुफ़लों में जड़ाई के लिए इस्तेमाल की जाती है और आम तौर से पीतल की बनाई जाती है यही उसकी वजह तसमिया है।
4. पत्ता– (पु0) कफ़ल का पेंदा या तला जिसपर उसके तमाम पुर्जे और कील काँटे जड़े जाते है। यानि ढ़ाचा तैयार होता है देखो कुफ़ल

   पर– (पु0) गुजराती या क़दीम वजअ के ताले के कड़े के एक सिर पर तीर के पर की शक्ल की बनी हुई कमानिया देखो– कुफ़ल

   पुरज़ा– (पु0) पेशावरों की मुशतरक़ इसतिलाह जिसकी मजमुई ह्वयात की किसी चीज का हर मुस्तकिल जुज़ मुराद ली जाती है, जिससे वो चीज तरतीब पाती है।

   फिबरा– (1) कुफल के सारे पुरज़े घिस। गये है। (2) घड़ी का पुर्जा–पुर्जा अलौहिदा अलौहिदा हो गया।

   फिखा मुखपान– (पु0) देखो मुखपान फुल्ली (स्त्री) कील के सिरे के नीचे लगाने का जामिन जो गोल गित्ते यानि पैसे की शक्ल का होता है। इसके बीच में कील की मोटाई के बराबर सुराख होता है। और सुराख़ पर कील की मुँह की रोक का काम देता है। अंग्रेजी में वाशर कहलाता है रखाना, लगाना, देना नाम से बोला जाता है। कील के ऊपर के सिरे पर बना हुआ मुद्दविर मुँह।

   फुल्लीदार कील– (स्त्री) मुलमेख घुण्डीदार सिरे की कील यानि ऐसी कील जिसका सिरा गोल या चिपटा घुण्डी की शक्ल का बना हुआ हो। अंग्रेजी में स्टार कहते है। पुर्जो की जुढ़ाई के लिए छोटी बड़ी मुखतालिफ़ किस्म की बनाई जाती है।

   फुन्दा– (पु0)– फुन्दे का गलत तल्लफुज़। कुफ़ल साज़ो की इस्तलाह में की चूल यानि हल्का को कहते हैं। जो कील में अटका रहता है देखो कुफ़ल।

   तला– (पु0)– गुजराती जबान में कुफ़ल को कहते है। उर्दू में भी उसी माने में बोला जाता है। तफसील के लिए देखो गुजराती ताला।

   तली– (स्त्री)– ताला खोलने की आकड़ी देखो कुंजी

   ज्न्तर– (पु0)– कदीम वज़अ के कुफ़ल का इस्तलाही नाम– देखो गुजराती ताला।

   झूटा कुफ़ल– (पु0) नकारा कुफ़ल जो सिर्फ दिखावे के लिए इस्तेमाल किया जाये।

   चाप– (स्त्री)– कुफ़ल के कड़े के मुँह का खॅचा देखो दाढ़

   चॉबी– (स्त्री)– चापी (स्त्री) पुर्तगाली लव्ज़ चुए बयाने कुन्जी का हिन्दुस्तानी तल्लाफुज़ जो पंजाबी जबान में मुराव्विज़ और उर्दू में भी मुस्ताअम्ल है देखो– कुॅजी।

दाँता/दाँत (पु0)– कुँजी के मुँह का खनदान या कयँव जो कुफ़ल के हुड़के के आगे बढ़ान और पीछे हटाने के लिए बनाया जाता है देखो– कुन्जी

ढ़ाँड (स्त्री)– चाप– कुफ़ल के कड़े के मुँह का हुड़का अटक जाता है और कड़े को बन्द रखता है। देखो– कुफ़ल

डब (स्त्री) आट– कुफ़ल के मुँह के ढ़कने की कोरी को फसाये रखने वाले खाँचे जो मुँह की शाम की बगनियों में बने होते है। देखो– कुफ़ल

डिबिया– (स्त्री)– देखो ढ़ाच, ढ़ाँचा

डौल– (पु0)– किसी मसनुई चीज की आरजी शकल का नमूना निशान अलामत डालना, बनाना के नाम से याद किया जाता है। किसी चीज की तैयारी के लिए कच्चा नमूना बनाना। कुफ़ल साजो की इस्तलाह में कुफ़ल के ड़ाचे को कहते है जिसमें कुफ़ल के पुर्जे जड़े जाते है।

ढ़ाँचा (पु0)– डौल–डिबिया कुफ़ल का बैरूनी हिस्सा जिसके अन्दर उसके पुर्जे तरतीब वार जमाये जाते है।

ढ़ाचना– देखों डौल, डालना।

सिडाल– (पु0)– शुद्ध या सही डौल का उर्दू तल्लाफुज़। कारआमत सही और मौजूद ढ़ाँचा उसकी ज़िद मद डौल कहलाता है।

सरकावॉ मुखपान (पु0)– देखो मुखपान।

शाम– (स्त्री)– देखों ऐन्ट कन्जी के मुँह के घर का बना हुआ पत्तर, जो कुफ़ल के सुराग पर उसकी हिफाजत और मजबूती को जड़ दिया जाता है। धात का बना हुआ किसी डण्डी के मुँह का हिफाजत घेरार लगाना जड़ना के नाम से याद किया जाता हैं।

कुफ़ल– (पु0)– ताला, जंतर अरबी बनाने बन्द रखने वाली चीज इस्तलाहन मुखतालिफ वज़अ और जखामत का धात का बनाहुआ ऐसा आला जो दरवाजे के 'पट' या किसी चीज के ढ़कने के खोल ने को हस्बे जरूरत या मौका रूकावट बनाया जाये, और रोक बना रहे। डालना,जुड़ना लगाना के नाम से बोला जाता है। दरवाजे के पट या किसी चीज के ढ़कने को बन्द रखने के लिए कुफ़ल का इस्तेमाल करना।

फिकरा– 1. घर के दरवाजे पर कुफ़ल डाल कर कही चले गये।

2. चौकीदार की कोठरी पर हर वक्त कुफ़ल जड़ा रहता है।

3. मकान खाली पाकर उसने फौरन दरवाजे पर कुफ़ल लगा दिया। झूठा होना, बिगड़ जाना यानि कुफ़ल का कारामद न रहना। खिलाफ–ए–मालूम खुल जाना।

कुफ़ल के हिस्से जिनकी तशरीह सिलसिले अलफाज़ में की गई है तस्वीर में मय नाम दिखा गया है।

तस्वीर कुफ़ल

कुफ़ल साज (पु0)– कुफ़ल बनाने वाला कारीगर

कुल्लाबा (पु0)– देखों कड़ा

कान (पु0)– कुफ़ल के ढ़ाचे के ढ़कनों को ऊपर को निकालते हुए हिस्से जिसमे एक तरफ कड़े का हिस्सा अटका रहता है। देखो कुफ़ल

कड़ा (स्त्री)– कुण्डा कुल्लाबा कुफ़ल का खुलने और बन्द होने वाला हिस्सा जो उमूमन कौस की शक्ल का होता है। और उसी की बंदिश कलावट का काम देती है। देखो कुफ़ल

कुन्जी (स्त्री)– ताली, चाबी, चापी और रिन्च, पाना कुफ़ल खोलने का औजार

देखो– कुफ़ल (लगाना, डालना के नाम से बोला जाता है) कुफ़ल खोलने को कुन्जी के सिरे को कुफ़ल के मुँह में दाखिल करना (लगाना के नाम से बोला जाता है) कुफ़ल खोलने को कुन्जी का सही होना ठीक बैठना।

फिकरा– 1. कुफ़ल वो अच्छा होता है। जिसमें कोई दूसरी कन्जी न लगे।

कुण्डा (पु0)– देखो कड़ा

कुन्ज (पु0)– कुफ़ल के अन्दर के वे पुर्जे जिनकी हरकत से कुफ़ल का हुड़का यानि वो खटका जो कुफ़ल क खुलने बन्द होने का वाइस होता है। आगे बढ़ाय और पीछे हटाया जाता है। उस पुर्जे को अंग्रेजी में लिवर (स्मअमत) कहते है। ये पुर्जे तादाद मेएंक से लेकर पॉच छः बल होते है। उनकी ज्यादती कुफ़ल की उन्दगी समझी जाती है ऐसे कुफ़ल सिवाय असली कुन्जी के दूसरी कुन्जी से नही खुलते देखो कुफ़ल

बाजकारीगर कुफ़ल के कान को भी कुन्ज कहते है। देखो कान

कुन्जेदार कुफ़ल (पु0)– वो कुफ़ल जिसमे कुन्ज लगे हो देखो कुन्ज कारीगर लिवरदारी कुलफ भी कहते है। ऐसा कुफ़ल जिसके कान बड़े हुए हो और उसका बड़ा कुन्डे के साथ पेवस्त हो जाऐ।

कोका (पु0)– छोटी किस्म की फुल्लीदार कील जो मामूली कील से बहुत छोटी होती है और नाजुक किस्म की जड़ाई के काम आती है। लगाना जड़ना के साथ बोला जाता है।

गुटका (पु0)– कुन्ज का अलैयदा–अलयैदा हिस्सा देखो कुन्ज

गुजराती कुफ़ल (पु0)– कदीम वजअ का कुफ़ल जिसके अन्दर कोई पुर्जा नही होता है उसके कड़े का हर एक सिरा लचकदार आकड़े की वजअ तीर के फल की शक्ल का होता है जो कुफ़ल के मुँह में दाखिल होते वक्त दब जाता और अन्दर जाकर फैल जाते है। जिससे कड़ा अटक जाता है। ये आकड़े इस्तलाह में कुफ़ल के कड़े के पुर कहलाते है। देखो पुर और कुफ़ल। इस किस्म का कुफ़ल अखो की इजाद कहलाते है किताब तम्दुन अख में ऐसे कुफ़लों का जिक्र किया है। फतह सिन्ध के बाद इसका रिवाज सबसे पहले गुजरात में हुआ। यही उसकी वजह तस्मिया है देखो टाला और कुफ़ल ।

गुलमेख (स्त्री)– देखो पुल्लीदार कील

गली (स्त्री)– कुफ़ल के कड़े का मुँह का रास्ता जहाँ से वो अन्दर जाकर रूकता है देखो कुफ़ल

घेर (पु0)– कुफ़ल के ढ़ाचे के अन्दर की वह पूरी जगह जिसमें पुर्जे जड़े होते है, बाज कारीगर डीबिया के नाम से मौसूम करते है देखो डीबिया।

लाट (स्त्री)– कुफ़ल के अन्दर का एक पुर्जा जिसपर कुन्जी घुमती या घुमाई जाती है और जो आईनी मेख की शक्ल कुफ़ल के घेरे की मरकज में जड़ा होता है, देखो कुफ़ल

मुक़बान मुकपान (पु0)– मुखपान का गलत तल्लफुज़ देहाती कारीगरों की बोली देखो मुकपान मुखपान (पु0)– कुफ़ल में कुन्जी लगाने के मुँह का ढ़कना जो हस्बे ज़रूरत खोला और बन्द किया जाता है। जो मुखपान ऊपर को सरकाया और नीचे को उतारा जाता है। कारीगरों की इस्तलाह में सरकवॉ मुखपान कहलाता है। और जो मुखपान चौतरफा घुमाया जाता है उसका फिखॉ मुखपान कहते है। देखो कुफ़ल।

महाजन्त्र (पु0)– जन्त्र देखो गुजराती ताला

नम्बरी कुफ़ल (पु0)– कुफ़ल साजो की इस्तलाह– मुराद आला किस्म का कुन्ज दार कुफ़ल देखो कुन्ज

खुड़का (पु0)– गुटका कुफल के अन्दर का वो पुर्जा जो कुन्जी फिराने से कुफ़ल के कड़े की डाढ़ में अटककर कड़े को बन्द रखता हे जिसको कुफ़ल का बन्द होना कहते है। लगना देखो कुफ़ल
पेशा कॉटा साज़ी
एन्डा– (पु0)– देखो पासंग
बाट–बट्टा (पु0)– बट किसी चीज की मिकदार मालूम करने को धात वगैरह का हस्बे जरूरत बनाया हुआ मयारी वज़न
फिकरा– पीतल का बाट यानि बट्टा कसरते इस्तेमाल से घिस जाता है। लफ्ज बट वाहिद और जमा दोनों के लिए इस्तेमाल किया जाता है।
बट्ट, बट्टा (पु0)– देखो बाट (लफ्ज बट्ट) वाहिद और जमा दोनों के लिए बोला जाता है।
बट्ट खरा (पु0)– 1. सरकारी मन्जूरा बट्टे यानि बाट खरे बट्टे
2. सोना चॉदी और दीगर कीमती आशिया तौलने के बट्टे विल्कुल सही वनज के और मुस्सविका है।
बैखट– (स्त्री)– देहाती इस्तलाह जो बाज मुकामी बोटियों में तराजू के लिए बोली जाती है और अरबी लफ्ज़ बै से वज़ा कर ली।
भार– (पु0)– फारसी लफ्ज़ बार का हिन्दी तल्लफुज़ मुराद वज़न इस्तलाहन एक बैल के उठाने के लायक बोझ।
पासंग– (पु0)– ऐन्डा– तराजू के गैर मुत्तावाज़ी डण्डी या पलड़ो के मुतवाजिन करने का इज़ाफ़ी वनज जो हल्के कख पर बकद्र–ए–जरूरत बढ़ाकर दोनों हिस्सो को बराबर कर दिया जाता है। बाधना के नाम से याद किया जाता है बाधना के नाम से याद किया जाता है। दे
छेखना– तराजू की डण्डी के मुतवाज़िन होने को खाचंना करना– तराजू की डण्डी के दोनो सिरो को कमोबेश वज़न को हमवज़न करना।
प्ल्ला– (पु0)– किसी चीज के वज़न करने को तराजू का कोशादा हिस्सा या बाजू जो क़दीम वज़अ की तराजू में डण्डी के दोनो सिरो पर एक–एक बॅधा होता है। जिनमे से एक वनज यानि बाट और दूसरा लिन्स रखने को इस्तेमाल किया जाता है। देखो तराजू।
पल्ड़ा– (पु0)– देखो पल्ला हर्फ ल को हर्फ 'ह' से बदलकर आमतौर से पल्ड़ा बोलते है। बाधना के नाम से याद किया जाता है।
पैसा भर– (पु0)– बिहिकद्र एक तोला वनज चित्र तराजू मुख्तालिफ हिस्से के नाम के साथ
भार– भार का दूसरा तल्लफुज़ देखो भार मुसलमानों के अहद का क़दीम पैसा जो आमतौर पर मसऊरी पैसे के नाम से मारूफ़ था एक तोला वज़न का होता था और एक तोला वज़न के लिए बतौर बाट इस्तेमाल किया जाता है।
फून्दा– (पु0)– फूदने का गलत तल्लफुज़– देखो चोटिया
त्राजू–(स्त्री)– मेयारी वज़न के साथ किसी जिन्स की मिकदार माजूम करने या एक जिन्स को दूसरी जिन्स से हमवज़न करने का पयमाना कदीम और जदीद वज़अ की छोटी बड़ी अदना और आला मुखतलिफ किस्म कि मुखतालिफ़ जरूरतो के लिए बनायी जाती है।
तक–(स्त्री) डण्डी संस्कृत तुरका बनाने बड़ी तराजू जो बहुत भारी चीज तौलने के लिए इस्तेमाल की जाए उस तराजू को किसी चीज से बाध कर लटका रखा है।
स्टेशनो पर माल और असबाब तौलने की जदीद वज़अ की तराजू
तकरी, तकड़ी (स्त्री) तक का इस्मेंसिफर देखो तक
तनि (स्त्री)– देखो डस

तौल (स्त्री)– संस्कृत बमाने वज़न करना। उर्दू में किसी चीज के वज़न के अमल करने को कहते है तौल फिकरा– गंज में सुबह से गेहूँ की तौल हो रही है।
तौला (स्त्री)– वज़न करने का मुकर्ररा पैमाना यानि नाप (देखो–जिल्द सोम पेशा कुम्हार)
तौलना (पु0)– देखो चोटिया
टन्क (पु0)– 24 रत्ती या 3 माशे का एक बाट (यानि बाट)
जेत (पु0)– तराजू के पलड़े की डोरियो को डण्डी के सिरे से बॉधने का बन्ध देखो– तराजू।
झोंक (स्त्री)– तौल में तराजू की डण्डी की गैर मुत्तावाज़िन हालत जिससे मुराद जिन्स वाले पलड़े की तरफ डण्डी के सिरे का झुका रहना होता है (मारना) तराजू के जिन्स वाले पलड़े को हाथ के दबाव से जरा नीचे को झुका देना जो जिन्स को वज़न से कम तौलने के काम आये और खरीदार को धोखा देने की तरक़ीब होता है। इस अम्ल को इस्तलाहन डण्डी भी मारना कहते है।
चोटिया (स्त्री)– कॉटे वाली तराजू का चोटिया जिसके बीच में कॉटा रहता है, देखो कॉटा
हुब्बा (पु0)– दो जौ या एक रत्ती के वज़न का बाट यानि बट्टा
धर्मकॉटा (पु0)– चॉदी सोना तौलने की साहूकारे की तराजू जो धर्मकॉटे के नाम से बाजार में किसी मोअतब्बर शख्स की जेरे निगरानी रखी जाती और उसकी तौल हर कारोबारी को सही माननी पड़ती है।
धड़ा (पु0)– 1. तराजू की डण्डी का तवाज़ुम जो दोनो पलड़ो की कमी व बेशी को बराबर करने के लिए किया जाए (देखना) तराजू की डण्डी के तवाज़ुन की जॉच करना। (करना) तराजू की डण्डी का तवाज़ुन कायम करना। यानि डण्डी की झोक को दूर करना
2. पासंग और धड़े का करीब करीब एक ही मफूम है। लेकिन पासंग लगाने का अमल डण्डी के नुख्स की वजह से किया जाता है। और किसी जाएद चीज के इज़ाफे पर जो तौल में न जगायी जाए यानि जिसका वज़न अस्ल चीज के वज़न में शुमार न हो। डण्डी का तवाज़ुन करने को धड़ा करना कहा जाता है। और जो जायद वज़न के मसाविह वज़न बढ़ाने से किया जाता है।
धड़ी (स्त्री)– पॉच सेर वज़न का बाट या पॉच सेर वज़न।
धौक (स्त्री) मामूली और क़दीम वज़अ की तराजू बाज मक़ामी बोलियो में बगैर कॉटे की कम वज़न अशिया तौलने की तराजू को कहते है।
धौन (पु0)– बीस सेर वज़न का या बीस सेर वज़न
धौनभर (पु0)– बीस सेर वज़न
डस (स्त्री)– संस्कृत दशा बनामे तागा या डोरी इस्तलाहन तराजू के बन्द को कहते है देखो तराजू। बडी तराजू में जो भारी चीजे तौलने के काम आती है। लोहे की ज़ज़ीरो के बन्द होते है।
डण्डी (स्त्री)– तराजू का वो हिस्सा जिसके सिरों में पलड़े और बीचो बीच हाथ में पकड़ने को एक चोटिया बंधा होता है यही डण्डी तराजू की अस्ल है। ज्यादा वज़नी चीजों के तौलने की क़दमी वज़अ यानि पुरानी चाल की तराजू को इस्तलाहन डण्डी कहते है। और तराजू मुराद लेते है देखो तक (मारना) डण्डी के सिरे को हाथ के दबाव से झुका देना मुराद कम
तोलना– वज़न करने में धोखा देना देखो झोक मारना।
डण्डीदार (पु0)– मण्डी में आने वाली ज़रई पैदावर की तौल करने वाला आड़तिया जो अपनी तराजू बाट रखता है और जिन्स को मुआवज़ा ले लेता है।
ढय्या (स्त्री)– ढाई सेर वज़न का बाट

रत्ती (स्त्री)– सुर्ख गुमची आठ चावल के मसावी वज़न का एक बाट माशे का 8 हिस्सा (फिरना, चढ़ना) व्यपारियों की इस्तलाह मुराद कारोबार में फायदा होना।
रूम्माना (स्त्री)– पल्ला करस्तूँ
सोरन (स्त्री)– सर्राफों का सोना तौलने का एक बॉट जो तकरीबन 15 माशे या 1/4 तोले वज़न का होता और आम तौर से सोने को तब्बई हालत में तौलने के लिए इस्तेमाल किया जाता है
सेई (स्त्री)– अरबी लफ्ज़ 'साआ' का गलत तल्लफुज़ 234 तोले या करीब 3 सेर वज़न नापने का पैमाना जो डिब्बे की शक्ल लकड़ी या किसी धात का बना लिया जाता है। देखो तौला।
शाहीन (पु0)– तराजू की डण्डी के सिरों के मुँह जो पलड़े बॉधने के लिए मुखतालिफ़ शक्ल के बने हुए होते है। देखो तराजू
क़रस्तून/करस्तून (स्त्री)– रूम्माना एक पलड़ा तराजू अंग्रेजी में स्अील यार्ड कहलाती है। इसकी वज़ाक़ता एक डण्डी की सी होती है। जिसमें बॉट का सरकवॉ लट्टू लटका रहता है।
काटॉ (पु0)– मारवाड़ी बोली में जवाहरात तोलने की तराजू को आमतौर से काटॉ कहा जाता है। जो इस्तलाह–ए–आम में जदीद वज़ह की एक एकसी तराजू का नाम हो गया है। जिसकी डण्डी की वस्ते में एक सूई जड़ी होती है। जो डण्डी के सिरों का सही तवाजुन ताहिर करने को बनायी गयी है।और तराजू के सही और बेलॉग वज़न को बताती है। सही सूई या काटॉ इस तराजू में मामूली आशिया के तौलने के लिए छोटा बड़ा अदना और आला किस्म का बनाया जाता है। काटे के बाकी हिस्से आम तराजू के मान्निद होते है। कदीम वज़अ की तराजू के बजाए अब आम तौर से कॉटे रिवाज हो रहा है।
कॉटे की तौल (स्त्री)– मुहावरा सही और जची हुई पूरी तौल जिसमें कमी और बेशी न हो। तौलना सही और पूरी–पूरी तौल तौलना।
गुमची (स्त्री)– देखो रत्ती
मादा पलड़ा (स्त्री)– तराजू का बाट रखने का पलड़ा। बाज़ सौदा फ़रोश तराजू के उस पलड़े को कहते है जो अपने मुक़ाबिल के पलड़े से किसी कद्र कम वज़न हो और कोई चीज बढ़ा कर उसका वज़न बराबर किया जाए।
मिाक़ाल (पु0)– 26 रत्ती की मसावी वज़न
मझामझी (पु0)– देखो चोटिया
मूजवाँ (पु0)– देखो चोटिया
नरपलडा (पु0)– तराजू का वो पलड़ा जिसमें वज़न करने की जिन्स रखी जाए। मादा पलड़े का मुकाबिल तफ़सील के लिए देखो मादा पलड़ा। तराजू के दोनों पलड़ो का मुशतरक़ नाम नर और मादा कहा जाता है।
निरजा/निरज़ा (पु0)– देखो नरज़ा
निरजा/निरज़ा (पु0)– संस्कृत नेराजी बमाने छोटी तराजू अवध में इख़तलाफ़ तल्लफुज़ के साथ छोटी तराजू को जो ज्यादा से ज्यादा पाव डेढ़ पाव वज़न तौलने की होती है। कहा जाता है ख़्वॉह वो कॉटे की किस्म से हो या क़दीम वज़अ की।
नक्की (स्त्री)– देखो चोटिया
नकवॉ (स्त्री)– देखो जोत
हाड़ (पु0)– तराजू की डण्डी की मुत्तवाजुन हालत। देखना या करना के साथ बोला जाता है।
1. पासंग देखना– यानि डण्डी के सिरे की झोक की जॉच करना।

2. धड़ा करना– देखो पासंग और धड़ा।
3. तराजू की जोख लेना– सादा लेना या ताड़ लेना।

हथवान्सा (पु0)– देखो चोटिया बाज़ मक़मी बोलियों में हथ ऊवॉ कहते है।

पेशा सर्राफ़ी–

आत्मा (स्त्री)– मुसलमानों के अहद की छोटी अशरफ़ी। जो रायजुल वक्फ़ पूरी अशरफ़ी या मोहर की चौथाई क़ीमत के बराबर होती है।

आफ़ताबी (स्त्री)– मुसलमानों के अहद की गोल सिक्के की शक्ल की अशरफ़ी इस्तलाहन आफ़ताबी कहलाती है।

अठन्नी (स्त्री)– आठ आने यानि निस रूपया वाला अंग्रेजी अहद का छः माशे वज़नी सिक्का।

आना (पु0)– एक रूपये का ल10 वाला हिस्सा 4 पैसे की एक एक़म यानि एक गन्डा

अद्धी (स्त्री)– बारह कौड़ियों की एक रक़म जिसकी कद्र रायजुल वक्फ़ पैसे के 1/8 हिस्से के बराबर होती है। दुमड़ी का निस्फ़ हिस्सा देखो दाम और दुमड़ी।

अधन्नी (पु0)– आधा आने का ताँबे का सिक्का देखो दाम और दुमड़ी।

अरब (पु0)– सौ करोड़ का हिसाबी अद्द या हिन्दसा जिसकी गिनती हस्ब जेल है।

1. सौ करोड़ का एक अरब
2. सौ अरब का एक खरब
3. सौ खरब का एक नील
4. सौ नील का एक पीद्म
5. सौ पीद्म का एक संग
6. सौ सेग का एक महासंग

अशरफ़ी (स्त्री)– सोने का सिक्का जो अपने किसी मवाजिद के नाम से मौसूम हुआ वज़न में दस माशे का होता है।

एक अन्नी (स्त्री)– काँसी की किस्म की धात का बना हुआ एक आने का हिन्दुस्तानी सिक्का। जो जार्ड कर्ज़न के अहद में जारी किया गया था।

बाला (पु0)– सिक्के का सीधा रूख यानि वो पहलू जिसपर हाकिम–ए–वल्फ़ का चेहरा या उसके हुक़म से कोई खास अलामत बतौर निशानी बनी हो।

बटॉउन (पु0)– मुख़तालिफ़ हुक्मतों के सिक्कों के बाहमी तबादले की मुक़ररा दस्तूरी शरह तबादले सिक्के जात।

बट्टा (पु0)– फ़र्क़ कटौती, कमी काटाँ। नाक़िस या बिगाड़े हुए सिक्के के तबादले का नुकसान यानि अगर राएज सिक्के की हैअत बिगड़ जाए या बिगाड़ दी जाए तो उसकी मेयारी कद्र में कमी हो जाती है। (लेना, लगाना) बिगड़े या बिगाड़े हुए सिक्को का नुकसान लेना।

बॅधा रूपया (पु0)– सर्राफों की इस्लाह मुराद एक रूपिए की रकम के एक सिक्के की सूरत में बरखिलाफ़ छोटे सिक्कों यानि रेजगारी की मजमूई जो एक रूपिए के बराबर हो। फिकरा–सर्राफ़ को वैसे और रेज़गारी देकर बॅधे रूपिए ले आाओं।

भरत (पु0)– सर्राफ़ों की इस्तलाह (यानि अवध) मुराद रूपिए के छोटे सिक्के जिनकी मजमूई रक़म रूपिए के बराबर हो।

भुनाना (मस्दर) यानि तोड़ना। बन्धे रूपिए के मसावी छोटे सिक्के बदलवाना। फिकरा– बाजार से एक रूपिया भनाकर मजदूरी के पैसे दे दो।

पावला/पावली (पु0)– किसी सिक्के का चौथाई हिस्सा यानि चौथाई किमत का सिक्का बाज़ारी बोलचाल में रूपिए के चौथाई सिक्के यानि चवन्नी को कहते है।
पाई–पाई (स्त्री)– तौबे का सब से छोटा अंग्रेजी राज का हिन्दुस्तानी सिक्का जो पैसे का बिहिकद्र 1/3 होता है।
पख़नी (स्त्री)– सिक्के का उल्टा यानि दूसरा रूख जिसपर तारीख़, अद्द वगैरह कुन्दा होता है। तामीरी इस्तलाह में जफ्ज़ पाखे के लिए बोला जाता है। और मुराद दीवार या चुनाई का छोटा हिस्सा या अर्ज़ी रूख होता है।
पिद्म (स्त्री)– देखो अरब फिक़रा न. 4
परखना (मसदर) सिक्के का खोटा खरा देखना या खोटे खरे की जॉच करना।
पैसा (पु0)– अंग्रेजी अहद का तॉबे का सिक्का जो वज़न में 7 माशे और कद्र में रूपिए का 1/64 हिस्सा होता है।
तालक (पु0)– अरबी लफ्ज़ तलक़ का गलत जफ्ज़ सर्राफ़ों की इस्तलाह में सिक्के को गलाना मुराद ली जाती है। (करना)
टका (पु0)– देखो अधन्ना अंग्रेजी अहद का दो पैसे का एक सिक्का।
टकसाल (स्त्री)– दारूज़ ज़रब सिक्के बनाने का कारखाना।
टकसाली (पु0)– सरकारी मंजूरह सिक्का। सरकारी कारखाने का बनाया हुआ सिक्का।
जलाला (पु0)– हुकुमत–ए–वक्त का सिक्का यानि शाही अशरफ़ी।
झिन्नझी कौड़ी (स्त्री)– कमर टूटी या सूराख़दार कौड़ी।
चालू सिक्का (पु0)– राएजुल वक्त। हुकुमत–ए–वक्त का सिक्का जो चालू हो।
चुंगी लगाना (मसदर) चाँदी या सोने के सिक्के की आवाज यानि झन्कार की जाँच करना जो आम तौर से हाथ के अॅगूठे की ज़र्ब लगाकर या किसी सख़्त चीज पर मारकर देखी जाती और खोट की मिलावट की परख की जाती है।
चिल्लर (स्त्री)– चाँदी के रूपिए से छोटे सिक्के यानि दो अन्नी चवन्नी अठन्नी वगैरह। दक्खिन में चिल्लर और शिमाली हिन्द रेजगारी और ख़रेज भी कहलाते है।
चलनी (स्त्री)– देखो चालू सिक्का
चवन्नी (स्त्री)– चार आने वाला चाँदी या कॉसे का अंग्रेजी राज का हिन्दुस्तानी सिक्का।
चहारगोशा मुहर (स्त्री)– चौखन्नटी (यानि मुरब्बा शक्ल की) अशरफ़ी या कोई दूसरा सिक्का।
चरतल (पु0)– मुसलमानों की अहद का तॉबे का सिक्का जिसकी कद्र राएजुल वक्त अंग्रेजी सिक्के के ढ़ाई आने के बराबर थी।
छहदाम (स्त्री)– कौड़ियों के चलने के ज़माने में 16 कौड़ियों की एक मिक़दार जिसकी कद्र अंग्रेजी अहद के हिन्दुस्तानी पैसे के 1/4 के बराबर होती थी।
ख़रीज/खरीज (स्त्री)– 1. फ़ारसी लफ्ज़ ख़ूदरा का गलत तल्लफुज़। देहली नवाहें देहली और पंजाब में इस्तलाहन रूपिए से छोटे सिक्के मुराद ली जाती है; जिसको बाज़ मुक़ामात पर रेज़गारी भी कहते है।
2. दक्खिन के बड़े शहरों में लफ्ज़ खुर्रदा पैसो के लिए बोला जाता है। और ख़रीज या रेज़गारी का वहाँ कोई मफ़हूम नही है।
खुर्रदा (पु0)– देखो खरीज
फिकरा न. – 2

दाम (पु0)– मुसलमानों के अहद के ताँबे के एक सिक्के का नाम जिसको सिक्कों की इकाई शुमार किया जाता था। जिस तरह अंग्रेजी राज में पाई। दाम का वज़न एक तोला आठ माशे और सात रत्ती होता था जिसकी कद्र अंग्रेजी सिक्के के अधन्ने के बराबर थी।

1. अंग्रेजी अहद के इब्तिदा से वह सिक्का मतरूक हो गया लेकिन इस्तिलाह धमड़ी और छदाम कौड़ियों के चलन तक एक ख़ास मफ़ूम के लिए इजलाए आगरा व अवध और देहली और पंजाब में जारी रही। लफ्ज़ धमड़ी दाम का इज़्म मसगर है और कम से कम 16 और ज्यादा से ज्याद 24 कौड़ियों की मिक़दार के लिए बोला जाता था। जिसकी कद्र अंग्रेजी अहद के पैसे के 1/4 के बराबर होती थी। जब से कौड़ियों का चलन मतरूक हुआ है इस्तलाह भी करीब करीब मतरूक हो गयी है। उर्दू अदब में लफ्ज़ दाम और दमड़ी दोनों बोले जाते थे। (कहावत– अपना दाम खोटा तो परखने वाले का क्या दोस) मुरादी माने किसी चीज की कीमत या नगद

रकम– फिकरा– 1. आम के आम गुठलियों के दाम।

2. रसीद भेजकर किताबों के दाम मगाँ लिजिए।

3. तुम्हारे पास दाम हो तो टिकट ले लो।

4. इस वक्त मकान के दाम अच्छे लग रहे है।

5. आजकल बाजार में हर चीज के दाम चढ़े हुए है। जब दाम उतरेगें तो सामान खरीदा जाएगा।

दिरहम (पु0)– मुसलमानों के अहद–ए–हुकुमत का नक़रई सिक्का, जिसका वज़न सोने 6 या 8 दांग होता था।

दमड़ी (स्त्री)– देखो दाम

दो अन्नी (स्त्री)– देखो दो आने की कद्र का चाँदी या कॉसी का सिक्का।

दीनार (पु0)– मुसलमानों की अहद का तराई सिक्का।

ढ़ेला (पु0)– अंग्रेजी अहद के पैसे का आधा सिक्का।

ढ़ेली (स्त्री)– देखो अठन्नी

डबल (पु0)– इलाक़ा आगरा व अवध में तीन पाई वाले अंग्रेजी पैसे का इस्तलाही नाम।

रूपलड़ी (स्त्री)– रूपये का इस्मेमुस्गर देखो रूपिया।

रूपा/रूपिया (पु0)– रूपा हिन्दी में चाँदी को कहते है। कारोबारी इस्तलाहन में चाँदी का सबसे बड़ा सिक्का मुराद ली जाती है जो वज़न में एक तोला होता है। बधाँना; भुनाना तुड़ाना के नाम से बोला जाता है। रूपये बधाँना से मुराद छोटे सिक्के को रूपिए में बदलवना और भुनाना व तुड़ाना इसके बरअक्स अम्ल के लिए बोला जाता है। लगाना यानि तिजारती काम कारोबार में रूपिया सिर्फ यानि खर्च करना।

रेजगारी (स्त्री)– देखो चिल्लर

रेज़गी– और ख़रीच।

सिल्ज– (पु0)– ख़रा सिक्का जिसमें कोई नुक्स न हो।

सिक्का (पु0)– ज़र्रे क़ानूनी जिसपर सरकारी अलामत का ठप्पा लगा हो यानि कुन्दा या मुहर किया हुआ हो। और हुकुमत की तरफ से बतौर मेयार–ए–तबादिल–ए–आशिया रायज। धात के सिक्के में सोने का सिक्का सबसे किमती और चाँदी का दूसरे दर्जे का होता है। (चलना, लगाना के नाम से बोला जाता है।)

सिक्का राएजुल वक़्त (पु0)– देखो चालू सिक्का।

सलाख़ (स्त्री)– सलाख़ का ग़लत तल्लफुज़ सिक्का परखने का सुआ जो बारीक नोक का अहनी औजार होता है। जिससे सर्राफ़ सिक्के पर नुक्ख़ते का निशान बना कर आग में गर्म करते है। और नुक्ख़ते की रंगत से सिक्के का खोटा खरा करते है।
कहावत– काटाँ बाट सलाख़ अण्डा करे सर्राफ़ी।
संगसंख (पु0)– देखो अरब फिकरा न.– 5
संख (पु0)– बहुत बड़ी किस्म का खूँगा। कौड़ी की किस्म का ख़ोल।
सर्राफ़ (पु0)– सिक्के का व्योपारी तबादला और लेन देन करने वाला व्यापारी।
सर्राफ़ा (पु0)– सर्राफ़ो का बाजार।
फ़ोतादार (पु0)– ख़जाँची नग़दी की थैली रखने वाला।
कटौती (स्त्री)– देखो बट्टा
क्लब (पु0)– अबरी लत्ज़ क़लब का ग़लत तल्लफुज़ देखो मल्ट।
कुण्डो का रूपिया (पु0)– वो रूपिया जो बतौर ज़ेवर इस्तेमाल किया गया हो। और उस जरूरत के लिए उसमें कुण्डा झलवाया हो। बाजार में ऐसे रूपिए की कद्र कम हो जाती है।
कौड़ा (स्त्री)– बड़ी क़िस्म की कौड़ी देखो कौड़ी।
कौड़ी (स्त्री)– दरियाई घूँगे की किस्म का खोल जो बादम की वज़ा का होता हैं। हिन्दुस्तान में बहुत क़दीम से एक पैसे से कम किमत की चीज के ख़रीद–ओ–फरोख़्त के लिए उसका चलन था और तलब गर सत को वसूल पर उनकी कद्र गटती बढ़ती रहती थी। ज़्यादती की हालत में मौजूदा अंग्रेजी पैसे के जो 20 गन्डे यानि 96 कौड़ियाँ होती थी। कमी की सूरत में 16 गन्डे या 64 कौड़ियाँ मिलती थी। ताँबे की सिक्के की कसरत से उनका रिवाज बन्द हो गया।
ख़रा सिक्क (पु0)– वो सिक्का जिसकी बनावट या इस्तेमाल में कोई नुक्स न हुआ हो।
खरब (पु0)– देखो अरब फिकरा न.– 2
खरीज (स्त्री)– देखो ख़रीज
खेटा सिक्का (पु0)– वो सिक्का जिसकी बनावट या इस्तेमाल में नुक्स पैदा हो गया हो।
गन्डा (पु0)– चार इकाईयों का एक अद्द। आमतौर से चार कौड़ियों या चार पत्तियों के एक अद्द को कहते है।
लइय्या (पु0)– कौड़ी की एक किस्म जो ठज़्ज़ेस खूबसूरत और मामूली कौड़ी से ज्यादा मजबूत और चलाऊ होती है।
चौसर (पु0)– खेलने वाले और जुआरियों में उसका इस्तेमाल होता है।
मुरादी (स्त्री)– रूपिए के छोटे सिक्के। आने पाई के सिक्के।
मलट (पु0)– घिसा हुआ सिक्का। जिसके हुरूफ़ और दीगर सरकारी अलामतमिट गयी हो।

घिसते घिसते हो गई
ऐसी मलट
चार पैसे की
दो अठन्नी रह गई।

मंसूरी पैसा (पु0)– मुसलमानों के अहद का एक तोला वज़न का ताँबे का पैसा जो अपने मूजत के नाम से मौसूम है। ये पैसा इस कसरत से रायज था कि अब तक हिन्दुस्तान के कस्बात में पाया जाता है।
महासंग (पु0)– देखो अरब फिकरा न.– 6

मुहर (स्त्री)– देखो अशरफ़ी अशरफ़ी का इस्तलाहि नाम जो आतौर से गोल शक्ल की अशरफ़ी के लिए बोला जाता था। और जिसकी कीमत 30 रू0 होती थी। और वज़न 9 माशे।
नानवॉ/नावा (पु0)– फ़ारसी लज्ज़ नामा का ग़लत तल्लफुज़ मुराद रकम–ए–कर्जा जो किसी के नाम लिख्र हंई हो। पंजाब और नवाहे देलही में रूपिए के छोटे सिक्के के लिए यह लत्ज़ इस्तलाहन बोला जाने लगा है। और लत्ज़ रेजगारी व खुर्रदा के हममाना समझा जाता है।
नोट (पु0)– पॉट सिक्क–ए–फ़िरताज़ यानि ज़र्रे क़ानूनी इन्दत्त तलब वाजिबुल अदा रकम की सरकारी दास्तावेज़
नील (पु0)– देखो अरब फिकरा न.– 4
नेवली (स्त्री)– रूपये रखने की लम्बी नली की शक्ल की थैली जो कमर से बाँध ली जाऐ।
हुन (पु0)– मुस्लमानों के अहद का दक्खिनी सोने का सिक्का।
पेशा महाजनी–
आता (पु0)– कर्ज़ा दैन
फिकरा न. 1. पहले जिसका जो आता था वो अदा किया फिर वारिसों का हिस्सा हुआ।
2. बनिए को आता हो वो दे दिया जाए।
3. आपका जो कुछ आता हो वो बता दीजिए।
आड़–गोड़ (पु0)– कारोबारी लोगों का बाहिनी लेन देन खातेदारी तबादिल–ए–रकम।
अठवारा/अठवारसा (पु0)– हफ़्तेवार किस्त, कर्ज़ा या रकम सूत जो कर्ज़दार सहूकार को मुर्करर कर दे।
अदाबन्दी (स्त्री)– क़िस्तबन्दी रकम–ए–कर्जा वाजिबुल अदा को मुर्करर औक़त पर जुज़–अन, जुज़अन अदा करने का तरीका।
उधार (पु0)– कर्ज़ यानि लेना देना।
ऊप (स्त्री)– 50 फीसदी सूत पर काशतकार को कर्जा देने का तरीका।
बक़ी (स्त्री)– कर्जे की कसर जो आईन्दा को देनी रहे।
देन जोगी रकम–
फिकरा न. 1. रकम कर्ज़ा और जमा के बाद जो बाकी निकलती है वो रकम पाज़िबुल अदा में लिख ली जाती है।
बाकी दार (पु0)– वो शख़्सआसामी या कारीगर जिसके जिम्मे रकम कर्ज़ा वाजिबुल अदा रहे।
बधवाइन (पु0)– अदाबन्द, रकम कर्ज़े की किस्त गुज़ार आसमी या कर्ज़दार।
बसना (पु0)– महाजनी इस्तलाह मुराद महाजन के मुनीब या कारिन्दे की क़याम गाह या गद्दी जहाँ बैठ कर वो लेन देन का हिसाब किताब रखता है।
बन्धौर/बन्धान (स्त्री)– बंदी, बाज़ार का भाव निकालने से कब्ल यानि पहले किसी जिन्स के मुर्कररा नर्ख़ पर ख़रीद का मुहाएदा जो आमतौर से महाजन और साहूकार काश्तकारों से कहते है।
2. रक़म कर्ज़े की जुज़अन जुज़अन महानाअदाई देखो अदाबन्दी।
ब्याज/बियाज (पु0)– देखो सूद
भरपाई (स्त्री)– रकम कर्जे की पूरी–पूरी अदायगी जिसमें कुछ बाकी न रहे। बेबाक़ी यानि होना करना।
भुकतान (पु0)– वाजिबुल अदा रकम की पूरी आदाएगी देखो भरपाई (होना चुकाना) कुल रकम वाजिबुल अदा कर देना। चुकताना चुकौता कर देना।

भुख बन्धक (पु0)– देखो पटवान अहनी।
भुख लाभ (पु0)– जर्रे कर्ज़ के सूद या मुनाफा के वसूल के लिए कर्जदार की मिल्लकियत् को कब्जे में रखकर नफ़ा हासिल करने का महाजनी तरीका।
पट (पु0)– रूक्क़ा कर्ज़ अन्दत्त कलब देखो नोट
फिकरा न. 1. कसात बज़ारी की वजह कर्ज़दारों से रूपया या रकना पटना मुश्किल हो रहा है।
पोतन देना (मसदर) जायदाद रहन बिल कब्जा करना। जिसकी आमदनी से महाजन रकम–ए–कर्ज़ा का सूद या मुनाफ़ा हासिल करता रहे। आमतौर से काश्तकारों या जमीदारों में कर्ज का ये तरीक़ा मुर्रविज है। इस तरीके में महाजन के जर्रे अस्ल वाजिब–उल–अदा रहती है।
पटवन रहनी (स्त्री)– पट बंधक भूख बन्धक, पोतन। जायदाद के रहन बिल कब्ज रखने का एक तरीक़ा जिसमें महाजन एक मुक़रर्रा मियाद में जायदादकी आमदनी से जर्रे असल और सूद वसूल करके जायदाद वगैर किसी नुकसान के मालिक को वापस कर देता है।
पट बंधक (स्त्री)– देखो पटावन रहनी।
परपे हुन्डी (स्त्री)– हुन्डी का तीसरा पर्त। असल हुन्डी की तीसरी मुस्सदिक़ा नक़ल यानि मुस्सलस देखो हुन्डी।
पूँजी (स्त्री)– अस्लकुल; रासुल माल, सरमाया, धन दौलत
पेठ हुन्डी (स्त्री)– हुन्डी का दूसरा पर्त। (मुसन्न) यानि अस्ल हुन्डी की दूसरी मुस्सदिक़ा नस्ल।
पैंचा (पु0)– मुँह बोला उधार। कर्ज़ दस्त गरदाँ ऐसा कर्ज जो वक्त–ए–जरूरत के लिए बिना किसी तहरीर के मान लिया जाए।
फिरती हुन्डी (स्त्री)– वो हुन्डी जिसको महाजन कुबुल न करें। रदद की हुई हुन्डी।
तोड़ा (पु0)– एक हजार रूपिए या एक सौ अशरफ़ी की सरबन्द थैली।
1. कामयाबी 2. बन्दुक का शताबा
टीप (स्त्री)– हाथ उधर रक़म की तहरीरी याद दवाश्त। जो रकम देने वाला अपने रोज़ नामचे में लिख दें।
टीपना (क्रिया)– रोज़ नामचें में दस्तगरदाँ यानि हाथ उधार रकम की याददवाश्त लिखना।
ज्मनौटियाँ (पु0)– रक़म जमानत या धड़ोत पर मुक़रर्रा मुनाफ़े का इज़ाफा। ऐसी ज़मानती रक़म का जो गैर मोअ़इयन मुद्दत तक जमा रख्र जाए सूद।
जेख़ों (स्त्री)– अमानती चीज वो जिन्स जिसकी हिफाज़त की जिम्मेदारी रखने वाले पर हो महाजनी इस्तलाह में आमतौर से नगद रक़म या ज़ेवर को कहते है। जिसकी हिफाज़त और निगरानी लाज़मी है।
जोग (पु0)– हुन्डी की रक़म वसूल करने वाला जिसके नाम की निशानदही हुन्डी में की गई हो यानि जिसका नाम हुन्डी में लिखा गया हो।
छोड़ चिठ्ठी (स्त्री)– फ़ारिग़ ख़ती। रक़म–ए–कर्जा की बे बाक़ी की चिठ्ठी। मतलबा कर्जे से दस्त बरदारी की तहरीरी सनद। रूक़का दस्त बरदारी।
छर रहनी (स्त्री)– रहन दर रहन किसी चीज़ के रहने की तश्दीद जो अमतौर से खाल के ख़त्म पर महाजन अपनी आसामियों या क़र्ज़दारों से अस्ल और सूद मिलाकर कुल रक़म का नया रहन नामा लिखवा लेता है। दर्शनी हुन्डी (स्त्री) इन्दत तलब रूक़का जिसको पेश करने पर उसकी मुदर्जा रक़म फ़ौरन वाजिबुल अदा हो। या वो हुन्डी जिसपर मियाद अदायगी रक़म और वसूल कुनन्दा का नाम दर्ज हो।

दस्त गरदाँ कर्ज़ (पु0)– देखो हाथ, उधार और पैचां।
वसौतंरा (पु0)– वो रक़म–ए–कर्जा जिसपर महाजन दस फ़ीसदा वसूल करें।
दहनीमी (स्त्री)– वो रक़म–ए–कर्ज़ा जिसपर महाजन पाँच फ़ीसदी सूद वसूल करें।
देना (क्रिया)– कर्ज़ा रक़म–ए–वाजिबुल अदा।
फिकरा न. 1. जिसका जो कुछ देना था दे दिया। अब किसी का देना बाकी नही है।
फिकरा न. 2. आप का कुछ देना आता हो तो बता दीजिए।
रकम (स्त्री)– पूँजी–रासुल माल–सरमायाह नक़्दी–क़ीमती अशिया–महाजनी इस्तलाह में जर्रे अस्ल मुराद ली जाती है। जो लेन देन मे काम आये या जिससे तिजरारती कारोबार चलता रहे। (उतारना, किसी का आता देना कर्ज़ा अदा करना)
फिकरा– 1. ताजिर ने अपने ज़िम्मे की रक़म थोड़ी–थोड़ी करके उतार दी। (उठना) किसी चीज़ की नक़्द रक़म हासिल हो जाना पूरी रक़्म वसूल हो जाना।
फिकरा न. 1. गरानी की वजह से पुराने माल की रक़्म भी उठ आयी। बराबर होना लेन देन का हिसाब बराबर हो जाना। पूरी रक़म ख़र्च हो जाना।
2. कारोबार में नुकसान की वजह पूरी रक़म का ज़ायाहो जाना।
फिकरा न. 1. बम्बई के सफर में सारी रक़म बराबर हो गई।
2. इस साल माल की खरीद फरोख़्त की रक़म बराबर हो गई। (दबाना) कर्ज़ा या किसी चीज की वाजिबुल अदा रक़म न देना, रोक लेना, इन्कारी होना। (डूबना) ज़ाए जाना नुकसान होना।
फिकरा न. 1. बंक का दीवाला निकालने से हिस्सेदारों और खातेदारों की रक़म डुब गई।
खाना– रक़म देने से इन्कार कर देना।
फिकरा न. 1. साहूकार सूद के बहाने काश्तकार की सारी रक़म खा गया। (निकालना) किसी के ज़िम्मे रक़म वाजिबुल अदा बताना।
1. खरीदारों के जिम्मे एक बड़ी रक़म निकलती है। (लगाना) कारोबार में रक़म खर्च करना या फेलाना।
फिकरा– उसने अपनी सारी रक़म ठेके में लगा दी। (मारना) रक़्म वाजिबुल अदा देने से इन्कारी होना।
फिकरा– इस हंगामे में बहुत से ताजिरों की रक़म मारी गयी। (मिलाना, जोड़ना) नक़्दी का जमा खर्च देखना। नक़्द आमदनी का हिसाब लगाना।
रैटी (स्त्री) किस्त बन्दी रक़म कर्जे की अदायगी जो साल के 12 महीने जारी रहे यानि उसका मुस्लसल और मुर्कररा और बधाँ रहे। जिस तरह हट के पानी का दौर बधाँ रहता है। उस कर्जे की वसुली का ये तरीका होता है की महाजन ज़र्रे अस्ल पर सूद बढ़ाकर ज़र्रे कुल को साल के बारह महीनों पर तक़सीन करके माह व माह मुकर्ररा रक़्म वसूल करता रहे। (चलाना, बाँधना)
साहजोग हुन्डी/शाहजोग हुन्डी (स्त्री)– वो हुन्डी जिसकी रक़म अस्ल नाम बुर्दाह के अलावा उसके किसी कारिन्दे को या जो शख़्स हुन्डी लेकर आये अदा कर दी जाए जैसे बेक का वो चेक जिसपर लफ्ज़ ब्यार रिया आर्डर लिखा होता है और हर साल चेक को वाजिबुल अदा होता है।
साहूकार (पु0)– रक़मी लेन देन का कारोबार करने वाला सरमायादार।
साहूकार (पु0)– साहूकारों की अन्जुमन या बाज़ार।
सकारा (पु0)– हुन्डी कुबुल करने या मंजूर करने की कटौती यानि वो हुन्डी जो कब्ल अज़ मियाद वसूल की जाए। उसकी पेशग़ी रक़म देने का मुनाफा।

सकारना (क्रिया)– रक़म अदा करने के लिए हुन्डी कुबुल करना देखो हुन्डी। (संस्कृत बमानेसीरिकारा बिही माने कुबुललियत)
समाचार (स्त्री)– वो तहरीरी याददाश्त जो हुन्डी लिखने वाला कुबुल करने वाले के नाम हुन्डी की रक़म अदा करने की उसी रोज़ अलाहदा लिख भेजे। जो धोखे या चोरी से बचने के लिए बतौर इजाज़त नामे के हो जब तक इस किस्म की तहरीर नही तहुँच जाए हुन्डी कुबुल करने वाला हुन्डी कुबुल नही कर सकता।
पैदस्तख़त (पु0)– रजिस्टर या खाता लेन देन यानि कबजुल वसूल में किसी रक़म की वँसूली के रसीदी दस्तख़त।
सूद (पु0)– बियाज यानि ब्याज जर्रे अस्ल का जो कर्ज़ दो जाऐ मुनाफ़ा जो मुख़तालिफ़ शरा से लिया जाता है।
सौ सवाया (पु0)– अस्ल सरमाये पर पच्चीस फीसद सूद जो आमतौर से महाजन काशतकार से लेता है।
सर्राफ़ा नानवा (पु0)– देखो नानवा महाजनों की कोठी के बहामन मुलाज़िमीन का शादी ब्याह के मौके पर नेक देने की नामदारी फ़ेहरिस्त जो बतौर याददाश्त रखी जाती है।
ज़ामिन (पु0)– कर्ज़दार की जमानत देने वाला।
फ़ारिग़ख़ती (स्त्री)– देखो छोड़ चिठ्ठी।
क़िस्तबन्दी (स्त्री)– देखो रैटी
खोखा हुन्डी (स्त्री)– वो हुन्डी जिसकी रक़म अदा कर देने के बाद ख़ारिज या मन्सूख़ कर दी गई हो और बिहीतौर फर्द–ए–हिसाब या रसीद बेबाकी रक़म समझी जाए।
लेने जोग हुन्डी (स्त्री)– क़ाबिल–ए–क़ुबुल हुन्डी यानि वो हुन्डी जिससे इन्कार न किया जाए।
माया (स्त्री)– सरमाया, दौलत, रासुलमाल।
कहावत– ''दुःखदा में गयी जान
माया मिली न राम''
मोल (पु0)– संस्कृत बमाने अस्ल रक़म और ब्याज बमाने सूद मोल ब्याज मुराद ज़र्रे अस्ल और सूद।
महाजन (पु0)– बड़ा व्यापारी इस्तलाहे आम में रक़मी लेन देन करने वाला और सूद पर रक़म देने वाला व्यापारी क़ाश्तकारों में महाजनों के चरित्रों से बेज़ारी पर ज़ेल की कहावत मशहूर है। रात, सुहार, नौठग, सौ ठग, बनिया एक, सौ बनिये को मार के काड़द महाजन एक।
महाजनी (स्त्री)– महाजनों की अन्जुमन या कारोबारी जमात
मियादी हुन्डी (स्त्री)– वो हुन्डी जिसकी अदायगी के लिए वक़त मुफर्रर हो उससे कब्ल उसकी रक़म अदा करना लाज़िम न हो उसको इस्तलाहन मुहलत तलब और वक़त तलब हुन्डी भी कहते है।
जोग हुन्डी (स्त्री)– वो हुन्डी जिसपर वसूल करने वाले का नाम लिखा हो और उसी को वाजिबुल अदा हो।
नकदी (स्त्री)– रसमाया बसूरतें सिक्का
फिकरा न. 1. चोर ने सारी नकदी ले ली और दूसरी चीज़ों को छोड़ दिया।
हाथ उधार (पु0)– देखो पैंचा और दस्तगर्दा कर्ज़।
हाथ चिठ्ठी (स्त्री)– अंग्रेजी पासबुक फ़र्दे हिसाब जिसमें महाजन के पास रक़म अमानत या जमा रखने का जमा व खर्च लिखा जाता है और लेन दार के पास बतौर मुदरजती है।

हुन्डी (स्त्री)– संस्कृत हुन्ड बमाने जमा करना। महाजनी इस्तलाह में वसीक़ा वसूली रक़म। रक़मी जमानत नामा या रूक़्क़ा जिसपर रक़म वसूल की जाए।

पेशा दुकानदारी–

आड़त/आडहत (पु0)– तिजारती माल के ख़रीदों फरो,त का मामला कराने का मुआवज़ा दस्तूरी कमीशन। संस्कृत अर्दा बमाने तिजारती लेन देन और हिन्दी में इसे अड बमाने तिजारती माल के ख़रीदो फरोख़्त का मामला कराने की कोशिश मुराद ली जाती है। (लेना देना) तिजारती माल का बाज़ार में ख़रीदो–फ़रोख़्त का मामला कराने का मुआवज़ा लेना।

(लगाना) तिजारी माल को फ़रोख़्त करने के लिए किसी बड़े ताजिर या कोठीदार का तवस सुद इख़्तियार करना।

अड़तिया/अड़ती (पु0)– एजेण्ट (अंग्रेजी) बाज़ार में तिजारती माल का सौदा करने वाला कोठीदार जो खुद भी तिजारत करता और मण्डी में तिजारती माल लाने वालो का शरीक़ भी होता है। मण्डी में माल की दरामद–बरामद और तलब रस्द के हालात से वाक़िफ होता है। और इसीलिए तिजारती माल का नर्ख़ आड़तिए के अंदाज़े और करारदाद पर क़ायम होता है जो कारोबारी इस्तलाह में बाज़ार का भाव कहलाता है।

आड़तियों को तुकदार भी कहते है। क्योकि आड़त पर आये हुए माल का तौलना तुलवाना भी उसी के जिम्मे और निगरानी में होता है। इस लिए उसको अपने साथ डण्डीदार भी रखना होता है।

ऑक/अंक (स्त्री)– तुख़मीना जाँच तिजारती माल की क़ीमत फरोख़्त जो बमुआजिब चलन बाज़ार क़ीमत ख़रीद की सवाई या ढयोढ़ी होती है। ऑक की याददाश्त के लिए हर दुकानदार अपनी अपनी मुर्कररा अलामात रखता है। जिसको बतौर इशारा ख़रीद बही में लिख देता है।

आकड़ॉ (पु0)– 1. अलामत निशानी हिन्दसा जो ऑक के लिए बतौर–ए–इशारा दर्ज खाता किया जाए।

2. वो निशान जो हरताजिर अपने तिजारती माल की ख़ास अलामत के तौर पर डाले। ट्रेडमार्क (ज्तंकम उंता) (अंग्रेजी)

उतरा हुआ माल (पु0)– तिजारती माल जो मुर्कररा मुद्दत गुज़से पर ख़राब हो गया हो या हो जाए।

उठावनी (स्त्री)– तिजारी माल को मण्डी में भेजने के लिए व्यापारी से पेशगी रकम हासिल करना। और उसके लिए मुआहिदा व लेन देन करना।

इजारा (पु0)– किसी माल की तैयारी का कानूनी हक़ जो किसी सन्नाअ या ताजिर को अता किया गया हो।

इजारेदार (पु0)– किसी माल की तैयारी का क़ानूनी हक रखने वाला शख़्स देखो इजारा।

उचापत (स्त्री)– तिजारती माल की नकद खरीदारी खुश ख़रीदी यानि बरवक़त खरीद माल पूरी क़ीमत अदा करना।

अड्डा (पु0)– ठीया, पेशावरों की मुशतरक इस्तलाह, दुकानदारों में दुकानदार के दुकान पर बैठने की जगह मुराद ली जाती है।

फिकरा– कारोबार के वक़त दुकानदार अड्डा छोड़कर कही नही जाता।

अर्ज़ा सौदा (पु0)– देखो सत्ता सौदा।

उड़ती तौल (स्त्री)– कमती तौल तराजू में तौलने का ऐसा तरीक़ा जिसमें जिन्स वाले पलड़े की डण्डी का सिरा किसी कद्र ऊपर को उटता रहे।

फिकरा न. 1. घटिया दुकानदार हमेशा उड़ता तौलता है।

उगाई/उघाई (स्त्री)– तिजारती माल की फरोख़्त की वाजिबुल अदा रक़म की मुकररा वक़त पर वसूली का काम यानि करना के साथ बोला जाता है।
अलबल (पु0/स्त्री)– तिजारती माल के बाज़ारी भाव में कमी या बेशी।
फिकरा– उस माल की कीमत में कुछ अलबल नही है। बाजार में तहक़ीक करो।
फिकरा– मैनें क़ीमत में कुछ अलबल नही रखा। बाजार के भाव दाम लगाये है।
ईलाही गज़ (पु0)– अहदे अकबरी का गज जो अंग्रेजी अहद के गज़ से करीब ढ़ाई गिरह चार इंच बड़ा होता था। इसके मुक़ाबले इमसरती गज़ इसी क़द्र कम होता है।
अमानी (स्त्री)– तिजारी कारखानों में ताजिर का अपनी जाति निगरानी में मज़दूरों को उजरत देकर काम लेने का तरीक़ा जो ठेके गुत्ते पर काम लेने के बरअक़स होता है।
अनाजी बही (स्त्री)– आड़तियें यानि कोठीदार का वो खाता जिसमें सिर्फ़ ग़ल्ले की दरआमद व बरामद का हिसाब लिखा हो उसे अनाज बही कहते है।
अंक (पु0)– देखो आकड़ाँ– हिसाब अदद का इस्तलाही नाम।
औरंग (पु0)– सनाती शहर यानि मक़ान जहाँ बड़े बड़े सनाती कारखाने हो।
औने–पौने (पु0)– दुकानदारों की इस्तलाह मुराद तिजारती माल की क़ीमत खरीद की आधी या पाव क़ीमत। जो नुकसान से वसूल हो। करना–बिला लेहाज–ए–नुकसान माल फरोख़्त करना।
फिकरा न. 1. दुकानदार ने एक दिन में सारे माल के औने–पौने करके दुकान बन्द कर दी।
ऐरा फेरी (स्त्री)– आर जार किसी जिन्स का बाहमी तबादला यानि किसी एक जिन्स के बदले में दूसरी जिन्स का बहमी लेन देन करना।
एक बात (स्त्री)– एक क़ीमत, एक दाम दुकानदारों की इस्तलाह मुराद। किसी तिजारती माल की मुकररा क़ीमत फ़रोख़्त बिला कमोबेश बताना।
फिकरा– मैने कुल सामान की एक बात कह दी भाव चुकर?ाने की ज़रूरत नहीं।
एक क़ीमत (पु0)– देखो एक बात
बारदाना (पु0)– दुकानदारों की इस्तलाह लफ्ज़ का तल्लाफ़ुज़ मुराद थैले, डिब्बे सनदूक और इसी किस्म की दूसरी चीज़े जिसमे तिजारती माल भरकर मण्डियों में भेजा जाता है।
बाज़ार (पु0)– शहर या बस्ती में तिजारती कारोबार के मुस्तक़िल मक़ान। जहाँ हर किस्म के ताजिरों की दुकाने होती है। उतरना के नाम से याद किया जाता है। दुकानदारों की इस्तलाह में किसी तिजारती माल की क़ीमत फरोख़्त आम तौर से घट जाना या कम हो जाना।
भरना (पु0)– 1. वक़ती और आरज़ी बाज़ार लगाना।
2. बाज़ार में व्यापारियों का जमा हो जाना। (तेज होना, चढ़ना)
दुकानदारों की इस्तलाह मुराद तिजारती चीज़ो की क़ीमते आम तौर पर बढ़ जाना।
(गिरना, मूदा होना)
तिजारती माल के खरीदोफरोख़्त में मामूल से ज़्यादा कमी वाक़े होना। यानि माल की निकासी घटी रहना।
भाव (पु0)– तिजारती माल के खरीदोफरोख़्त का आम बाज़ारी नर्ख़। क़ीमतो का ताइयुन।
बकी तहवील (स्त्री)– वो रक़म जो तिजारती माल की खरीदोफरोख़्त का हिसाब बन्द करने पर जमा व खर्च मीज़ान के बाकी रहे।
बागी (स्त्री)– किसी चीज़ का नमूना जो पसन्द के लिए दिया या दिखाया जाए।

बट्टे खाता (पु0)– वो खाता जिसमें ऐसी रकोमात दर्ज हो जिनके वसूल करने की उम्मीद न हो। यानि कर्ज़दारों पर रह गयी हों। और नुकसान शुमार के लिए उनको लिख रखा जाए।
बट्टे कर (पु0)– देखो दलाल बत्ना बमाने माल फरोख़्त करना या माल की फरोख़्त के लिए गाहक लगाना।
दलाली कमीशन
बटना (मसदर क्रिया)– दुकानदारों की इस्तलाह मुराद माल फरोख़्त करना नफ़ा पैदा करना।
बदनी/बधनी (स्त्री)– संस्कृत वद बमाने माल के खरीदने की बात करना। कौल लेना यानि किसी तिजारती माल की तैयारी से कबल क़ीमत खरीद मुर्करर करके कौलो करार करना। मुस्तकिल के बाज़ी भाव का अज़ादा लगाकर क़ीमत खरीद का ताइउन बतौर सद्दा। आमतौर से गल्ले का कारोबार करने वाले ताजिर रूस्दोतलब का अंदाज़ा लगाकर कश्तकारों से उनकी पैदावार का करते है।
(करना) लफ्ज़ बाँधना का इस्तलाही तल्फ़ुज़
बिद्ध (स्त्री)– जोड़ मीज़ान तिजारती माल की बिकरी की रक़म का फरोख़्त शुदा माल से मुकाबला और पड़ताल।
बिद्ध बही (स्त्री)– जमा व ख़र्च का खाता जिसमें आमदनी व ख़र्च के इंदराजात निकासी और खरीद की मीज़ान लिखी जाती है।
बरामद (स्त्री)– निकासी देखो दरामद और बिसादर
बिसाद (स्त्री)– पूँजी सरमाया रासूल माल
बिसाती (पु0)– मामूली और हर वक़्त के ज़रूरत के सामान ख़ानादारी फरोख़्त करने वाला ताजिर।
बुक्य (पु0)– मुट्ठी भर बानगी जो आमतौर से गल्ले की व्यापार में आनाज के ढ़ेर के अन्दर हाथ डाल कर मुठ्ठी भरने को कहते है।
बिकरी (स्त्री)– तिजारती माल की बाज़ारी फरोख़्त निकासी।
फिकरा– बाहर से माल की माँग न होने से बिकरी कम हो गई।
बिल (पु0)– अलबिल यानि अदल बदल का इस्तलाही तल्लफुज़।
निकालना– क़ीमत फरोख़्त की ज़्यादती को कम करना।
बंज (पु0)– संस्कृत व नजिया बमाने पेशा लेनदेन खरीदफरोख़्त समान ज़रूरियाते ज़िन्दगी।
बंजी (पु0)– तिजारती कारोबार करने वाला बंज करने वाला।
बनिया (पु0)– बल्ला फरोशदुकानदार
बोरा (पु0)– अनाज भरने का टाट का थैला छोटे को बोरी कहते है।
बोली (पु0)– बात, कौल किसी चीज के मज़मए आम में फरोख़्त यानि नीलाम पर खुद अपने इरादे और ख़्वाहिश से क़ीमत खरीद का इज़हार। इस तरह के फरोख़्त में सबसे ज़्यादा क़ीमत देने वाले की माल फरोख़्त किया जाता है। (बोलना, देना)
फिकरा– नीलाम यानि हरराज में खरीदार अपने अपने अदाज़े के मुताबिक फरोख़्त की जाने वाली आशिया की बोली बोलते है।
बोनी/बोहनी (स्त्री)– दस्तलाभ किसी ताज़िल या दुकानदार के माल के फरोख़्त की आमदनी या आश्याऐं तिजारत के फरोख़्त की इठितदा (करना, होना)
बौहरा/बुहरा (पु0)– व्यापारी तिजारती कारोबार करने वाला शख़्स गुजराती लफ़्ज बुहरगत या बौहरगत बमाने व्यापार।

बही (स्त्री)– किताबचा या रोज़ नामचा पोथी जिसमें तिजारती हिसाब किताब और लेन देन लिखा जाये।
बही खाता (पु0)– तिजारी हिसाब किताब की पोथी यानि (रजिस्टर) जिसमें रोज़ मर्रा का लेन देन दर्ज हो।
इस्मदारी खाता–बयाना (पु0)– अरबी लफ्ज़ बऐआना का ग़लत तल्लफुज़ (देखो बयाना)
बेजक (स्त्री)– अश्याऐं फरोख़्त शुदा या तफसीली पर्चा बिकरी माल जो कारखानेदारा या ताजिर माल का तफसीली निर्ख लिख कर व्यापारी को दे।
बेजक बही (स्त्री)– दरआमदें माल के निर्ख़ नामे के इन्द्राजात का खाता (यानि रजिस्टर)
बयनामा (पु0)– क़ीमत खारीज से कुछ रकम की अदाएगी बतौर तश्दीक मुआहेदय की खरीदारी की जमानत के लिए दे। (देना लेना) (करना होना) किसी चीज के खरीदने का मामला तय पाना, पक्का होना (पाना) रक़म बयाना वसूल होना।
ब्योपार/ब्योहार (पु0)– तिजारती कारोबार अशिया महावताज देखो बन्ज खरीदोफरोख़्त
फिकरा– आजकल कपड़े का व्यापार बहुत बढ़ गया है।
व्यापारी (पु0)– तिजारती कारोबार करने वाल सौदागर
फिकरा– फसल पर मण्डी के बहार से व्यापारी बहुत आता है।
भाँझी/भांझी मारना (स्त्री)– तिजारती माल की खरीदोफरोख़्त के मामले में रखना डालना, बहम दिलाना, बद्दगुमानी पैदा करना, बिगाड़ डालना, उच्चताना सौदा बिगाड़ना।
भाँझी खोर (पु0)– तिजारती माल की खरीदो फरोख़्त में बिगाड़ डालने वाला, मामला उच्चटाने वाला।
भाव (पु0)– तिजारती माल की बाज़ारी क़ीमत जो तलब और रसद के उसूल पर मुर्कर्रर हुई हो जो कारोबारी इस्तलाह में बाज़ार का भाव कहलाता है। (ठहरना, चुकाना, तय करना) एहले मामले की बाहमी रज़ामन्दी से तिजारी माल की क़ीमत मुर्कर्रर करना।
(ठहरना, बनना) तिजारती माल की बाज़ारी क़ीमत मुर्कर्रर हो जाना (बढ़ना, तेज होना, चढ़ना) किसी माल की मुर्क़ररा बाज़ारी क़ीमते फरोख़्त में ज़्यादती हो जाना (चढ़ाना) माल की मामूल बाज़ारी क़ीमते फरोख़्त में ज़्यादती करना। (उतरना, गिरना, घटाना, नीचा होना, मंदा होना) माल की बाज़ारी क़ीमत में कमी वाके होना (निकलना–निकालना) माल को बाज़ारी क़ीमत मुर्क़रर पाना। (बिगड़ना) माल के आम बाज़ारी नर्ख़ में ख़राबी पैदा करना या होना।
भाव उपसवाया (पु0)– किसी तिजारी माल के असल भाव यानि बाज़ारी भाव पर 25 फीसदी नफ़ा।
भाव ताव (पु0)– तिज़ारती माल की बाज़ारी क़ीमत जाँच पड़ताल के साथ तसदीक के साथ।
भण्डसारी (पु0)– भण्डारी अड़ातिया अनाज का खत्तेदार या ज़ाएवीरा रखने वाला ताजिर।
पुतली घर (पु0)– तिज़ारती माल की तैयारी का कारख़ाना जहाँ कुलों के ज़रिए माल तैयार किया जाता है।
पट्टा लौटाना/पट्टा उलटना (क्रिया)– टाट उलटना। दुकानदारों की इस्तलाह मुराद दिवाला निकालना। दिवालियाँ होने के ऐलान का एक तरीका जिसमें दुकानदार दुकान खोलकर अपने बैठने की गद्दी को उलट देता है और अपनी जगह से अलैहदा होकर एक तरफ बैठ जाता है। इस अमल से बाज़ार में उसके दिवालियाँ होने का ऐलान और साथ ही उससे कारोबार करना बन्द कर दिया जाता है।
पटना (क्रिया)– तिज़ारती के कर्ज़े रक़म वसूल होना अता पाना।

फिकरा– दुकान बन्द करने से कब्ल कर्ज़दारों से कुल रक़म कब्ल पट गयी और किसी से लेना बाकी नही रहा।
परता/पड़ता (पु0)– पड़त, दरबन्दी, निर्ख़ क़ीमते ख़रीद असल लागत जो किसी चीज की तैयारी में आए।
परताल/पड़ताल (स्त्री)– परतल, पड़तल परतला जमा व खर्च का मुकाबला जाँच वज़न या नाप के पैमाने की परख (करना) जाचना मुकाबला करना, बिद मिलाना पड़तालना।
परतला (पु0)– देखो परताल।
परचा बकरी (स्त्री)– तिजारती समान का फरोख़्त करने का तस्दीकी रूक़्क़ा इकरार नामा जो फरिक़ैन में मामला तय पाने का जामिन हो और बेचने वाला खरीदार को दे।
परचा खरीदी (स्त्री)– समान के खरीदने का इकरारी रूक्का जो खरीदार बेचने वाले को लिखकर दे।
पुरज़ा लगाना (क्रिया)– व्यापारियों की इस्तलाह मुराद खरीदशुदा समान पर पर्चायाददाश्त बतौर निशानी चिपका देना ताकि माल के बदले जाने का इमकान न हो उस पर्चे पर तादात वज़न वगैरह लिख दिया जाता है।
परखी (स्त्री)– अनाज के खरबन्द थैले में से नमुना निकालने का आला बाज़ दुकानदार देखा परखी (पु0)– देखो ऑको
पर्ख़िया (पु0)– मामुली मिखदार कि खुश्क जिन्स रखने वाला मुख़्तालिफ़ शक्ल की बनायी हुई काग़ज़ की थैली या पोटली।
पड़त (स्त्री)– देखो परता (पड़ता) कुल एख़राजात जो किसी तिजारती माल की तैयारी या खरीदारी में पड़े (पड़ना) हक़ीक़ी इखराजात का वसूल होना।
फिकरा– मुनीर को इन दामों फरोख़्त करने में पड़त नही पड़ते। (फैलाना, लगाना, देखना) किसी माल की तैयारी का इख़राजात का तफसीली हिसाब देखना कुल लागत की मिजान मिलाना।
पड़ता (पु0)– देखो पर्ता
पड़ताल (स्त्री)– देखो परताल
पड़तालना/परतालना (क्रिया)– देखो पड़ताल करना।
पड़तखाना (पु0)– किसी तिजारती माल की तैयारी या खरीद के इख़राजात के इन्दराजात का खाता (रजिस्टर)
पुड़िया (स्त्री)– पुड़े का इस्में मुज़गर देखो पुड़ा।
पनसारी (स्त्री)– लफ्ज़ भण्डसारी का उर्दू तल्लफुज़ संस्कृत लफ्ज़ पयाशाला बमाने गल्ले का कोठा या मुख़्तालिफ किस्म की जिन्स का गोदाम और भंडसारी से मुराद कोठीदार या थोकफरोश है। उर्दू में किरानाफरोश को कहते है। जो हर किस्म मसाले खुश्क मेवे और देशीी दवाइयाँ जड़ी बुटी और नमक का व्यापार करें।
पन्न (स्त्री)– कच्चा खाता मुकम्मल हिसाब जमा खर्च के मुत्ताफरिख़ कागज़ जो नथ्थी करके बतौर मसौदा महफुज़ करके रखे जाऐ।
पेटाा (पु0)– बही खाते का पन्ने यानि (वर्क) का मतन यानि हाशिये के अंदर की जगह मुराद अस्ल तहरीर जो सफे का हाशिया छोड़कर लिख्र जाए।
पेटी (स्त्री)– बैठन बमाने गठरी का गुज़राती तलफुज़ जो बम्बई और नवाटे बम्बई में इस्तलाहन सन्दूक के लिए बोला जाने लगा है।

पैसे खरे करना (क्रिया)– दुकानदारों की इस्तलाह मुराद माल फरोख़्त करके नक्द रक्म जमा या वसूल कर लेना।
पैकार (पु0)– गुमाशता–एजेण्ट तिज़ारती दलाल वो शख़्स जो बाज़ार में फिरकर तिज़ारती माल ख़रीदों फरोख़्त का मामला कराऐ।
पैन्ट/पैट (पु0)– पैट थड़ी–आरज़ी (उठाओ) तिज़ारती मंडी या बाज़ार जो किसी ख़ास मकान और मुर्करर वक़्त पर भरे यानि तिजारती माल की खरीद फरोख़्त के लिए लगाया जाए।
फुटकर फरोश (पु0)– ख़ुरादा फ़रोश, चिल्लर फरोश, थोड़ी और कम मिकदार में जिन्स बेचने वाला दुकानदार।
फड़िया (पु0)– वो मामूली सौदा फ़रोश जिसको बाज़ार में कोई मुस्तक़िल दुकान न हो बल्कि बाज़ार में सरेराह जहाँ मौका और ज़रूरत देखे।
फेरी वाला (पु0)– रोज़मर्रा के इस्तेमाल का मुख़्तसर तिज़ारती समान लिए हुए घर–घर फिर का बेचने वाला सौदागर।
तज़िर (पु0)– तिज़ारती करने वाला सौदागार व्यापारी।
तला बन्द पन्ना (पु0)– बही खाते का इस्मदारी पन्ना या पन्ने सफे जो एक शख़्स के हिसाब या एक ही किस्म के जिन्स के जमा व ख़र्च के इन्दराजात के लिए मख़सुस हो।
तादान (पु0)– डुढ़ हर्जा नुकसान का बदला बिगाड़ की तलाफ़ी लेना डालना।
तिजारत (स्त्री)– व्यापारी कारोबार बन्ज
तुलाई (स्त्री)– देखो जुखाई
तोलना (क्रिया)– किसी जिन्स को किसी वज़न के बराबर करना।
तहबज़ारी (स्त्री)– फेरी, फिरकर या बाज़ार में सड़क के किनारे बैठकर सौदा बेचने का महसूल जो महकमायें चुन्गी की तरफ से वसूल किया जाता है। तफसील के लिए देखो फड़िया।
थड़ी (स्त्री)– देखो पेन्ट लगना लगाना।
थोक (पु0)– सर बन्द माल किसी तिज़ारती माल की मजमूई हैसियत।
थोक फरोश (पु0)– वो सौदागर जो माल को मजमूई हैसियत से फरोख़्त करें और मुत्तर्फरिख़ तौर पर न बेंचे।
टाट उलटना (क्रिया)– देखो पट्टा नोटना
टाली (पु0)– टहल करने वाला ताजिर का माल फेरी फिरकर बाज़ार में बिकवाने और मामलय तिज़ारत।
टप्पड़/तप्पड़ (पु0)– दुकानदार के बैठने की गद्दी
टअपूंजियाँ (पु0)– टट त्के का बाज़ारी तल्लफुज़ पुजियाँ पूंजी रखने वाला वाला मुराद अदना दर्जे का काम हैसियत का दुकानदार।
टकासी (पु0)– देखो टटपुजियाँ पैसे–पैसे और दो दो पैखे का सौदा बेचने वाला दुकानदार। खुर्दाफरोश, चिल्लर फरोश।
टोटा (पु0)– नुकसान, घाटा, कमी (आना, पड़ना, होना) तिज़ारत में नुकसान आना। उदाहरण इस माल की फरोख़्त में बड़ा टोटा आया रूपये के बारह आने हो गये।
जकड़/जानकड़ (पु0/स्त्री)– कच्ची बिक्री पसन्द न आने पर माल के वापस लेने का इकरार। परख़ने और पसन्द करने की शर्त पर तिज़ारती अशिया का लेन देन।

जकड़ बही (स्त्री)– ताजिर का कच्चा खाता इसमें माल की बिक्री पसन्द की शर्त के साथ लिखी जाए।
जाचन्रार (पु0)– देखो ऑको
जोखाई (स्त्री)– तुलाई–मण्डी में व्यापारी का माल तोलने की उजरता। आडतिए का हक़ देखो आड़तिया फिकरा–2
जमा झड़ती (स्त्री)– सारे दिन की बिक़ी की रक़म से जमा और खर्च की सिलक (बचत) जो आख़िर में बाकी रहे।
जोखा (पु0)– लुल्लइयाँ, डण्डी, बार आड़तिए के सहाँतोल का काम करने वाला।
जोखना (पु0)– 1. तिज़ारती मण्डी में व्यापारी का माल तोलना।
2. माल के तोलने की उजरत जोखाई।
जोख लेना (क्रिया)– भाड़ लेना। तराजू की डण्डी के दोनों सिरों को बराबर करना। पासंग देखना।
जोखो (स्त्री)– ताजिरो और सर्राफ़ो की इस्तलाह मुराद नकद रक़म या जेवर बगैरह जिसमें चोरी जाने का अन्देशा हो।
जोखखाता/जोखाता (पु0)– कपड़ा बेचने वाला बज़ाज़ों की इस्तलाह मुराद मुनाफ़ा बही यानि वो खाता जिसमें रोज़ाना खरीदफरोख़्त का नफ़ा लिखा जाए।
झड़ती (स्त्री)– सिलक देखो जमा झड़ती रोज़ नामचां जमा व खर्च की फाज़िल रक़म।
चिट्ट नवीज़ (पु0)– देखो मुनीब
चिट्ठा (पु0)– साल भर के तिज़ारती जमा व खर्च का हिसाब या लेन देन का मियादी हिसाब (बनाना, बाँटना) लेन देन का हिसाब चुकाना।
चिठ्ठा बही (स्त्री) 1. मिज़ानिया खाता। साल भर के जमा व खर्च के हिसाब का खाता।
चुकाना (क्रिया)– चुकता करना किसी तिज़ारती माल की क़ीमत ठहराना।
2. किसी का अता देना, कर्ज़ा अदा करना, लेन देन का हिसाब बेबाक करना।
चुकताना (क्रिया)– देखो चुकाना
चकूता/चकूता करना (क्रिया)– देखो चुकाना
चिल्लर फ़रोश (पु0)– देखो टटपुजियाँ और टकासी।
चुंगी (स्त्री) आड़तिसे का हक़ मण्डी कर रस्म, तफसीली के लिए देखो पेशा–ए–काश्तकारी और जन्द शीशम।
चिलौनी (स्त्री)– देखो रोखन (रोखन)
खुर्दा फ़रोश/ख़ोर्दा फ़रोश (पु0)– देखो टटपुज़ियाँ और टकासी।
ख़रीदार (पु0)– देखो ग्राहक
ख्वान्चा (पु0)– देखो फेरी वाला
खुश खरीदी (स्त्री)– बाजार के भाव पर नक़द क़ीमत देकर माल खरीदने का तरीक़ा। बन्दी या बदनी की ज़िद देखो बदनी।
दाम (पु0)– तफसीली के लिए देखो पेशा–ए–महाजनी। सौदागरी इस्तलाह में किसी चीज की क़ीमत मुराद ली जाती हो। (चुकाना, क़ोता करना) किसी चीज की कीमत डकरना (लगाना) किसी चीज की कीमत कहना या क़ीमत करार देना (चढ़ना, चढ़ाना) किसी चीज़ की क़ीमत आम नर्ख़ से ज्यादा होना या करना।

दर (स्त्री)– सर बन्द माल का नर्ख या भाव अर्दी क़ीमत जो फ़ी अदद एक मुर्कररा मिक़दार के लिए हो। उदाहरण– सोना 25 रूपऐ तोले की दर से खरीदा गया था।
दरआमद (स्त्री)– देखो दिसागर बैरून मुल्क से तिज़ारती माल की आमदनी।
उदाहरण– आजकल कपड़े की दरआमद बन्द है।
दरकट/दरकटी (स्त्री)– मिन्नजानिब पंचबाजार या सरकारी का रनदा मण्डी में तिज़ारती माल की तमयत फरोख़्त का ताअईयुन।
उदाहरण– बड़े–बड़े शहरों में सरकार की तरफ से रोजाना अशियाए खुर्दनी की दरकाटी यानि निकाली जाती है।
दरमाहाना (पु0)– मण्डी में तिज़ारती माल का महाना नर्ख़ मुर्कर्रर करना।
दीसावर (पु0)– जिसआदर संस्कृत देश अपारा बमाने दूसरा मुल्क मुराद दूसरे मुल्क से तिज़ारती माल की आमदनी या लेन देन (दरआमद, बरामद) (तेज होना, चढ़ा हुआ होना) बैरून मुल्क से आने वाले तिजारती माल की कीमत बढ़ जाना या सलब में ज्यादती होना। (उतरना, मन्दा होना) बैरून मुल्क से आने वाले तिजारती माल की क़ीमत घट जाना या तलब में कमी वाके होना।
वस्तलाब (स्त्री)– देखो बनी लाभ बमाने नफ़ा पहली बिक्री जिसमें नफ़ा हो।
दस्तूरी (स्त्री)– परदेसी माल के दरआमद और बरामद का महसूल। बाज़ारी इस्तलाह में तिज़ारती माल की खरीदोफरोख़्त का मामला कराने का मुर्कररा मुआवज़ा या हक़े ख़िदमत मुराद ली जाती है। रिवाज़न मुर्कर्रर होती है। (प्रेना देना)
दुकान (स्त्री)– यूनानी जफ्ज़ का उर्दू तल्फ्फुज़ मुराद या मण्डी में व्यापारी के कारोबार करने की मुस्तक़िल जगह जो इमारत की शक्ल में हो। (करना, लगाना, बोलना) तिज़ारती माल के लेन देन के लिए बाज़ार में दुकान कायम करना। (जमना, जमाना) दुकान का कारोबार कायम हो जाना या क़ायम कर लेना। (चलना, चलाना) दुकान का कारोबार साख के साथ जारी रहना या जारी रखना। (छकना) दुकान के कारोबार में तरक्की और शोहरत होना (बैठना, पट होना) दुकान का कारोबार बन्द होना या ख़राब हो जाना नुकसान आ जाना। (उठाना) दुकान बन्द कर देना। छोड़ देना, बाज़ारी कारोबार कर देना (बढ़ाना) दिन ख़त्म हौन और तिज़ारती कारोबार बन्द हौन पर दुकान बन्द करना। जिसको नेक शगुन के लिए बढ़ाना कहते है। जैसे दस्तरख़ान बढ़ना या चिराग बढ़ाना।
दुकानदार (पु0)– बाज़ार में दुकान लगाने वाला व्यापारी कहावत– नामी दुकानदार कमा खाये, नामी चोर मारा जाऐ।
दुकानदारी (स्त्री)– दुकान करने का दस्तूर या तरीका (करना)
दलाल (पु0)– आड़तिए या कोठीदार का तिज़ारती मआतमद (कमीशन एजेण्ट) जो अपना जाति कारोबार नही रखता बल्कि आड़तिए (ताज़िर) की तरफ से बाज़ार में तिज़ारती माल का मामला करता है। और इस ख़िदमत के बदले एक मुर्कररा दस्तूरी (मुआवज़ा) लेता है। इस लिए व्यापारी या ताज़िर का कारिन्दा समझा जाता है।
दलाली (स्त्री)– ताजिर या व्यापारी की तरफ से बाज़ार में तिजारती माल के फरोख़्त करने का तरीकाये कार (करना, कराना) दलाल की उजरत।
देखा परखा (स्त्री)– देखो परखी
दिवाला (पु0)– निर्धन–तिजारती कारोबार का नकाबिले तलाफ़ी नुकसानी जिससे कारोबार बन्द हो जाये। (निकलना होना) तिज़ारती कारोबार में नुकसान होने की वजह से कारोबार बन्द हो जाना।

दिवालिया (पु0)– वो व्यापारी ताजिर जिसको तिजारती कारोबार में घाटा आ गया हो और माल की खरीदो फरोख़्त में इतना कर्जदार हो गया हो कि कर्जा न उतार सके और कम मालगी का ऐलान कर दे (बनना, होना)
धड़वाई (स्त्री)– मण्डी में व्यापारी की माल की तुलाई की उजरत।
डाणियाँ (पु0)– डड़ीदार मण्डी में तोल का काम करने वाला तोलइया।
डब (स्त्री)– गाँठ लफ्ज़ डिबिया का मुख़फ़िफ़ कारोबारी इस्तलाह में थैली। नेवली या बटवाँ मुराद ली जाती है। उदाहरण डब में पैसा नही रेस ऐसी करे जैसे रईस।
डठा (पु0)– देखो तावान
रत्ती चमकना (क्रिया)– किस्मत जागना कारोबारी इस्तलाह में तिजारत का तरक्की करना खूब नफ़ा होना।
रोक (स्त्री)– देखो रोकना
रोकण (पु0)– तिजारती माल की बिक्री की नगद रक़म।
रोकण बही (स्त्री) 1. नकदी खाता वो बही खाता जिसमें नकद आमदनी या नकद बिक्री की जुगला रक़म लिखी जाए।
2. माल की बिक्री तारीफ़वार दर्ज की फिर उससे इस्तमवारी खातो में नकल कर ली जाती है।
रोकन/रोखन (स्त्री)– 1. झिलौनी, तहरीर, रोक, सौदे सुलफ़ की खरीदो फरोख़्त पर उड़े थुड़े का हक जो अशिया की तोल या नाप की कोवरकसर के पूरा करने का दस्तूर समझा जाता है।
2. खरीदार के मुलाज़िमया कारन्दि का हक़ (देनद, लेना, खाना)
रद्दना (पु0)– तिज़ारती माल की दरामद या बरामद का इजाज़तनामा जो हुकुमत की तरफ से दिया जाता है (काटना, देना) रजिस्टर बरामद, बरामद में इजाज़त नामे की अस्ल तहरीर रखकर नकल ताज़िर को देना।
साझा (पु0)– तिज़ारती कारोबार में शिरकत
साझया (पु0)– तिज़ारती कारोबार का शरिक या हिस्सेदार।
साई (स्त्री)– लफ्ज़ सही का इस्तलाही तल्लफुज़ मुराद खरीदोफरोख़्त के मामले के सही होने या करने की जमानत देखो बयाना (लेना देना)
उदाहरण– मतबा वाले ने कागज़ खरीदने की साई दे दी है।
साई वदाई करना मुराद खरीदफरोख़्त का मामला पक्का करना। किसी को साई किसी को बदाई (कहावत)
सथियार (पु0)– ताजिर का कर्दा मख़सूस निशान जो तिजारती माल पर बतौर अलामत लगाया जाए।
सजल माल (पु0)– ख़रा ओर अच्छा माल जिसमें कोई नुक्स या असर न हो। यूनानी लफ्ज़ बमानी मोहर ठप्पा या तबाअत वगैरह। उर्दू में मोहर ज़दा यानि उम्दा और मज़्तंनद माल के लिए बोला जाता है।
सस्ता सौदा (पु0)– कम क़ीमत या कम दामों का माल। कहावत महँगा रोए एक बार सस्ता रोए बारबार।
सिंधाड़ा (पु0)– बाज़ार के तिराहे के मेल पर ताहोटा। छोड़ा हुआ रकबा जहाँ से तीन तरफ सड़के मुड़ती हो। बड़े शहरो में ऐसे मुक़ाम पर चमन या कोई काबिल–ए–दीद चीज़ बना देते है।
सौदा (पु0)– खरीदोफरोख़्त मिसाल के तौर पर आज सुबह से बाज़ार में कोई सौदा नही बना।

समान –ए–तिजारत या सौदागरी। उदाहरण– नुमाइस में हर किस्म का सौदा था। और खूब बिक्री हो रही थी।

सुलफ़ (पु0)– अरबी लफ्ज़ बमाइनी फ़ौरी तैयार की हुई रिज़ा। व्यापारी इस्तलाह में रोज़ मर्रा की जरूरत की मामूली अशिया की खरीद व फरोख़्त के लिए लफ्ज़ सौदा के साथ बोला जाता है। (सौदा सुलफ़)

उदाहरण– नौकर सुबह सबेरे से सौदा सुलफ़ लेने बाज़ार चला जाता है। भिन्डे बाज़ारों की इस्तलाह में लफ्ज़ सुजफा–ए–तुरत तैयार किये हुए हुक्के मायनो में इस्तेमाल होता है देखो पेशा–ए–भिन्डे बरदार (बनना, बटना, होना, करना, चुकाना, बिगड़ना, ठहरना, ठहराना, देना, दिलवाना) (खाना, खिलाना, चाटना) खाने पीने की चीज़े खरीद कर खिलाना।

सौदागर (पु0)– सौदे वाला तिज़ारती माल की खरीदोफ़रोख़्त करने वाला व्यापारी।

सोने की तोल (स्त्री)– व्यापारियों की इस्तलाह मुराद ठभ्क बराबर और जचा तुला वज़न करने का अम्ल जिसमें ज़रा कमी व बेशभ्र न हो।

सेठ (पु0)– संस्कृत शृष्ण बमाएने बड़ा व्यापारी मुम्बई और गुजरात के इलाको में बड़े सौदागर या कोठीदार यानि थोक फरोश को कहा जाता है।

ग़ुलक (पु0)– ये ग़ोलक का गल्ला तल्लफ़ुज़ देखो ग़ोलक।

फ़र्क़ की बात (स्त्री)– व्यापारी इस्तलाह मुराद किसी चीज़ की गलत क़ीमत यानि जिसके नर्ख़ में कमी करने की गुंजाइश हो।

क़ीमत (स्त्री)– किसी चीज़ का बाज़ारी नर्ख़ या भाव (उतरना) किसी चीज़ की बाज़ारी क़ीमत में कमी होना। (चढ़ना) बाज़ारी क़ीमत में ज्यादती होना। (तुड़ाना) किसी चीज की क़ीमत कम करना।

कॉटे की तोल (स्त्री)– देखो सोने की तोल और काटाँ पेशा काटाँ साज़ी।

कबाड़ (पु0)– 1. संस्कृत कपाला बमाइनी मुख़्तलिफ़ किस्म का पुराना अस्बाब।

2. मुख़्तलिफ़ किस्म की तरकारियों का ख़ेत बाज़ मुक़ामी बोलियों कुंजड़े को भी कहते है।

कबाड़खाना (पु0)– मुख़्तलिफ़ किस्म के पुराने और टूटे फूटे समान का गोदाम।

कबाड़ियाँ (पु0)– कबाड़ियाँ का गलत तल्लफ़ुज़ मुराद मुख़्तजिफ़ किस्म के तिज़ारती माल का चिल्लर फ़रोश (ख़ुर्दाफ़रोश)

कटौती (स्त्री)– फरोख़ शुदा माल के नफ़े का कुछ हिस्सा खरीदार को नकद क़ीमत अदा करने पर रियातन छोड़ दिया जाए (देना, करना)

कच्चा चिठ्ठा (पु0)– देखो जाकड़ बही।

किराना (पु0)– संस्कृत करेना बमाएने मुख़तजिफ़ किस्म के नमक मसाले जड़ी बूटी और खुश्क मेवे वगैरह।

किराना फ़रोश (पु0)– देखो पनसारी

किरद (स्त्री)– हिसाब, आमदनी व ख़र्च।

करिदी (स्त्री)– रोज़ाना, खर्च और बाक़ी रखने का बही खाता।

करिदीदार (पु0)– वो मुहासिब जिनके सुपुर्द रोजाना आमदनी ख़र्च और बाकी का खाता हो।

कस्ती तोल (स्त्री)– देखो उड़ती तोल।

कसर देना (क्रिया)– व्यापारी इस्तलाह मुराद माल की बाज़ारी क़ीमत या आम भाव से दाम कम करके देना।

कसर खाना (क्रिया)– किसी चीज़ के फ़रोख़्त में नुकसान उठाना या नुकसान से सामान फ़रोख़्त कारना।
कसर निकालना (क्रिया)– किसी चीज़ के फ़रोख़्त में नुकसान हो जाने की भरपाई करना।
कसर (स्त्री)– कमी घाटा नुकसान।
कम उतरना (क्रिया)– किसी चीज़ की मुर्करर की हुई तो में कमी होना।
कतई बर्ती बेचना (क्रिया)– हस्बे जरूरत और हस्बे मौका क़ीमत की कमी बेश्म से माल फ़रोख़त करना।
कमीशन (स्त्री)– देखो दस्तूरी और दलाली।
कुन्तादार (पु0)– इलाक़ा दक्कन और बंगाल में जुत्ते दार और शुमाली हिन्दी में ठेकेदार कहावते है व्यापारी इस्तलाह में उस ताजिर को कहते है। जो बाज़ार के लिए तिज़ारती माल तैयार कराने का हक़ रखता हो।
कोड़े करना (क्रिया)– व्यापारी इस्तलाह मुराद तिज़ारती माल को क़ीमत घटाकर फ़रोख़्त करना कम से कम क़ीमत पर जो मिले फ़रोख़्त करना।
खाता (पु0)– दोनो खाता बही (खतियाना)
खाता बहि (स्त्री)– तिज़ारती हिसाब किताब लिखने का किताबचा रजिस्टर।
खाता खोलना (क्रिया)– किसी ताजिर या साहूकार के साथ लेन देन करना और रखना।
उदाहरण– बड़े दुकानदारों ने बैंक में खाते खोल रखें है।
खतौनी (स्त्री)– खाते में हिसाबी लेन देने के तहरीरी इन्द्रजात (करना, खतियाना)
खरा दुकानदार (पु0)– सच्चा मामला करने वाला व्यापारी।
खरतल (स्त्री)– सच्चाई और दयानतदारी खरतल बात और खरतल सौदा।
कुहक (पु0)– वो ताजिर जिसको तिजारत में घाटा आने से मुफ़लिस हो गया हो और कारोबार के लिए कुछ न रहा हो।
खुला भाव (पु0)– तिज़ारती माल का आम बाज़ारी नर्ख़। जो सबको मालूम हो।
गाँठ (स्त्री)– देखो डब
कहावत– आँखो का अंधा गाँठ का पूरा।
गाहक (पु0)– खरीदार (बटना) खरीदार के साथ फरोख़्त का मामला करना। (खरीदार बनाना)
गठोड़ (स्त्री)– रक़में आमनत जो किसी माल के लिए बतौर जमानत रख्म जाये।
गच्चा (पु0)– देखो गोलक बिक्री की रक़म का खाना या कोठाली (भरना)
गुदड़ी (स्त्री)– गुज़री का गलत तल्लफ़ुज़ देखो गुज़री।
गुज़रबान (पु0)– फेरी वाले और फाड़ियों से तय बाज़ारी किराया जमीन। (वसूल करने वाले) देखो फड़िया और तय बाज़ारी।
ग्राफ़रोश (पु0)– बाज़ार के भाव से क़ीमत बड़ा कर भेजने वाला ताजिर ।
ग्रानी (स्त्री)– महँगाई–तिजारती माल की बड़ी हुई कीमत और कामयाबी। (होना)
ग्रह का रूपया (पु0)– ज़ाति रक़म या सरमाया।
गुज़ारी (स्त्री)– वक़्ती और आरज़ी बाज़ार जो रोज़ाना आम गुज़र गाह पर लगे।
गल्ला (पु0)– गोलक, गलजा तिजारती माल की बिक्री की रक़म रखने का दुकानदार का सन्दूकचा या डिब्बा (कुठया)
गुमाश्ता (पु0)– देखो दलाल

गन्ज (पु0)– अनाज और दिगर ज़राती पैदावार की मण्डी जो शहर के किसी मकान पर क़ायम हो।
गोलक/ग़ोलक (पु0)– ग़ुल्लक गत्तजा देखो गल्ला। यूनानी लफ्ज़ बमायने नाली। जो व्यापारियों की इस्तलाह में गल्ला कहलाता है और गोलक का इस्तलाही तल्लफुज़ हो गया है।
घाटा (पु0)– नुकसान कमी (आना, होना) माल के फरोख़्त में नुकसान आना (खाना) नुकसान उठाना (देना) नुकसान पहुँचाना।
धना लाभ (पु0)– बहुत ज़्यादा नफ़ा जो तिजारत में हासिल हो। लाभ बमायने नफ़ा।
लाभकर (पु0)– जिन्स से जिन्स का नफ़ा से ताबदला।
लेखा बही (स्त्री)– तिजारती कारोबार का तफ़सीली और मुक़मल खाता।
मार्केट (स्त्री)– देखो पैट और गुज़ारी।
माल (पु0)– पेशेवरो की मुशतरिक इस्तलाह मुराद वो समान जो उनकी सननाई या कारोबारी लरूरत का हो। व्यापारियों में तिजारती सामान मफ़हूम होता है। (उठाना) खरीदा या बाहर से आया हुआ सामान कब्जे में करना (तेज़ होना) तिजारती माल का भाव चढ़ जाना या क़ीमते बढ़ जाना। (गिरना, मन्दा होना) तिजारती अशिया की तलब में कमी होना (रूकना) तिजारती सामान का फरोख़्त न होना या आमद बरामद बन्द हो जाना। (निकालना) माल फरोख़्त करना बाहर भेजना।
मानी (स्त्री)– गेहूँ की नाप का पैमाना जो 80 तोले के सेर से 5 मन और 96 तोल के सेर से 4 मन वज़न का होता है। 4 मानी नाप का एक मन्नासी कहलाता है जो 20 मन वज़न के बराबर होता है।
मुकीम (पु0)– मुहकम का गलत तल्लफुज़ तिजारती माल ख़सूसन कपड़े के अच्छे बुरे की जाँच और उसकी किस्म मुर्करर करने वाला परखिया।
मामलतदारी (स्त्री)– व्यापारियों का बहमी तिजारती लेन देन या कारोबार करना।
मन्नासी (स्त्री)– देखो मानी
मन्दा (पु0)– तिजारती माल की तलब में कमी।
उदाहरण– बरसात की वज़ह से कारोबार मन्दा है।
मण्डी (स्त्री)– थोक फ़रोशो का बाज़ार जिसके लिए कोई खास मुक़ाम या जगह किसी ख़ास सबब से मुर्करर हो।
उदाहरण– देहली हिन्दुस्तान में यूनानी दवाइयों की मण्डी है। (भरना, लगना, जमना) मण्डी में कारोबार शुरू और जारी रहना (उठना, उखड़ना, ख़ाली होना) मण्डी में तिजारती कारोबार ख़त्म हो जाना।
मुनीम (पु0)– अरबी लफ्ज़ मुनीब (बमायनी) फिरने वाला काा गलत तल्लफुजत्र साहूकारों और व्यापारियों की इस्तलाह में दलाल और दुकान की मुअतितया मुन्श्र् को कहते है जो दुकान का हिसाब किताब और दीगर लिखने प्ढ़ने का काम करें। और अमीन भी हो यानि दुकान की नग़दी भी रखता हो।
मोदी (पु0)– ताज़िर गल्ला, व्यापारी
मोल (पु0) तिजारती माल की कीमत फरोख़्त जो मुर्करर हो चुकी हो। नर्ख़ भाव देखो भाव (करना) क़ीमत चुकाना, भाव या नर्ख़ मालूम करना।
मोल तोल (पु0)– तिजारती माल की क़ीमत और वज़न जो बाहमी मामले से करार पा जाये। भाव ताव।
महँगाई (स्त्री)– देखो ग्रानी

मेल का माल (पु0)– एक किस्म की तिजारती माल की दूसरे किस्म के तिजारती माल से मुनासबत्त जिन्सी एक जिन्सी माल जो एक दूसरे के साथ जोड़ रखे (मिलाना, लगाना) एक जिन्सी माल का आपस में एक दूसरे के साथ इस तरह जोड़ लगाने के गाहक हस्बे ज़रूरत और पसन्द खरीद सके।
नादेहिन्द (पु0)– तिजारती माल की क़ीमत देने में ताख़ीर करने या इन्कारी होने वाला दिवालिया।
नामी दुकानदार (पु0)– मशहूर दुकानदार जो तिजारती मामले की खूबी और उम्दा माल की वज़ह से नाम पा गया है।
निबिल (पु0)– ऊनी किस्म का घटिया माल।
नख़्खाशी (पु0)– बार बरदानी के जानवरो के फरोख़्त की मण्डी।
कहावत– घर घोड़ा नख़्खाशी मोल।
निरख़ (पु0)– देखो भाव और मोल।
निरख़नामा (पु0)– देखो बेजक
निर्धन (पु0)– दिवालिया व्यापारी होना।
नसिया (पु0)– माल कर्ज़ बेचना कर्ज़ व्यापार करना।
निकासी (स्त्री)– तिजारती माल की बिक्री बरामद।
उदाहरण– आजकल गल्ले की निकासी बहुत हो रही है। देखो बरामद
नीलाम (पु0)– हर राज, मजमूए आम में ज़्यादा से ज़्यादा क़ीमत देने वाले को माल खरीद फरोख़्त करने का तरीका (करना)
वाजबी क़ीमत (स्त्री)– माल की ऐसी क़ीमत जिसमे कमी और बेशी की गुन्जाइश हो।
हाथो हाथ बिकना (क्रिया)– किसी माल के बहुत से खरीदार होना और इसकी बिला ताख़ीर खरीदारी होना।
हाट (पु0)– आरज़ी और वक़्ती बाज़ार जो कस्बात में रोज़मरा की जरूरी अशिया के ॅरोख़्त के लिए थोड़ी देर के लिए मुर्कररा वक़्त और मुर्क़ररा मुक़ाम पर लगे।
कहावत– निखट्टू गए हाट, माँगे तराजू लाए बाट।
हटिया (पु0)– हाट (बाज़ार) बाज़ार में व्यापारी का माल तोलने वाला तोल्लिया।
हरराज (स्त्री)– देखो नीलसम
हड़ताल (स्त्री)– किसी हादसे या गैर मामूली वाक्या पेश आने पर तिजारती कारोबार बन्द करने का तरीका (करना होना)
हकेरी/हाकरी (स्त्री)– मण्डी में गल्ला लाने वाली बैलगाड़ी जो इस काम के लिए मख़सूस है।
दलालों की इस्तलाह (स्त्री)– देखो ऐरा–फेरी

दूसरी फसल– खिदमती करकमीन
पेशा–दाईगिरी
ऊन/आनून (स्त्री)– बुर्का ख़ोल झिली (जेली) बच्चादानी पोता या पुचारा लेप जो किसी चीज़ पर किसी पतली चीज़ का किया हुआ हो। दाईयो की इस्तलाह में झिल्ली के उस ग़िलाफ को कहते है। जिसके अन्दर रहकर बच्चा माँ के पेट में परवरिश पाता है जो विलादत के वक़्त हट जाता है।
आवन नाल/ऑवन नाल (स्त्री)– आवन से मुतालिफ झिल्ली की नली जो माँ के पेट में बच्चो को आवन से मिलाए रखती है और इन्सान की नाफ उसके जोड़ का मुक़ाम होता है (काटना) बच्चे के पैदा होने के बाद आवन नाल को आवन से काट देना।

आठवाँ निसा बच्चा (पु0)– वो बच्चा जो मुर्कररा वक़्त से क़ब्ल हम्ल के आठवें महीने में पैदा हो जाए। ऑठवे महीने में पैदा हुआ बच्चा जिन्दा नहीं रहता।
अछवानी/अजवानी (स्त्री)– जचग़ीय के बाद ज़च्चा को पीलाने का अन्नाब और मर्वाज़ भुन्नके का हरीरा जो अजवाईन के हरीरे का बदल समझा जाता है और मुराद अजवाइन का हरीर होता है ओर यही इसकी वज़ह तसमिया है।
आज़ान देना (क्रिया)– मुसलमानों की रस्म यानि बच्चे को पैदा होने के बाद ही उसके कान पर मुँह लगाकर मामूली आवाज से आजान के अल्फाज़ प्ढ़ना।
हिन्दुओं में इस मौके पर ताली बजाने की रस्म अदा की जाती है। इससे मुराद बच्चे की कुत्तव समाअत को मोआसर करना होता है।
इसक़ात होना– देखो हम्ल गिरना और पेट गिरना।
अकड़वड़ा (पु0)– बच्चा पैदा होने के बाद जच्चा का जेरे नाफ़ बदन धोने के लिए बाज़ ख़ास झडी बुटी का तैयार किया जोशान्दा जच्की के बाद तीन चार रोज तक इस्तेमाल किया जाता है।
उकडू बिठाना (क्रिया)– बच्चे की पैदाइश में ग़ैर मामूली ताक़ीर या हालात की सूरत में जच्चा को हालात के सुधरने तक घुटने खड़े करके बैठाना जो बदली हुई हालत का इलाज समझा जाता है।
इकोन्च (स्त्री)– वो औरत जो एक ही बच्चा जनकर बॉजा हो जाए यानि एक बच्चा होने के बाद फिर उसके बच्चा न हो।
उकूनी (स्त्री)– वो औरत जिसको हमल ठहरने के बाद ग़ैर मामूली दौरे से उक्काईयाँऔर कै आती हो और दो तीन माह तक गिज़ा न पचती हो।
अलवान्ती/अलवान्टी (स्त्री)– वो जच्चा जिसकी ज़जकी का माद्दा ख़ारिज हो रहा हो। दाईयों की इस्तलाह में चिल्ले यानि चालीस दिन के अन्दर ही जच्चा को कहते है और इस मुद्द को उसकी नापाकी का ज़माना समझा जाता है।
उम्मीद से होना (क्रिया)– हमल ठहरने की अमालत का ज़ाहिर होना जो हामला होने का यक़ीन दिलाये। मुराद पेट से होना।
अन्न प्रासन (स्त्री)– देखो खीर चटाई
अनागिना महीना (पु0)– दाइयों की इस्तलाह में हमल के आठवें महीने को कहते है। क्यूँके आठवाँ महीना औरत के लिए बहुत नाजुक होता है, अगर इस महीने बच्चा पैदा हो जाये तो वो जिन्दा नही रहता। बराख़िलाफ़ इसके साँतवे महीने पेदा हुआ बच्चा जिनदा रहता हैइस लिए औरते ऑठवे महीने को बच्चे की पैदाइश के लिए मनहूस समझकर उसका नाम लेना बुरा समझती और इशारतन अनगिनत महीना कहती है।
अन्ना (स्त्री)– धाऐ वो औरत जो दूसरी औरत के बच्चे को अपने बच्चे के साथ दूध पिलाने की खिदमत अन्जाम दे या उस चि़ादमत के लिए तक़्क़रूर की जायें।
ऊपर तले के बच्चे (पु0)– यके बाद दीगरे या आगे पीछे पैदा हुए वे दो बच्चे यानि जिनकी उम्रों में सिर्फ एक हमल की मुद्द का फर्क हो।
ऊपरी दूध (पु0)– माँ के दूध के अलावा ग़ैर दूध जो बच्चे के परवरिश के लिए दूसरे जरिए से हासिल किया गया हो मुराद गाय या भैंस का दूध जो माँ के दूध के बदले बच्चे को पिलाया जाए।
ओत (पु0)– वो शख़्स जिसके औलाद न हुई हो या न होती हो और ऐसे शख़्स को भी कहते है जिसकी औलाद न रही हो जो उसकी वारिस बनती हो।

ऐठन (स्त्री)– दर्दज़ा दर्द का मरोड़ जो बच्चा पैदा होनं वक़्त औरत को रहता और जिसकी वज़ह हाथ पैर के पठठो में खिचाव पैदा होता है। (होना)
अईयाम आना (क्रिया)– दाईयों की इस्तलाह मुराद जवान और बगैर हमल के औरत का महीने में चन्द रोज जिनकी इन्तिहाई मुद्द दस दिन रहती है फिरती मालूम शुरू होना हैज़ आना या उस मुद्द में होना।
आईयाम से होना (क्रिया)– देखो आईयाम आना।
बान्ज (स्त्री)– वो औरत जिसको हमल न रहे या जिसके रहम में हमल करार पाने की फितरी सलाहियत न हो।
बट (स्त्री)– दूध पीते बच्चे के हाथ और पैरो के गट्टो पर मोटेपन की अलामत या गोश्त का उभरापन जो जोड़ों पर नुमाया और बल खाता मालूम हो। (पड़ना)
बिट्नी (स्त्री)– औरत की पसता का मुँह जिसमें से दूध निकलता है।
बच्चा पर्चना (क्रिया)– बच्चे का ढ़ाई अन्ना या खिलाने या रखने वाले से हिल जाना लगावट करना।
बच्चा फिरना (क्रिया)– बच्चे का माँ की पेट में हरकत करना। ये हरकत हमल के चौथे महीने से शुरू हो जाती है।
बच्चादानी (स्त्री)– रहम या रहम के अन्दर की वो थैली जिसमें नथफ़ॉ क़रार पाता और परवरिश होता है देखो बुर्क़ा और ऑवन।
बच्चा हटना (क्रिया)– दाईयों की इस्तलाह मुराद शेरख़्वार बच्चे का मर जाना।
बरसबेआदर (स्त्री)– वो औरत जिसके साल के साल बच्चा पेदा हो यानि तीन महीने दूध जामिन रहे। और दूसरा हमल करार पा जाये।
बर्सगाँठ (स्त्री)– सालगिरह बच्चे की उम्र की याददाश्त का कदीम रिवाज जो हर साल बच्चे की पैदाइश के दिन एक मुक़र्ररा और महफ़ुज़ डोरे में गिरह लगा देने को कहते है। इस डोरे की हर गिरह एक पूरे साल के शुमारे के लिए होती है ओर उनकी गिनती से उम्र के साल शुमार किये जाते है (डालना, पड़ना)।
बुर्क़ा (पु0)– देखो ऑवल
बिलकना (क्रिया)– सख़्त बेचैनी इज़तिराब की हालत में होना रोना या आवाज़ निकालना।
बेयत (स्त्री)– झोल एक हमल से दूसरे हमल के दरमियान का वक़्फ़ा यानि वो मददत जो एक हमल के बच्चा होने के बाद दूसरा हमल क़रार पाने के दरमियान फ़ितरी तौर पर बगैर हमल रहे।
दो हमलो के दरमियान की मुद्दत जिसमें फितरी तौर पर हमल न ठहरें (उर्दू अदब में लफ्ज़ बितना ओर बतिना अस्तेमाल होते है।)
1. बर्दाश्त करने और पूरा करने के मयानो में ओर दूसरा कपड़ा नापने और बराबर करने के लिए बोला जाता है।
उदाहरण– दस बरस मुसीबत बीती कुछ हासिल नही हुआ।
उदाहरण– नेक साअत देखकर शादी के कपड़े बीते जाते हैं। मज़कूर अलसदर अल्फाज में से कोई लफ्ज़ इस इस्तलाह का माखिज़ मालूम होता है।
बैन्तर (पु0)– वो बच्चा जो ख़िलाफ़े मामूल वक्फ़े के बाद पैदा हो या चार बच्चो के बाद का बच्चा पाँचवॉ झोल।
पालना (पु0)– देखो पिनगारों

पाव भारी होना/पैर भारी होना (क्रिया)– दाईयों की इस्तलाह मुराद ओरत का हमल से होना जो उसके वज़न की ज़्यादती दूर चलने में कदमों के भारी होने का सुबब होता है।
पाँव फेरना/पैर फ़ेरना (क्रिया)– दाइयों की इस्तलाह मुराद ज़च्की ख़ाने से बाहर आना चलना फिरना शुरू करना। रिवाजन ज़च्चा का 40 रोज के बाद अपने मायके या किसी अजीज करीब के यहाँ तबदील मुक़ाम के लिए या किसी इबादतख़ाने में सिजदा शुक्र अदा करने जाना।
2. हमल के आखिरी दिनों में माँ बाप के घर मुलाक़ात को जाना।
पाइल बच्चा (पु0)– वो बच्चा जिसकी पैदाइश पैरों की तरफ से हो यानि पैदा होने पहले पैर बाहर आये।
पसली लगाना (क्रिया)– ज़माना हमल में पेट के बच्चे पर पसलियों से टक्कर खाना या हमल का माँ की पसलियों तक पहुँच जाना।
पंजीरी (स्त्री)– जच्चा को खिलाने की एक किस्म की नक़वी रिज़ा जो सदा कुन्द घ्र और मेवा मिलाकर तैयार की जाती है इस गाज़ा से दूध ज्यादा होता है।
पंगूरा (पु0)– शेरख़्वाह बच्चे के सुलाने का झूला जो एक छोटे से हौदे की शक्ल होता और झूले की तरह लटका दिया जाता है।
पोतडा (पु0)– गन्टेतारा नौज़ाएदा बच्चे की जंगियाँ या जाँग पर बाँधने का कपड़ा तफसील के लिए देखो जंगियाँ।
पोतड़ो का अमीर (पु0)– वो बच्चा जो खानदानी और पैदाइश्र अमीर हो।
पूरे दिन होना (क्रिया)– हमल की मुद्दत ख़त्म पर आना।
उदाहरण– चाँद की पहली तारीख इसको पूरे दिन लग गये।
पूरे दिनों का हमल (पु0)– वो हमल जो मुक़मल हो गया हो।
पूरे दिन होना (क्रिया)– हमल की मुद्दत पूरी हो जाना।
उदाहरण– सरकार दुल्हन पूरे दिनों की है इस लिए दाई को हर वक़्त मौजूद रहने का हुक़्म हो।
पैन्नोठन/पिनोठन (स्त्री)– पैनोन वो औरत जिसको पहली मरतवा का जना हुआ बच्चा।
पैनोनटी का हमल (पु0)– औरत का पहला हमल या पहली मरतवा का करार पाया हुआ हमल।
पहलोन/पैलोन (स्त्री)– देखो पैन्नोठन
प्याऊँ (पु0)– वो शीरा जिसमें जच्चा के खाने के लिए कोई चीज परवर्द की जाए या तर रख्र जाए। यहाँ तक के शीरा इसमें जज़्ब हो जाऐ। मुरब्बा साजों की इस्तलाह में भी ऐसे शीरे को जिसमें कोई हल परवर्द किया जाए। प्याऊँ कहते है।
पेट (पु0)– दाईयों की इस्तलाह मुराद हमल (ठहरना, रहना) हमल करार पाना पेट में बच्चा पलना, या नथवा कायम होना।
उदाहरण– शादी के पहले ही महीने बीबी को हमल ठहर गया या पेट रह गया। (सोतना) बच्चा पेदा होने के बाद हमल की आलाइश ख़ारिज होने को जच्चा को पेट अहिस्ता अहिस्ता मिलना। (गड़ना, गिराना, निकलना, निकालना) किसी बेएहतियाती या नुक़्स की वज़ह से हमल का क़ब्ल अज़वत ख़ारिज होना या ख़ारिज करना।
उदाहरण– बम की आवाज़ से औरतों के पेट गिर जाते है।
उदाहरण– मग़रिबी मुमालिक में पेट गिराने का रिवाज़ आम हो रहा है।
उदाहरण– पेट गिरने की बड़ी तकलीफ़ होती है। (होना) हमल से होना बच्चा पेट में होना।
उदाहरण– मुलाज़मा पेट से हैइसलिए उससे काम नहीं होता।

पेट पोछना (पु0)– औरत का आखिरी बच्चा। पिछला बच्चा जिसके बाद हमल न रहा हो। (पोछना बमाइनी पोछने वाला)
पेट ठण्डा रहना (मुहावरा)– औरतों का मुहावरा मुराद औलाद की तरफ से सुख पाना। औलाद का चैन और आराम से रहना।
उदाहरण– ख़ुदा तेरा पेट ठण्डा रखें।
पेट में आग लगाना (मुहावरा)– औलाद से दुःख पहुँचना, दिल जलना, नालायक़ औलाद पैदा होना।
पेट में पड़ना (मुहावरा)– देखो पेट पड़ना।
उदाहरण– मैं इस घड़ी को याद करके रोती हूँ जिस घड़ी यह लड़का पेट में पड़ा था।
पैट का बच्चा (पु0)– एक बच्चे के बाद दूसरा बच्चा।
उदाहरण– पैलौनटा के लड़के की पीठ का बच्चा जाता रहा यानि मर गया।
पैर भारी होना (क्रिया)– देखो पॉव भारी होना।
पैर फेरना (क्रिया)– देखो पॉव फेरना।
पैर छुटना (क्रिया)– औरत को ख़िलाफ–ए–मालूम हैज़ जारी होना और जारी रहना।
पेणू (पु0)– औरत के पेट में बच्चे दानी की जगह नाफ से नीचे का हिस्सा पेट।
तारे दिखाना (मुहावरा)– बच्चा पैदा होने के 6 रोज बाद जच्चा को रात के वक़्त ज़च्चाख़ान से बाहर खुली जगह लाना। जहाँ आसमान दिखाई दे। जो बतौर शगुन किया जाता है। मक़सद ज़च्चा को खड़ा करना और खुली जगह लाना होता है।
तातवाँ (पु0)– बच्चे को पहनाने का पहला जोड़ा कुर्ता, टोपी जो रिवाज़न ननिहाल की तरफ से दिया जाता है।
तातवाँ (पु0)– पैदा हुए वे बच्चे की ज़बान के नीचे लगी हुइ एक बारीक झिल्ली जिसको दाई निकाल देती है ताकि ज़बान हरकत करने लगे। (तोड़ना)
तैतरा (पु0)– तीन लड़कियों के बाद पैदा होने वाला लड़का।
तैतरी/तैंतरी (स्त्री)– तीन लड़के के बाद पेदा होने वाली लड़की। हिन्दुओं में ऐसी लड़की को नमुबारकख़्याल किया जाता है।
तेलड़ (स्त्री)– देखो तैतरी।
थाली बजाना (क्रिया)– देखो आज़ान देना।
फिकरा–
थालिया रखना (क्रिया)– दाँत निकालने के जमाने में बच्चे का मसूड़े चबाना।
टोटा (पु0)– ऑवों नाल का हिस्सा बच्चे की नॉफ से जुड़ा होता है। जो पैदाइश के कुछ दिनों बाद सुखकर झड़ जाता है। मादद
ठीकरा उठाना (क्रिया)– ऑवन नाल और दिगर ज़च्की की अलाइश का वर्तन जो ले जाना और किसी महफ़ूज़ जगह गाड़ देना। ये खिदमत घर की महतरानी (सफाई करने वाली) अन्जाम देती है। और इसके एवज उसको हस्बे मक़दूर नकदी दी जाती है जो उस वर्तन में डाल दी जाती है।
जाल पड़ना (क्रिया)– 6 सात रोज के बच्चे के जिस्म पर खून फैलाने और बढ़ने की अलामत का जाहिर होना।
जना (पु0)– शख़्से वाहिद जननी मुअनस (स्त्री) के लिए बोला जाता है। इस काम पर तीन चार जने लगे हुए हैं। और किसी तरह पूरा नही होता।
जनाना (क्रिया)– बच्चे के पैदा होने के बक़्त देखभाल और ख़िदमत अंजाम देना।

जनाई (स्त्री)– बच्चे के पैदाइश के वक़्त ख़िदमत का दाई का मुआवजा।
जन्मपत्री (स्त्री)– बच्चे के पैदाइश के वक़्त नाम और दीगर हालात लिखा हुआ काग़ज़ जो बतौर याददाश्त लिखा जाए। हिन्दुओं में इस काग़ज़ को बड़ी एहमियत दी जाती है।
जनशोवर (पु0)– नौ ज़दा बच्चा।
जन्मदिन (पु0)– पैदाइश का दिन यौमे इलादत।
जन्मरोगी (पु0)– बच्चा जो माँ के पेट से मरीज पैदा हो या उसकी सेहत में नुक़्स हो।
जन्मघुट्टी (स्त्री)– चन्द दवाईयों का जोशान्दा जो बच्चे को सबसे पहले बजौर गिज़ा दिया जाता है।
जन्मगो (पु0)– बच्चो के पेट का फिज़ला जो पैदा होते ही ख़ारिज हो यानि वो ख़िजला अयमि हमल में उसके पेट में जमा होता रहे।
जन्ना (क्रिया)– बच्चा पैदा होना बच्चा देने।
उदाहरण– जन्ना मरना बराबर होता है।
जुड़वाँ बच्चा/जोडुवाँ बच्चा (पु0)– हमल के दो बच्चे जो साथ में पैदा होते है।
जैली/जैरी (स्त्री)– देखो झैली।
झैली (स्त्री)– जैली (जैरी) ऑवन बुर्का को थैली जिसमें बच्चा माँ की पेट में रहता है देखो ऑवन (छोकड़ना) विलादत से थोड़ी देर पहले हमल का सिमटकर पेट के निचले हिस्से में आ जाना (आना) ऑवन का पेट से खारिज होना (देना) झोला देने का गलत तल्लफुज़ मुराद बच्चा पेदा होते वक़्त हामला के पेट को ऊपर से पकड़ कर अहिस्ता अहिस्ता हरकत देना ताकि बच्चा नीचे उतरे।
चट्टे बट्टे (पु0)– छोटे बच्चे के चीजों के टकराने की आवाज सुनने का आदी बनाने को लकड़ी के बने हुए छोटे बड़े गोले जिसको लड़ाकर आवाज़ की जाती है।
चढ़्ढ़ा (पु0)– रान और पेणू के दरमियान की जगह देखो पेणू।
चिल्ला (पु0)– चालीस दिन की मुद्दत दाइयों की इस्तलाह में बच्चा पेदा होने के बाद के पूरे चालीस रोज़। (नहलाना) बच्चा पैदा होने के 40 (चालीस) रोज़ जच्चा को गुस्ले सहत देना।
चिल्ले का बैत (पु0)– वो हमल जो औरत को बच्चा जनने के चालीस रोज़ बाद रह जाए।
चिल्ले का नहान (पु0)– ज़च्चा का बच्चा जनने के चालीस रोज बाद का गुस्ल।
चीरा (पु0)– देखो रहम
चीरज (पु0)– माँ के रहम में परवरिश पाकर पैदा होने वाली मख़लूक।
छत झुकना (पु0)– दाइयों की इस्तलाह मुराद रहम का नीचे को आ जाना। जो बच्चा पैदा होने का वक़्त करीब आने की अलामत समझी जाती है।
छठ्ठी (स्त्री)– बच्चा पैदा होने की बाद की एक हफ़्ते या छः रोज़ की मुद्दत जिसके बाद ज़च्चा चलने फिरने के काबिल हो जाती है। (होना) बच्चा पेदा होने के छः रोज़ बाद की रस्म अदा होना (देना) छठी की रस्म के मौके पर ज़च्चा बच्चे को तोहफ़े देना जो अमूमन जच्चा के माँ बाप की वगैरह की तरफ से पेश किये जाते है। (नहाना) बच्चा पैदा होने के छः रोज़ बाद का गुस्ल।
छोटक/छोचक (स्त्री)– ज़चनी खाने की नापाकी से अलैदगी या बचाव जो कम से कम चालीस रोज तक किया जाता है। हिन्दु मज़हब में इतनी मुद्दत तक जच्चा के साथ मेल जोल करने को गन्दगी में शरीक़ होना समझा जाता है।
छोछक (स्त्री)– देखो छोटक वो रस्म जो जज़की के 40 (चालीस) रोज़ बाद की जाये देखो पॉव फेरना।
हमल (पु0)– देखो पेट (रहना, भरना, होना, गिरना, गिराना)

दाँतो पर होना (क्रिया)– बच्चे के दाँत निकालने का ज़माना आना।
दाई (स्त्री)– बच्चे जनाने का पेशा करने वाली औरत (दाइ से पेट छुपाना मुराद वाक़िफ़े हाल से राज़ रखना)
दत्तला बच्चा (पु0)– वो बच्चा जिसके मुँह में पैदाइश- दाँत हो यानि माँ के पेट मे दाँत निकल आये हो।
देर्द ज़ह (पु0)– बच्चा पैदा होने का दर्द देखो ऐठन।
दर्द लगना (क्रिया)– बच्चा पैदा होने का दर्द शुरू होना।
दिन टलना (क्रिया)– दिन चढ़ना औरत के माहवारी मामूल में रूकावट होना जो पेट रहने की अलामत समझी जाती है।
दिन चढ़ना (क्रिया)– देखो दिन टलना।
दोजिया (स्त्री)– दाईयों की इस्तलाह मुराद हामला औरत यानि एक उसकी अपनी ज़ात और दूसरा पेट का बच्चा।
दूध उतरना (क्रिया)– दूध आना ज़च्चा की छातियों में दूध पैदा होना, दूध की आमद होना।
दूध भाई (पु0)– एक ही औरत का दूध पीने वाले बच्चे जो मुख़तलिफ़ माँ से हो।
दूध चढ़ना (क्रिया)– देखो दूध उतरना।
किसी वजह से छातियों में दूध न आना रूक जाना या कम हो जाना सूख जाना या दूध का मोझ खाना।
दूध छुड़ाना (क्रिया)– एक मुर्कररा मुद्दत पर माँ का बच्चे को दूध पिलाना बन्द कर देना।
दूध सूखना (क्रिया)– दूध पिलाने की मुद्दत ख़त्म होने पर छातियों में दूध आना बन्द हो जाना देखो दूध चढ़ना।
दूध ज़ामिन होना (क्रिया)– दाईयों की इस्तलाह मुराद दूध पिलाने के जमाने में औरत का हमल न रहना।
ये मुद्दत औरत के मिज़ाज और तिब्बी कैफ़ियत के लेहाज़ से कम ओर बेश होती है।
दूध मुडा खाना (क्रिया)– देखो दूध चढ़ना।
दूधो नहाना (क्रिया)– दुआइया कलमा मुराद दूध की ज़्यादती होना जिससे बच्चा खूब अच्छी तरह सैर होता रहे।
दहावड़ (पु0)– अन्ना (दूध पिलाने वाली का का मर्द) अन्ना को हिन्दी बोली में धाए कहते है।
धाए (स्त्री)– अन्ना, दाया,ददा, दूध पिलाने वाली औरत जो इस ख़िदमत के लिए मुर्कररा की गई हो।
धरन (पु0)– देखो रहम बच्चादानी।
रास (पु0/स्त्री)– बच्चे गोद लेने की रस्म (बिठाना, देना, लेना)
रहम (पु0)– बच्चेदानी, चीरा, धरल, औरत के जिस्म में हमल क़रार पाने का अजु।
रसुलिया बच्चा (पु0)– वो बच्चा जिसके पिशाब करने के अजु पैदाइश- खाल का घूघँट (पर्दा न हो)
रवे लगाना (क्रिया)– हमल ठहरने के इब्तेदाई ज़माने में हामला को मतली और क़य होना।
ज़च्चा (स्त्री)– वो औरत जिपर बच्चे देने का असर बाक़ी हो और जिसकी मुद्दत चालीस रोज़ होती है।
ज़जकी (स्त्री)– बच्चा जनने की हालत (होना)
ज़जकी खाना (स्त्री)– सोड़ वो इमारत जो बच्चे की विलाप्त के लिए मख़सूस हो।

साद (स्त्री)– हामला औरत की गोद भरने की रस्म जो हमल के साँतवे महीने तक मेवे और तरकारी से भरी जाती है (करना)
सत्त पोता/सत्त पोती (स्त्री/पु0)– सात बच्चो की माँ या बाप।
सत्तवान्सा (पु0)– सत्तमानस हमल के साँतवे महीने पैदा हुआ बच्चा।
सटोरा (पु0)– ज़च्चा के खिलाने की तैयार की हुई मक़कवी गिज़ा। तफसील के लिए देखो जिल्द सोम।
सूरज बन्सी (पु0)– वो बच्चा जिसका मुँह, सर, और आँखो के बाल पैदाइशी लाल हो। फारसी में ऐसे बच्चे को ज़ाल कहते है।
सुरज मूखी (पु0)– वो बच्चा जिसका मुँह सर और आँखो के बाल पैदाइशी सफेद हो और सुरज की रोशनी में आँख पूरी न खोल सके।
सोड़/सोंड़ह (स्त्री)– 1. संस्कृत शुदा बमाने सोना या आराम करना मुराद ज़जकी खाना।
2. बैत एक हमल से दूसरे हमल के दामियान का वक़फ़ा बाज़ औरत की ये मुद्दत कम होती है और बाज़ ज़्यादा इस वक़ेफ की ज्त्रयादती 12 (बारह) बरस तक होती हैं। कम मुद्दत के वक़फ़े को इस्तलाहन नीची सोड़ और ज़्यादा मुद्दत के वक़फे को उँची सोड़ कहते है।
सोअर बयाना (स्त्री)– वो औरत जिसकी हर साल बच्चा हो यानि चिल्ले में हमल रह जाए।
योरती बैत (पु0)– वो औरत जिसको बारह बरस के बाद हमल रह जाए वो हमल योरनी बैत कहलाता है।
काड़ा (पु0)– बाज़ अवाओं का जोशांदा जो कच्चा बच्चा होने की हालत में जच्चा को पिलाया जाता है। ताकि हमल के अजज़ा में ज़हरीला माद्दा न पैदा हो।
काला दाना (पु0)– एक किस्म के पौधे के बीज जो जज़की ख़ाने में जलाये जाते है उनका धुआँ हवा को साफ करता है।
कपड़ो से होना (मुहावरा)– औरत का माहवारी नापाकी (ईज़) की हालत में होना।
कच्चा बच्चा (पु0)– हमल की पूरी मुद्दत गुज़रने से क़ब्ल पैदा हुआ बच्चा।
कच्चा हमल (पु0)– थोड़े दिन का हमल वो हमल जिसकी मुद्दत पूरी न हुई हो।
कच्चे दिन (पु0)– हमल ठहरने की इबतिदाई मुद्दत जिसका शुमार तीन चिल्लो या चार माह में होता है।
किवाड़ी (स्त्री)– सीने का बग़ली रूख यानि पसलियों की हद जो हमल की इन्तहाई जगह होती है।
कोपा (पु0)– नाभ कवल, नाफ़ का निशाना।
कोण (पु0)– देखो पेडु, मादा।
कोड़ी/कोली (स्त्री)– कोले और कूल्हे और पसली के दरमियान का हिस्सा जिस्म।
कोक/कोख (स्त्री)– संस्कृत कोकश बमायनी पसलियों से नीचे का हिस्सा जहाँ तक हमल का फैलाव होता है।
कोंथना (क्रिया)– दाइयों की इस्तलाह मुराद दर्दे जह के वक़्त हामला औरत का सास रोक कर नीचे की तरफ दबाव डालना ताकि बच्चा नीचे उतरे।
खीर चटाई (स्त्री)– अन्न परासना शेर ख़्वार बच्चे को पहली मरतवा ग़िज़ा खिलाने की रस्म जो अमूमन खीर से शुरू की जाती है। (करना)
गैलन का दर्द/गाभ का दर्द (पु0)– बच्चा पेदा होने के बाद का दर्द जो रहम के अन्दर रूके हुए खून के ख़ारिज होने को दर्दे ज़ह कह तरह होता है।

गटरेटर (पु0)– निहाचला, पोथड़ा, भलोरिया।
ग़ला करना (क्रिया)– बच्चे के पैदा होने के बाद दाई का उसके हलक को उगली से साफ करना। गले के वदूद दवाना।
गड़ोना (पु0)– बच्चे को पैरो चलना सिखाने की गाड़ी। तफसील के लिए देखो जिल्दपंजम।
गन्टरेत्रा (पु0)– देखो पोतड़ा।
गोबर की भायइ (स्त्री)– हिन्दुओं के अक़ीदे में ज़च्चा ख़ाने की एक देवी का नाम जिसकी शक्ल खुली हुई कैची की मुशाबा बनायी जाती है।
गोद आना (क्रिया)– और के जवाँ होने की अलामत का जाहिर होना। छातियाँ उभरना
गोद भरना (क्रिया)– हमल के सॉतवें महीने में हामला औरत की ओढनी की झोली को ताज़ा फल और मेवे से भरने की रस्म अदा करना जो उसके साहिबे औलाद होने का शगुन सजाता है।
गोद त्राली होना (क्रिया)– दाईयों की इस्तलाह मुराद औरत का शेर ख़्वार बच्चा मर जाना।
गोद लेना (क्रिया)– बेऔलादी औरत का किसी दूसरे के बच्चे को अपना बच्चा अख़्तियार करना।
गहना बच्चा/गहनाया बच्चा (पु0)– वो बच्चा जिसके किसी अज़ु में खिलाफे मामूल पैदाइश्ा कमी वाक़े हुइ हो यानि सुकड़ गया हो, और में ये बात मशहूर है कि सूरज या चाँद गहन के वक़्त हामला औरत बाहर निकले तो गहन के असर से बच्चे के किसी अज़ु में नुक्स पैदा हो जाता है जो गयना कहलाता है।
घुट्टी (स्त्री)– देखो जन्म घुट्टी बच्चे की पेट साफ करने की दवाओं का जुशाँदा (देना)।
लाम का बैत (पु0)– वो हमल जो दूध ज़ामिन होना यानि बच्चे के दूध पिलाने के ज़माने में जबके हैज़ आना बन्द रहता है ठहर जाए।
लुपड़ी (स्त्री)– बच्चे के जिस्म में मालिश करने को मैदे की बनायी हुई लोई (पेड़) (करना) मैदे के पेड़े (लोई) और तेल से बच्चे के जिस्म की मालिश करना।
लोका (पु0)– संस्कृत उल्क़ा बामायनी शहाब साकिब जिससे हिन्दुओं में ज़च्चा के लिए शगुन लिया जाता है। लेनी करना (क्रिया)– बच्चे को अन्न यानि दूध पिलाने वाली औरत से वापस लेने की रस्म करना। जो दूध छुड़ाने के बाद की जाती है। इस मौके पर दूध पिलाने वाली का हक़ और नेग दिया जाता है।
महावार बन्द होना/रूकना (क्रिया)– औरत का माहवारी मामूल (हैज़ आना) मौकूफ हो जाना।
माहवारी कपड़े (पु0)– हैज़ के कपड़े।
मुत्तलेड़ी (स्त्री)– लेसदार माद्दे की थैली जो आवन के साथ होती है। और बच्चे के पैदाइश के वक़्त फट जाती है। जिसका माद्दा बच्चे के पैदा होने में आसानी पैदा करता है।
मण्री (स्त्री)– हिचकी जो शेर ख़्वार बच्चे को पेट भरे पर आती है। उसको इख़लास से मण्री कहते है क्यूँके हिचकी की मफ़ूम में बुराइ है (आना)
मरियम का पन्जा (पु0)– एक जंगली झड़ी जिसको बच्चा पेदा होने के वक़्त पानी में भिगोने से ख्याल किया जाता है के उसके असर से बच्चा असानी और जल्दी से पैदा हो जाता है।
मुन्डन (स्त्री)– बच्चे के सर के पैदाइशी मुड़वाने की रस्म जो छठी चिल्ले में किसी मुर्कररा दिन की जाती है। बच्चे के पहली मरतवाँ सर के बाल मुड़वाना।
महीना आना (क्रिया)– औरत का माहवारी मामूल से होना हैज़ आना।
महीना चढ़ना (क्रिया)– देखो दिन चढ़ना
महीना लगना (क्रिया)– हमल का पहला महीना गुज़र जाना।

महीने से होना (क्रिया)– औरत का माहवारी नापाकी की हालत में होना।
महीने का बिगाड़ (पु0)– औरत की माहवारी हालत में ख़राबी।
महीने की ज़्यादती (स्त्री)– औरत का माहवारी हालत में मामूल से ज़्यादा दिनों मुफतला रहना हैज़ का मामूल से ज़्यादा आना और इसकी कमी को महीने की कमी कहा जाता है।
महीने के दिन (पु0)– हैज़ आने का ज़माना।
नाप कवल (पु0)– कोपा, नाक का मुँह या उसकी जगह।
नाफ जाना/नाफ टलना (क्रिया)– नाफ की रगो में ख़राबी या बेतरतीबी होना।
नाल (स्त्री)– देखो आवन नाल (काटना)
नाल कटाई (स्त्री)– बच्चे की आवन नाल काटने का मुआवज़ा या नेक जो दाई को दिया जाए।
नपूता (पु0)– बे औलाद शख़्स। नपूती– बे औलाद की औरत।
नला (पु0)– रहम के पहलूओं की खाली जगह (प्लान) रहम के पहलूओं की खाली जगह बिगाड़ हो जाना।
नाम धराई (स्त्री)– बच्चे के नाम रखने की रस्म।
वज़अए हमल (पु0)– बच्चा पैदा होना।
हुडका (पु0)– लत्ज होका का इस्तलाही तल्लफुज़ हौन्ज़ बच्चे को दूध छुड़ाना या अपनी दया से अलैहदा होने का गम (करना)।
हुमकना (क्रिया)– बच्चे का गोद में उचकना, आगे की तरफ लपकना या बढ़ने के लिए हरकत करना।
हसली उठाना (क्रिया)– बच्चे की गले हड्डी में तकलीफ पैदा होना।
हुऑ हुऑ (स्त्री)– पैदा हुए बच्चे के रोने की आवज़।
हौन्स (स्त्री)– नज़रेबद का असर आह का असर, बददुआ का असर (लगना)

पेशा–ए–मुशादगिरी–
आब दार नाखून (पु0)– नाखून जिसमें चमक चिकनापन और सफेदी की झलक हो। औरतों के हुस्न की एक अलामत समझे जाते है।
आरती (स्त्री)– हिन्दुओं में शादी के मौके की एक रस्म का नाम जिसमें एक मुर्क़ररा तदाद घ्र के चरागों की तदाद में रख कर दुल्हे के मुँह के सामने घुमाते और सर से पैर तक चक्कर देते है। इस मौके पर जो गीत गाये जाते है उसको आरती गाना कहते है (होना, करना)
आरती मुस्हफ़ (पु0)– हिन्दुस्तानी मुसलमानों में शादी की मौके की एक रस्म जिसमें निकाह के बाद दुल्हा और दुल्हन के दरमियान कुरानशरीफ़ ओर आईना रखा जाता है। ताकि कुरानशरीफ़ पर नजर डाल कर दुल्हा पहली मरतवॉ आईने में दुल्हन का चेहरा देखे (होना, करना)
दाक्खिन में इस रस्म को जुल्वा कहते है, जो ज़लवे का ग़लत तल्लफुज़ है।
आँचल गाँठ (स्त्री)– दुल्हा और दुल्हन के दामनों या पल्लू के सिरों की गिरह जो शादी हो जाने या जोड़ा बनने यानि रिश्ता होने के ऐलान का इज़हार होता है।
उबटना (पु0)– जिस्म पर मलने का एक किस्म का तैयार किया हुआ खुशबदार मसाला जो आमतौर से शादी के मौके पर दुल्हा दुल्हन के जिस्म पर मलने के लिए तैयार किया जाता है और शादी में चन्द रोज़ पहले उसकी एक रस्म अदा की जाती है।
अछवन (स्त्री)– हिन्दुओं में शादी की मौके की एक रस्म जिसमें मोढ़े पर बिठाकर हाथ पैर धुलवाऐं जाते है और चुल्लू से पानी पिलाया जाता है जो शादी का कौल व इक़रार समझा जाता है।

अड्डा (पु0)– पेशावरों की मुशतरफा इस्तलाह बाज़ारी बोली में आवारा औरतों के ठीकानों को कहते है। जहाँ जमा होकर वो मर्दो से आशानाइयाँ करें।
अंग मिलाई (स्त्री)– हिन्दुओं में शादी के मौके की एक रस्म जिसमें शादी होने की रस्म से क़ब्ल दुल्हा दुल्हन को आईने से सामने खड़ा किया और एक दूसरे को दिखाया जाता है और समधन वगैरह आपस में गले मिलते है। दार्क्खन के मुसलमानों में यह रस्म अदा की जाती है।
ओआदर (स्त्री)– महमानों के रखरखाव उनकी इज़्ज़त व आबरू करने का तरीका (करना, होना)
बात (स्त्री)– मुशात की इस्तलाह मुराद शादी का प्याम जो लड़की वाले के घर दिया जाए (ठहरना) लड़के और लड़की वालों के दरमियान शादी की बात चीत पक्की करना (देना) लड़के वाले के यहाँ शादी की दरख़्वास देना या सवाल करना। पयाम देना (लगाना) शादी का मामला ठहरना, शादी करने ज़िक्र करना (ले जाना) लड़की वाले के घर शादी का पयाम पहुँचाना।
बार द्ववारी (स्त्री)– देखो बर द्ववारी
बान बिठाना (क्रिया)– 1. हिन्दुओं में शादी की आग़ाज़ की रस्म जिसमें दुलहा दुल्हन को चन्द रोज़ कब्ल नज़रेबद से बचाने के कोने में बिठाते है।
2. ये रस्म थोड़ी सी तबदीली के साथ मुसलमानों के घरानों में भी होती है जिसको मायूँ बिठाना और माझाँ बिठाना कहते है। उसी रोज़ दुल्हे और दुल्हन के उबटना लगाया जाता है।
बताना (पु0)– लखनऊ वालों की बाज़ारी इस्तलाह मुराद कबियों और हिज़ड़ो का दलाल और उनकी खिदमत की महफ़िलो को गरमाने वाला साथी।
बिजोग (पु0)– बिगाड़, झगड़ा, नइत्तफ़ाक़ी।
बिदा (स्त्री)– अरबी लफ्ज़ बिदा का गलत तल्लफुज़ रूखसती, दुल्हन के मौके से ससुराल को रवानगी (करना होना)
बरात (स्त्री)– शादी का जुलूस (चढ़ना, जाना) शादी के जुलूस की दुल्हा के घर से दुल्हन की तरफ रवानगी (उठना, निकलना) शादी के जुलूस का अपने मुकाम से बरामद होना। (बनाना) शादी के जुलूस को तरतीब देना (फिरना) शादी के जुलूस को शाह राहों से गुज़ार कर ले जाना।
दाराती (पु0)– शादी के जुलूस के हमराही। जुलूस में शिरकत करने वाले।
बरद्ववारी (स्त्री)– दुल्हा को दुल्हन के दरवाज़े पर रोकने रस्म।
बरकन्या (स्त्री)– शौहर वाली औरत।
बरी (स्त्री)– खुश्क मेवा और मिठाई की किस्म की चीज जो मायूँ (बान) बिठाने के मौके पर दुल्हे की तरफ से दुल्हन के लिए बतौर तोहफ़ा भेजी जाए।
ये तोहफ़ा बिरादरी या मुक़ामी रिवाज के मुताबिक दिया और लिया जाता है (जाना, आना, देना)
बिखेर (पु0)– देखो निछावर।
बन्दल बारी/बनदल वारी (पु0)– बन्धन द्ववारी हिन्दुओं में शादी ब्याह या ख़ास त्योहार के मौक़े पर घर के दरवाजे को ताजा फूल पत्तों की झालर बाधँने का तरीका। जो इस तकरीब की अलामत समझी जाती है। झालर अमूमन आम के पत्ते की बनाते है।
बना/बन्नड़ा (पु0)– दुल्हा
बन्नडी (स्त्री)– दुल्हन
बहनोई (पु0)– बहन का खाँबिन्द
बहु (स्त्री)– बेटे की जोरू (बीवी)

बहुणा (पु0)– वो तोहफा (खाना, मिठाई, वगैरह) जो बहु के मौके से आये। शुमाली हिन्द के मुसलमानों में बिदा और (विदा) के मौके पर लड़की के हम राह जो खाना भेजा जाता है उसको इस्त्तलाहन बहुणा कहते है (देना)

ब्याह (पु0)– शादी ख़ाना आबादी की तक़रीब (रचना, होना)

ब्याहता बीवी (स्त्री)– बच्चे या सरपरसतों की करायी हुई पहली बिवी जो आम रसूम के साथ ब्याह कर लायी गई हो।

बेसवा (स्त्री)– बाज़ारी औरत जो किसी एक मर्द की होकर न रहे, देखो रन्डी।

कहावत– बिसवा, बन्दर, अग्नि, जल, कोती, कटक, कलार, ये दस होत न अपने सूजी सवा सुनार।

बीवी (स्त्री)– बी, बीवी बेग़म शरीफ़ और ब्याही औरत को मुख़ातिब करने का मुहज़जब कलमा मुराद घरवाली, ज़ौजा वग़ैरह।

भान्जा (पु0)– बहन का बेटा।

भतीजा (पु0)– भाई का बेटा।

भडुवाँ (पु0)– देववस, कुर्रम साख़ वो शख़्स जो अपनी औरत के नजायज़ फ़ेल को नज़र अन्दाज़ करें या उससे नजायज़ कमाई हासिल करें। भाड़ा खाने वाला औरत की खर्ची करने वाला।

भैट/भेट (स्त्री)– हिन्दुओं में लड़की वाले की तरफ से लड़के बाप को दिया जाने वाला तोहफा जो बरवक़्त रूख़सत बतौर नज़राना उसको दिया जाता है।

पनदान ख़र्च (पु0)– नफ़क़ा अलावा रोटी कपड़े के ज़ौजा के रोज़मर्रा के मामूली इख़राजात का सर्रफ़ा जो शौहर से मुर्क़रर कराया जाए। इस्तलाहन पानदान ख़र्च के नाम से मौसूम किया जाता है। (देना) और मुर्क़रर करना।

पनदान होना (क्रिया)– वस्ते हिन्द के बाद इलाक़ो की इस्तलाह मुराद निस्बत क़रार पाना। शादी कमी बात ठहरना, मँगनी डपा जाना।

पट्टा फेरना (क्रिया)– हिन्दुओं में शादी के वक़्त की रम जिसमें नशिशतों को बदला जाता है यानि दुल्हन को दुल्हे दायी तरफ से लाकर बायी तरफ बिठाया जाता है।

पिस्ता दहन (सिफ़त)– वो औरत जिसके होठ पतले और बाहम मिले रहते हैं।

कहावत– एक पन्त दो कॉच

पल्ले पड़ना (क्रिया)– दामन से बँधना। हिन्दुओं में औरत को मर्द के दामन से बाधना। मर्द का रिस्ता हो जाने का ऐलान समझा जाता है। और शादी की तक़रीब की रस्मों की असल होती है।

रोज़मर्रा में पल्ले झाड़ना, पल्ले बाधँना।

पन्त (पु0)– तक़रीब और जलसा।

पोता (पु0)– बेटा का बेटा।

पयाम देना (क्रिया)– देखो बात देना।

पी0 दिखाना (क्रिया)– शौहर का सफर का जाना, औरत से बेरूखी करना, अहद शकनी करना बेवफाई करना।

पीली चिठ्ठी (स्त्री)– मँगनी का रक़्का, शादी पत्तर हिन्दुओं में रिवाजन इस किस्म का रूक़्का ज़र्द रंग या हल्दी के रंग के छिटे दिये हुए कागज़ पर लिखा जाता है और यही उसकी वज़ह तसमिया है।

फुफिया सॉस (स्त्री)– देखो सॉस

फेरे (पु0)– हिन्दुओं में दुल्हा दुल्हन का पल्लू बाँधकर शादी की मजलिस में हस्बे दस्तूर फिराने का तरीका जो रिश्ता होने का ऐलान समझा जाता हैं (होना, पड़ना)

तऊ ताया (पु0)– बाप का सबसे बड़ा भाई।
उदाहरण– दुल्हा दुल्हन से ताऊ भाऊ बड़ा है।
तई (स्त्री)– ताऊ की बीवी देखो ताऊ।
तिलक (पु0)– पिश्वाज़– वो लिबाज़ जो हिन्दुओं में दुल्हन को शादी के दो एक रोज़ गुजरने के बाद हनाते है। ये जोड़ा ब्याही औरतों के लिबाज़ के मुताबिक होता है और उसके पहनने से दुल्हन को ब्याही औरतों में शामिल करना मुराद ली जाती है।
तोरना (स्त्री)– तोरल संस्कृत लज्ज़ है जिसकी मायने सजीली महराब या दरवाज़े की खुशनुमा बनाई हुई कमान। हिन्दुओं में इस्तलाहन शादी के मौके पर घर की सजावट को कहते है जो ताजा फूल और पतो की हार से सजाया जाये। उर्दू अदब में लत्ज़ तोहरा या तोरा अनोखे पन के मायनों में बाला जाता है।
तोरन (स्त्री)– अड्डे पर बिठाये हुई मसनुई परन्द।

राजपुतों में लड़की बिहाने की एक बड़ी शर्त ये होती थी कि मर्द पाहयाना फ़न जानता हो। और निशाने बाज होने का सबूत दे। उसकी आज़माइश के लिए मुख़तालिफ़ सूरतें अख्तियार की जाती थी। अब वो एक रस्म बन गयी है। जिसको दुल्हा दुल्हन के घर पर मसुनई परिन्द को तीर तलवार या नेज़ा लगाकर पूरी करता है।

छार्ख्वन में शादी से चन्द रोज़ क़ब्ल तलवार या तेमू में खंजर की नोक घुसाकर हाथ में रखना।

तेल बाल (पु0)– दुल्हन के उबटना और तेल मसलने की रस्म (होना)।
थापा (पु0)– हिन्दुओं में शादी ब्याह की मौके की एक रस्म जिसमें घर की दिवार पर हल्दी के रंग से हाथ के छापे लगाये जाते है जो तक़रीब के होने की अलामत समझी जाती है। न तालीम याफ़ता मुसलमान घरानों में भी इस रस्म का रिवाज है।
टोपी उतरना (क्रिया)– दाक़्र्ख्वन की इस्तलाह मुराद लड़की का सियाना होना अक्सर घर वालों में छोटी लड़कियों को लड़को की तरह टोपी हलनायी जाती है। और जब वो सन–ए–शऊर को पहुँचने लगती है टोपी पहनाना मौकूफ किया जाता है। और इस अमल को रस्मन अदा किया जाता है।
वेना (पु0)– देखो छन
जात मलाई/ज़ात मलाई (स्त्री)– कुनबे बिरादरी या क़बीले में शरीक़ करने की रस्म। किसी मर्द या औरत जो किसी वजह से अपनी बिरादरी या कबीले से निकल गया हो या निकाल दिया गया हो दुबारा शरीक़ बिरादरी होना या करना।
जुरवा (स्त्री)– जोरू कार इसमें मोसग़र देखो जोरू।
जुलवा (पु0)– देखो आरसी
फिकरा– 2 मुसहफ़
जमाई और जनवाई (पु0)– दामाद बेटी का शौहर।
जिनवासा (पु0)– बेटी के बारत के ठहरने का मकान वो मकान जिसमे जमाई और उसके साथी बारती ठहराये जाये।
जनवायी (पु0)– देखो जमायी।
जूती छपवाँ (पु0/स्त्री) ससुराल में दुल्हा की जूती छुपाने की रस्म जो मज़ाक के तौर पर दुल्हन की सहेलियाँ और बहने करती है। और दुल्हा से कुछ नग़दी लेकर जूती वापस करती है।
जोरू (स्त्री)– ज़ौजा, बीवी, घर वाली।

जोग (पु0)– मेल, रिस्ता, बाहामी ताल्लुक।
उदाहरण– इस लड़की का तुम्हारे घर जोग था।
जहेज़ (पु0)– अरबी लफ़्ज जहाज बमायने समाने सफ़र वगैरह का उर्दू तल्फुज़ मुराद गज़बाब ख़ानदानी वगैरह जो शादी के वक़्त हसबे हैसियत लड़कियों को दिया जाता है। (दान)
2. औरत अपनी रोज़मरा में दहेज या हिन्दी में लत्ज़ दान के साथ मिलाकर दान दहेज कहते है।
कहावत– सूरत शक्ल तेरी नही दान दहेज मेरे नही। बेटी जीप चलहइयों रोटी खईयो।
जेठ (पु0)– शौहर का सबसे बड़ा भाइ और उसकी बीवी को जेठानी कहते है।
जेठ साली (स्त्री)– बीवी की सबसे बड़ी बहन देखो साली।
चादर डालना (क्रिया)– हिन्दुओं की बाज़ अछूत ज़ातों में खिलाफ़े दस्तूर व रिवाज औरत को बतौर जोरू घर में रखना जिसको इस्तलाहन आशिना दाश्ता कहते है, आरी और धरी भी कहते है मर्द चार आदमियों में औरत को एक चादर उड़ा देता है। जो दोनो के ताल्लुफ़ होने का इजहार कहते है।
चाला (पु0)– शादी के इब्तेदायी ज़माने में बेटी को ससुराल से बुलाकर बतौर मेहमान रखने की रस्म जो आमतौर पर माँ के घर या माँ के करीब के रिश्तेदार किया करते है और इसका मकसद दामाद के साथ रस्में मुलाक़ात और मेल जोल बढ़ाना होता है। शादी के इब्तदायी महीने में चार मरतबा ऐसा किया जाता है। दार्क्खन के मुसलमानों में इस रस्म को जुम्मा गी करना कहते है (देखना) शादी के लिए शगुन लेना और नेक साथ देना।
चच्चा (पु0)– बाप का छोटा भाई।
चचिया सास (स्त्री)– देखो सास
चढ़ावा (पु0)– ज़ेवर जो दुल्हा की तरफ से दुल्हन को पेश किया जाए (आना, देना)
चकला (पु0)– अहले लखनऊ की इस्तलाह मुराद कस्बियों का मुहल्ला या बाज़ारी औरतों के पेशा करने का ठिकाना देखो अड्डा।
चौथी (स्त्री)– शादी के दूसरे दिन की रस्म जिसमें दुल्हा रिस्ता होने के बाद पहली मरतवा जब ससुराल में आता है तो दुल्हन के रिस्तेदार औरते और सहेलियाँ दुल्हा पर फूल, फल और तरकारियाँ फेक कर मारतें है। थोडी देर फ़रिकैन में ये मज़ाक रहता है। और चौथी खेलने के नाम से मौसूम किया जाता है। इस मौके पर दुल्हा की तरफ से दुल्हन को एक क़ीमती जोड़ा दिया जाता है। जो चौथी का जोड़ा कहलाता है।
छल (पु0)– फ़रेब जो शादी ब्याह के मौक़े पर फरिकैन में से कोई किसी मजबूरी से करे (देना)
छल बल (स्त्री)– फ़रसी लफ़्ज़ चुलबुला का उर्दू तल्लफुज मुराद बनाव सिंगार की चमक, दमक या भड़क। इसी मफूम में मर्द के लिए लफ़्ज़ छेला बोला जाता है।
छन (पु0)– टोना, संस्कृत चन्द बमाइनी शेर मौंजू करने का इल्म। मशात की इस्तलाह में दुल्हा से दुल्हन के साथ अच्छे बरताव का कौल व क़रार करना आरसी मसहफ़ या दुल्हा दुल्हन के आमने सामने होने के वक़्त गाने वाली औरतें दुल्हा से इस किस्म के एक़रार कराती है (होना)
खर्ची (स्त्री)– किसी बाज़ारी औरत की नजायज़ कमायी। (लेना, देना, कमाना)
ख़ाला (स्त्री)– माँ की बहन।
ख़ालू (पु0)– माँ की बहन का शौहर (मर्द)
ख़ाविंद (पु0)– ख़सम धनी मालिक मुराद शौहार औरत का मर्द।
ख़सम (पु0)– औरत का मालिक देखो ख़ाबिन्द।
ख़लिया सास (स्त्री)– देखो सास

ख़लिया ससुर/ख़लिया ससुरा (पु0)– देखो ससुरा
दादा (पु0)– बाप का बाप और उसके ऊपर परदादा कहलाता है। वस्त हिन्द और जुनूबी हिन्द के बाद इलाक़ों में दादा सबसे बड़े भाई को भी कहते है।
दारी (स्त्री)– दाश्ता देखो धरी।
दासी (स्त्री)– देखो धरी
दान (पु0)– देखो दहेज़
कहावत–तुर्तदान महा कल्यान।
दान दहेज (पु0)– देखो दहेज़
फिकरा–
रविया सॉस (स्त्री)– देखो सॉस
ददिहाल (स्त्री)– दादा दादी का घराना या घर
दुल्हा (पु0)– बना, बन्डा नौशा, शादी करने वाला शख़्स का ख़िताब।
दुल्हन (स्त्री)– शादी होने वाली औरत का ख़िताब।
दोहा जो (पु0)– पहली बीवी के मरने के बाद दूसरी बीवी करने वाला मर्द।
कहावत– सौदागर का घोड़ा दोजा दोहा जो जितना गोदे उतना थोड़ा।
दोहागन (स्त्री)– पहला मर्द या ख़ाविंद मरने के बाद दूसरा ख़ाविंद करने वाली।
दहेज़ (पु0)– देखो दहेज़ फिकरा–2
देवर (पु0)– ख़ाविंद का छोटा भाई।
देवरानी (स्त्री)– ख़ाविंद के छोटे भाई की बीवी।
दहाड़ी (पु0)– देखो धगड़ा और धरी।
धरू (पु0)– कुतुबदारा हिन्दुओं में फेरा की रस्म के बाद दुल्हा दुलहन को कुतुबदारे के दर्शन कराये जाते है जिसको इस्तलाहन धरू कहते है।
धरी (स्त्री)– दाश्ता, दारी, दासी, आश्ना धरीली, धरंगीली वो औरत जो बगैर निकाह किये बतौर जोरू घर में रख ली जाये। डाली हुई औरत।
धगड़ा धारी (पु0)– धरी को वो मर्द जिसको औरत अपना आश्ना बना ले। बगैर निकाह उसको साथ रखें। और उसका खच्र उठाये।
धनी (पु0)– देखो ख़ाविंद और ख़सम।
डोम (पु0)– शादी ब्याह की तकरीब में गाने बजाने वाले।
श्राड (पु0)– बेवा वो औरत जिसका शौहर मर गया हो और रन्डी बाजारी औरत को कहते है। बग़ैर शौहर वाली आवारा औरत।
रत जगा (पु0)– शादी रचाने की रस्म के लिए रात भर जागना (करना, होना)
रन्डापा (पु0)– रन्डापे की हालत देखो रॉन
उदाहरण– उसका सारा रन्डापा बच्चो की पढाने और गरीबों की ख़िदमत में कटा।
रन्डसाले (पु0)– वो कपड़े जो राड़ के अज़ीजों कारिब उसकी इद्दत उतरने पर पेश करें।
रडुआँ (पु0)– वो मर्द जिसकी जोरू मर गई हो।
रन्डी (स्त्री)– कस्बी, विसवा बाज़ारी औरत जो आपे हस्बे ख़्वाहिश आवारा मर्दा से ताल्लुक रखे और किसी एक की न हो।
रीति (स्त्री)– रस्मों रिवाज जो शादी के मौके पर अदा किये जाये।

रीति का जोड़ा (पु0)– जां दुल्हन के लिए दुल्हे की तरफ से रिवाजन भेजे जायें।
साचक/सॉचक (स्त्री)– सुहाग और सिंगार के लवाज़मात जो शादी से एक रोज़ कब्ल दुल्हा की तरफ से अुल्हन को बतौर तोहफा भेजे जाए।
साडु (पु0)– साली का मियाँ हमज़ुल्फ़।
सॉस/सासु (स्त्री)– शौहर और ज़ोजा की माँ और इसी सिलसिले की दूसरी सगी औरतें जैसे दादी नानी, फुफ्फी, ख़ाला, चच्ची, मोमानी वगैरह। बाहम सॉस के नाम से मुख़ातिब की जाती है।
साला (पु0)– बीवी का भाई।
साली (स्त्री)– बीवी की बहन।
साहा साया (पु0)– वो नेक साअत जिसमें शादी ब्याह करना मुबारक हो। (बन्दी) शादी का मड़ँवा या शादियाँ ठहराना (बजाना) शादी की नौबत या बाजे बजाना।
सुभाव (पु0)– बरताव, आदत, एतवार।
उदाहरण– जाको जो स्वभाव जाये नही जिसे नीम न बैठि होय सीख़च गुड़ घ्रू से।
सुसरा (पु0)– सॉस का शौहर
ससुराल (स्त्री)– सॉस का घर
सगाई (स्त्री)– पानदान, मँगनी, निसबत शादी का क़ौल वक़रार होना।
सलामी (स्त्री)– वो रक़म नज़राना जो दुलहा को पहली मरतवा ससुराल वालो के सामने आने और सलाम करने के मौक़े पा दी जाये (देना)
सलहज़ (स्त्री)– साले की बीवी देखो साला।
समधन (स्त्री)– दुल्हा दुल्हन की मायें और उनके करीब की रिश्ते की औरतों आपस में समधन कहलाती है।
समधी (पु0)– दुल्हा दुल्हन के बाप और उन के करीब के मर्द।
समधियाना (पु0)– समधन या सर्माध का घराना।
संजोग (पु0)– अक़द, निकाह, शादी का रिश्ता, गट जोड़ा,।
सन्धारा (पु0)– सावन के महीने का तोहफ़ा जो बहु के लिए भेजा जाए। (हिन्दुओं की रस्म)
सौतन/सौकन (स्त्री)– शौहर की दूसरी औरत जो पहली बीवी पर की गयी हो। औरत को सौकन का सबसे ज्यादा रंज होता है।
कहावत– एक तिनक सातिन पड़ा, कल न पड़त दिन रैन, सौतन जाके नैन में, कैसे पावे चैन।
सौकन (स्त्री)– देखो सौतन
सुहाग (पु0)– बनाव सिंगार खुश वज़ई रंगीलापन मुराद शादी की खुश वक़्ती शादी का सुख औरत के लिए एक बड़ी नियमत है। (बना, रहना) शौहर जिन्दा रहना (बिगड़ना) मुराद रॉड हो जाना, शौहर मर जाना।
सुहाग पिटारा (पु0)– दुल्हन के सिंगार की चीज रखने का सन्दूकचा या उसी किस्म का कोई ज़र्फ।
सुहाग पुड़ा (पु0)– दुल्हन के सिंगार चीजों का पुलन्दा शादी से एक दो रोज़ पहले बतौर तोहफ़ा दुल्हे की तरफ से दिया जाए। सुहाग पुड़ा और पिटारा हस्बे हैसियत बहुत खुशनुमा बनाया जाता है और साचक का एक अहम जुज़ समझा जाता है। बाज घरानों में इसको महफूज़ रखा जाता है।
सुहागन (स्त्री)– शौहर वाली औरत।
सुहानी (स्त्री)– इस्तलाहन वो गाली या मलामत का लक़्ज़ जो शादी के मौके पर दुल्हन वाले दुल्हा और दुल्हा वालों को छेड़ छाड़ और मज़ाक के तौर पर दें।

सहालग (पु0)– देखो साहा (साया) सोहा (सुहा)
सयाना (पु0)– बालिग समझादार जवानी की उम्र को पहुँचा हुआ।
शर्बत पिलायी (स्त्री)– शुमाली हिन्द के मुसलमानों में निकाह के बाद दुल्हे को शर्बत पिलाने और उस बचा हुआ दुल्हन को पिलाने की रसम।
शगुन (पु0)– कियस चीज या फ़ेल के अच्छे बुरे असरात देखकर अपने होने या करने वाले काम के लिए नतीजा अख़ज़ करने का तरीका अच्छा असर हो तो नेक शगुन और बुरा असर हो तो बन्द शगुन कहलाता है (देखना, लेना) आईन्दा करने या होने वाले काम के लिए अलामात तलाश करना अच्छे बुरे असरात का अन्दाजा लगाना (करना) शादी के लिए कोई अच्छी इब्तिदा करना।
शौहर (पु0)– देखो खक्षविन्द
शहबाला (पु0)– घोड़े पर नौशा (दुल्हा) के पीछे बैठने वाला लड़का।
इद्दत (स्त्री)– क्रिया बैठना करीब चार महीने की मुद्दत जो औरत शौहर के मरने के बाद उसके घर बैठकर गुज़ारे यानि इस मुद्दत में दूसरी शादी न करें और न कही आये जाये यहाँ तक के हमल का गुमान जाता है।
कुर्रम (पु0)– देखो भडुआ।
क़ौल का छलला (पु0)– मगनी करार पाने की निशानी जो रसमन चाँदी का छलला होता है जो सोने की अँगुठी के साथ दफला की तरफ से दुल्हन को ओर दुल्हन की तरफ से दुल्हा को बतौर निशानी पहनाया जाता है इसलिए इसको निशान का अँगुठी या छल्ला भी कहते है।
काका (पु0)– हिन्दी में चच्चा को कहते है।
काकी (स्त्री)– चच्ची काका की बीवी।
कुटना (पु0)– कोती कुर्म खास देखो कुटनी।
कुटनी (स्त्री)– वो औरत जो मर्द और औरत के नाज़ायज़ ताल्लुकात करती है दलाला ऐसे मर्द को कुटना कहते है।
क्रिया बैठना (क्रिया)– देखो इद्दत बैठना।
कसबी (स्त्री)– देखो रन्डी।
कुमार (पु0)– कुवाँरा लड़का
कंचन (स्त्री)– कसबी
कंचन काया (स्त्री)– सुनहरे रंग के जिस्म की औरत।
कंगना (पु0)– हिन्दुओं में दुल्हा दुल्हन को नजरे बद से बचाने के लिए कलाई में बाँधने का कलावा जिसमें लोहे का छल्ला टुटी कौड़ी सुपारी डिब्बी और काला दाना वगैरह बँधा होता है। फेरो के बाद कगना खोला जाता है उस वक़्त समधन को गालियाँ दी जाती है।
कन्या (स्त्री)– कुँवारी लड़कियाँ
कन्यादान (स्त्री)– लड़की का जहेज़ देखो दान और जहेज।
लड़के लड़की की शादी करना।
कुँवारा नाता (पु0)– लड़का लड़की की शादी की रस्म अदा होने से पहले दोनों धरों के रस्मी ताल्लुक़ात होना या मेल मिलाप।
कोती (पु0)– देखो कुत्ना
गाँठ बधना (क्रिया)– हिन्दुओं में औरत मर्द का रिस्ता हो जाने को कहते है जो एक दूसरे के दामन में गाँठ बाँधकर जाहिर किया जाता है।

गठजोड़ा (पु0)– मियाँ बीवी, ज़ौजेन, जोरू ख़ाबिन्द, मुराद दुल्हा या दुल्हन के माँ बाप।
गदरा ढ़ील (पु0)– भरा–भरा बदन
ग्रहस्थी (पु0)– बाल बच्चो वाला अहलो अयाज वाला।
गोदाना (क्रिया)– औरत के जवान होने की अलामत का जाहिर होना। छातियों का उभार।
गोना (पु0)– लड़की की बिदा (विदा, रूख़सती, करना, होना)
गेलढ़ (पु0)– औरत के पहले शौहर की औलाद जो उसके साथ दूसरे शौहर के घर आये।
घर गीली (स्त्री)– देखो धरी
लगन (पु0)– हिन्दुओं में मगनी की तारीख मुर्क़रर करने की रसम जिसमें ब्रह्ममण से मुहरत दिखवाकर पत्तर दिखवाया और नारियल के साथ लड़की वाले के घर भेजा जाता है। (आना)
लगन प्त्री (स्त्री)– मगनी ठहराने का रूक़्क़ा
मजाया (पु0)– एक माँ के पेट से पैदा हुई औलाद।
मामा (पु0)– देखो मामू
मायूँ विठाना (क्रिया)– देखो बान बिठाना।
मदराकद (पु0)– मर्द या औरत का मामूल से छोटा कद।
मिस्सी होना (क्रिया)– बाज़ारी औरतों का माहवारा मुराद मद्र और औरत का जोड़ा मिलना।
मुशात (स्त्री)– सिंगार करने वाली औरत उर्दू में शादी के प्याम ले जाने और निसबत कराने वाली औरत को कहते है।
मुमसला (पु0)– मामू का साला
ममिया साँस (स्त्री)– देखो साँस
ममिया ससुरा (पु0)– शौहर या ज़ौजा का मामू।
मन्झा बिठाना (क्रिया)– देखो बान बिठाना। फिकरा–2
मडुवा/मडुत्हा (पु0)– संस्कृत मण्डप बारात को बिठाने और शादी की रस्मे अदा करने को आरज़ी बनाया हुआ साँईबान (छाना, छवाना)
मनसोबा (स्त्री)– वो औरत जिसमे निसबत लगी हो या मगनी ठहर गयी हो।
मगनी (स्त्री)– शादी की ख़्वाहिश या दरख़्वास्त।
कहावत– चट मेरी मगनी पट मेरा ब्याह।
मंगेतर (पु0/स्त्री)– वो मर्द या औरत जिससे शादी करने की दरख़्वास्त की गयी हो।
मुँह दिखायी (स्त्री)– अज़्ज़ों के तोहफ़े जो दुल्हन के पहली मरतवा सामने आने पर दिये ताये (देना)
मोर/मोड़ (पु0)– दुल्हा या दुल्हन के सेहरे का ताज।
मोड़ी– बेबिहाई सियानी लड़की
मौसा (पु0)– माँ की बहन का मियाँ ख़ालू।
मौली (स्त्री)– दुल्हा दुल्हन के कलाई में बाँधने का कलावा (सूर्ख़, सूद का डोरा)
मेहर (पु0)– मुसलमानों में औरत को ज़ौजियत में लाने का मुआवज़ा जो फरिकैन की हैसियत के मुताबिक ज़र्क नक़द हो या कोई खिदमत या जिनस को बाँधना या मुर्करर करना।
मुर्हुत (स्त्री)– शगुन लेने की साअत जिसकी मुद्अत ज़्यादा से ज़्यादा 48 (अड़तालिस) मिनट होतह है। (देखना)
मियाँ (पु0)– घर वाला घर का मालिक व बुर्जुग और बीवी के मुकाबले में शौहर के मायनों में बोला जाता है।

मायका (पु0)– माँ का घर या घराना इस्तलाहन बीवी के माँ के घर के लिए बोला जाता है।
नाता (पु0)– निसबती रिश्ता
नामनवीसी (स्त्री)– लड़के और उसके इज़दाद वगैरह के नामों की तहरीर जो तहकीखाल के लिए लड़की वाले के यहाँ भेजी जाए।
नाना (पु0)– माँ का बाप
नाईकाँ (स्त्री)– बाज़ारी इस्तलाह मुराद कस्बियों का मामला कराने वाली औरत या कस्बी की मालिक।
नथनी उतरना (स्त्री)– आमयाना बाज़ारी मुहावरा। मुराद ताल्लुक़ात ज़ौज़ियत हो जाना, औरत का कुँवारापन खत्म हो जाना।
न्योछावर (पु0)– वारना, वार फ्रेर, नक़दी या किसी और जिन्स की बिखेर जो बतौर सदका (ख़ैरात) सर पर से की जाए (करना, ठहरना, होना)
निशानी का छल्ला (पु0)– देखो कौल का छल्ला, इसको मगनी का छल्ला भी कहते है।
नन्द (स्त्री)– शौहर की बहन
नन्दोई (पु0)– नन्द का शौहार
ननियाँ साँस (स्त्री)– देखो साँस
ननिहाल (स्त्री)– नानी का घर या घराना।
नवासा (पु0)– बेटी का बेटा।
नौता/न्योता (पु0)– शादी या किसी तफरीब का बुलावा (देना)
कहावत– क्यूँ अैधा न्योता और दो बुलाये।
न्योतार (पु0)– बुलावे की जगह
कहावत– बाप मारे तो रोए नही, न्योता गये तो सोए नही।
न्योताई (पु0)– न्योता लाने वाला बुलावा लाने वाला।
बुलावा लाने वाले का ईनाम।
नौदासी (स्त्री)– दूसरी बीवी ख़बर, ऐलान ुरना) शादी ब्याह की तक़रीर या मौत की ख़बर बिरादरी वालों को पहुँचाना जो सिर्फ ऐलान की सूरत होती है न कि बुलावे की।
नेग (पु0)– संस्कृत निगामा या नया बमायनी दस्तूरे हफ़ खिदमत सवाब भलाई माली सलूक जो बड़े छोटे के साथ करें। इस्तलाहन वो अतिया जो शादी के मौके पर किसी रस्म की अन्जाम दही पर बड़े छोटे के दें या अज़ीज़ो को दिया जाए (देना, लेना)
नेग जोख (पु0)– मुर्कररा या रस्मी अतिया जो तक़रीब के मौक़े पर दिया जाए।
नेगी (पु0)– नेग देने या लेने वाला।
वार फेर (स्त्री)– देखो न्योछावर
वारना (क्रिया)– देखो न्योछावर करना।
वलिमा (पु0)– शादी के दूसरे रोज़ की दावत जो दुल्हे की तरफ से दी जाए (देना, करना)
हाथ पीले होना (क्रिया)– शादी की खुशी मनाना या होना।
हतयारी (स्त्री)– वो बेवा औरत जो बिरादरी के किसी मद्र के साथ जिसको वो पसन्द करे आ बैठे। पल्ला पकड़े।
हिजड़ा (पु0)– वो मर्द जो नामर्द बना दिया जाए।

पेशा आबकारी :–

आबकार (पु0)– देखो कलाल
आबकारी (स्त्री)– कलाली, शराब बनाने का तरीका या पेशा शराबसाज़ी।
उटानी (स्त्री)– उठानी का दूसरा तल्लफुज़ शराब की भट्टी खाली करने का ज़र्फ देखो सईया।
अफ़ीम (स्त्री)– अरबी लफ्ज़ अफियों का उर्दू तल्लफुज़। ख़शख़श के पौधे के फल का रस।
अफ़ीमी (पु0)– अफ़ीम का नशा करने वाला यानि नशे के लिए अफ़ीम खाने वाला।
एकबारा (स्त्री)– अठराह भट्टी से
अमलपानी (पु0)– देखो अमलपानी।
इमली (पु0)– देखो अमली।
ऐची (स्त्री)– मदक पीने की नली के अनदर का मेल जो मदक के नशे को तेज करने के लिए मदक में मिलाया जाता है।
बरौट (पु0)– देखो पासना।
बजिया (स्त्री)– भगोडो की इस्तलाह मुराद भंग देखो भंग।
भट्टी (स्त्री)– आबकारों की इस्तलाह मुराद शराब बनाने का बड़ा भपका।
भंग (स्त्री)– 1. भजिया, एक किस्म के पौधे की बीज जिनको खाने से नशा पेदा होता है।
2. भंग की तासीर ठण्डी होती है इसी लिए शुमाली हिन्दुस्तान के अकसर हिन्दु गरमी के मौसम में जो तालिफ तरीको से ठण्डाई के नाम से इस्तेमाल करते है।
भंगड़ा (पु0)– नशे के लिए भंग पीने का आदि।
पाछना (क्रिया)– पछने लगाना वकी लगाना, काछना आबकारों की इस्तलाह में खुशखाश के पौधे के बच्चे डोडो को जो पोस्त कहलाता है किसी धार दार आले से कचूके या ख़ोन्चे लगाना ताकि उसका रस निकले जिससे अफ़ीम बनायी जाती है।
पाछना/पर्च (स्त्री)– संस्कृत परछों बमायनी किसी तेज नोकदार चीज से गोदना। मुराद अफ़ीम के डोडे को छेदना देखो पाछनाँ।
पाछना (पु0)– पछने लगाने का तेज नोक का चाकू। अफ़ीम के डोडे गोदने का तेज धार चाकू।
पासी (पु0)– अफ़ीम के डोडे टाँकी (शगाफ़ लगाने वाला)
पसपास (स्त्री)– शराब खीचने की सडाई हुई जिनस जिसको खमीर होना कहते है यानि नशा पैदा करने के काबिल।
पोस्त (पु0)– छिलका डोडे का ख़ोल इस्तलाहन ख़शख़ाश के पौधे के डोडे को कहते है। जिसको दरख़्त में लगे हुए कच्ची हालत में पाछने से रस निकलता है जो अफ़ीम की अस्ल होता है।
पोस्त (पु0)– वो शख़्स जो नशे के लिए पोस्त का अर्फ़ पीने का आदि हो।
फुलका (स्त्री)– फूल दो आतशा शराब तेज किस्म की शराब।
फूल (पु0)– देखो फुलका दो मरतबा खींची हुइ शराब।
ताड़ी (पु0)– ताड़ के दरख़्त का मद जो दरख़्त से निकलने के बाद ख़मीर हो जाता और पीने से नशा पेदा करता है दक्खिन में ये दरख़्त बहुत पैदा होता है। जिसका मद सरकारी तौर पर कलालों के हाथ फरोख़्त किया जाता है। (तासना) माड़ के दरख़्त का मद निकालना जो तने में शिगाफ़ देकर निकाला जाता है।
तावा (पु0)– भट्टी (भपके) में शराब की तैयारी का अमल आना।
टपका (पु0)– पहली मरतबा की कशीदा शराब (एक बारा)

ठर्रा (पु0)– रस्सी तीसरे मरतबा की कशीदा अद्ना किस्म की शराब।
ठण्डाई (पु0)– भगड़ो की इस्तलाह मुराद भंग, देखो भंग फिकरा।
चरस (पु0)– भंग के किस्म के पौधे के पत्तियों का चूरा जो चाय की पत्ती की तरह चमड़े (चरम) पर रगड़ कर खुशक किया जाता है और यही उसकी वजह तसमिया है उस चूरे को नशे के लिए तम्बाकू की पत्ती की तरह चिलम में पीते है।
चरसी (पु0)– वो शख़्स जो चरस पीने के लिए नशे का आदि हो।
चन्डू (पु0)– अफ़ीम का सत और तम्बाकू का क़िवाम् मिलाकर तैयार की हुई नशीली चीज जिसको बहुत कम इक़दार चुर्ट की वज़ा की मुहनाल में सुलगाकर दम लगाते है उसकी लत पीने वाले को निहायत ख़राब और ख़स्ता हाल बना देता है और मरते दम तक नही छोड़ती।
चन्डूबाज़ (पु0)– वो शख़्स जिसको चन्डू पीने की लत हो उसको चन्डू बाज़ कहते है।
छेदना (क्रिया)– ताड़ के दरख़्द का मद निकालने के लिए उसके तने में शुगाफ़ लगाना सुराफ बनाना या तने को छेदना देखो ताड़ी ताना।
खुतका/कुतका (पु0)– कुत्तक भंग घुटने का डण्डा, मूसल।
खुमार (पु0)– हल्का सा नशा, नशे का उतार जो गरा मालूम हो।
दारू (पु0)– क़लालो की इस्तलाह मुराद देशः शराब।
दो आतशाह (स्त्री)– दो मरतवा की साफ की हुई शराब।
दूधः अफ़ीम (स्त्री)– पोस्त का ताज़ा रस जो पतला और किसी कद्र सफेदी माईल भूरे रंग का होता है। इस हालत में उसको कच्ची या दूधी अफ़ीम कहते है।
डोरा (पु0)– भट्टी यानि भपके में से शराब निकालने का ज़र्फ़ (वर्तन)
श्रसी (स्त्री)– चौथे दर्ज की हल्की किस्म की मामूली शराब।
श्रसिया (पु0)– शराब का आदि और हर वक्त नशे में रहने वाला शख़्स। हर वक़्त पिये रहने वाला ।
साक़ी (पु0)– शराब पिलाने वाला
सुरूर (पु0)– हल्का नशा जो पुरकैफ़ और खुशकुन हो, नशो का चढ़ावा।
सुरी (पु0)– देखो कलाल
सय्या (पु0)– भट्टी में शराब निकालने का चम्बू।
सेन्धी (स्त्री)– खुजुर के दरख़्त का मद जो धुप लगने से ख़मीरा हो जाता और पीने से नशा करता है। दक्खिन में इसको नशे के लिए पिया जाता है।
शराब (स्त्री)– अरबी जफ्ज़ शुर्ब बमाने शोरबा उर्दू में मुख़तालिफ़ चीजों की तैयार की हुई नशा करने वाली चीज़ मुराद ली जाती है।
शराबी (पु0)– वो शख़्स जो शराब पिये रहने का आदि हो।
अमली/इमली (पु0)– नशेबाज़, नशे का लतिया।
मिसरा–
अमली होके धरे ध्याना
गिरही होके कथे ज्ञान
जोगी होके कोठे भंग
कहें कबीर ये तीनों ठग।
अमलपानी/इमलपानी (पु0)– नशे बाज़ों की इस्तलाह मुराद नशे की चीज या शराब (करना)
काछना (क्रिया)– 1. कछोकना देखो पाछना।

2. पोस्त का अर्क़ निकालना।
काछनी (स्त्री)– पोस्त में खरोंचे लगाने का चाकू।
कफ़ा (स्त्री)– भंग के पौधे के पत्तो पर पेदा होने वाला फ़ूँदी की शक्ल का माद्‌दा जिसको कपड़े में लगाकर उतारते जमा करके मदक बनाते।
कलाल (पु0)– कलवार, सुनरी, यानि बंगाल, शराब बेचने वाला दुकानदार, शराब और दूसरी नशीली चीज़ो का पेशा करने वाला।
कलवार (पु0)– देखो कलाल
कूत्तक/कूत्तका (पु0)– देखो खुत्तका, भंग घुटने का सोडा,
मिसरा– परेत ऐसी कीजिए जैसा कुत्तका भंग
वो तोड़े दा की पसली और लिपटे दा के अंग।
खोलार/खोलारा (पु0)– ख़ोल का ग़लत तल्लफ़ुज़ मुराद ख़श ख़ास के पौधे का डोरा जिसके
पोस्त के मद यानि रस से अफ़ीम बनायी जाती है।
गांजा (पु0)– भंग और तम्बाकू सत मिला कर बनाई हुई नशीली चीज़ जो चिलम में तम्बाकू की तरह सुलगा कर पी जाती है।
गांजियाँ (पु0)– गाँजे का नशा करने वाला शख़्स।
गुर्दनी (स्त्री)– भट्टी से शराब निकासलने का डोगा या एसी किस्म का ज़र्फ।
गिलान्डा (पु0)– महुवें के दरख़्त के फूल का डोडा जो शराब बनाने के काम आये।
लाहन (स्त्री)– शराब का ख़मीर जो शराब बनाने वाली चीज़ में पैदा हो (आना, होना, उठना)
लबना (पु0)– संस्कृत लभ्न बमानी लुटिया वो बर्तन जो संन्धा या ताड के दरख़्त में मद (रस) जमा होने को बाँधा जाए।
लपटा (पु0)– शराब बनाने की जिन्स का घोलवा जो गल सड़कर ख़मीरदार हो गया हो और जिससे शराब खीची जा सकें।
लधोरी (स्त्री)– भट्टी से शराब निकालने का डोगे की किस्म का बर्तन।
लौकी (स्त्री)– शराब रखने का चोबी ज़र्फ कद्‌दू की बनाई हुई बोतल।
शराब की भट्टी में चलाने की डोई।
मठोर (पु0)– शराब बनाने का घड़ा।
मदक (स्त्री)– गांजे की किस्म की नशीली चीज़ जो भंग के पत्ते की फोई वगैरह से बनाई जाती है देखो गांजा।
मदकी (पु0)– मदक का नशा करने का आदि शख़्स।
मुर्खा (पु0)– पोस्त की बीमारी देखो पोस्त।
नहवा (पु0)– लाहन पास शराब की भट्टी में डालने का शक्कर का बनाया हुआ ख़मीर शराब बनाने का ख़मीर।
नशा (पु0)– बेरख़दी गफलत मदहोशा या बेहोशा जो नशीली चीज़ के इस्तेमाल से पेदा हो।
नशेबाज़ (पु0)– नशीली चीज़ का इस्तेमाल करने वाला शख़्स।
नशीली (स्त्री)– नशा पैदा करने वाली चीज़।
नेरा (पु0)– सैंधा या ताड़ के दरख़्द का ताजा मद (रस) जो सूरज निकलने से कब्ल निकाला जाए और जिस में नशे का ख़मीर न पैदा हुआ हो।
पेशा भिन्डे बरदारी–:

आबनी (स्त्री)– फँवारा (फववारा) टेडवाँ, जलतरंग, गुड़गुड़ी नीचे की खड़ी नली जिसका निचला सिरा हुक्के के पानी में डूबा रहता है, ऊपर के सिरे पर चिलम रखी जाती है देखो हुक्का।
आसमान खुँचा (पु0)– पंजाब वालों की इस्तलाह मामूल से बहुत ज्यादा लम्बी नी का नतीजा जिसकी मुनाल बाला खाने तक पहुँच सकें और कोठे पर बैठा आदमी ऊपर से ही हुक्के का दम लगा सकें।
अध्धे का नीचा (पु0)– मामूल से छोटी नी वाला नीचा।
अड्डी (स्त्री)– अर्री का गलत तल्लफुज़ देखो अरी।
अर्री/अरी (स्त्री)– तोड़ मड़ोडत्री सुरगार नीचे की नी और नली को अन्दर से साफ करने का आड्दार गज या काँटेदार सलाख जिसकी नी के अन्दर की सिल वगैरह खुरची जा सके या सुराख किया जा सके। तस्वीर अर्री/अरी
अस्ततर (पु0)– चेने नीचे के नलियो के ऊपर कपड़े के पट्टी की लपेट (पेचना)
उल्टी चेन (स्त्री)– देखो चेन
इमरूती (स्त्री)– कड़ी के टेढ़वे (आबिनी) के ऊपर की गाँव दुम बनायी हुई नोक सिपर चिलम रखी जाती है देखो कली।
बेड़ी (स्त्री)– एक किस्म के दरख़्त के पत्ते से सिगरेट की वज़अ पर तम्बाकू की बनायी हुई पुर्नी जो गरीबो के स्तेमाल के लिए घरेलू सनअत के तौर पर तैयार की जाती है।
भिन्डा (पु0)– देखो हुक्का
भिन्डेबरदार/भिन्डाबरदार (पु0)– सरे राह आवाम को या अमीरों के हाँ हुक्का पिलाने की खिदमत अंजाम देने वालाशख़्स।
भिन्डेख़ाना (पु0)– हुक्के के सामान रखने वाला हुजरा।
भोगली (स्त्री)– सटक बनाने की तार की नली देखो सटक।
पच्ची भोगली (स्त्री)–साँस बन्द भोगली यानि वो भोगली जिसपर किसी किस्म की बारिक छाल या पत्ते की कतरने तार की दर्ज़े बन्द करने को बतौर गिलाफ लपेट दी गयी हो।
प्याला (पु0)– कली के टेढ़वे आबनी में गिर्दे की शक्ल का बना हुआ कयब (टेढ़वे का गिर्दा) देखो कली।
पैचवान (पु0)– कुल्फीदार नीचे का हुक्का देखो हुक्का।
पयक (पु0)– भिन्डे बरदारों की इस्तलाह मुराद चिलम में भरने की लायक तम्बाकू की बटियाँ।
पयको का तोबड़ा (पु0)– भिन्डेबरदारो का थैला जिसमें चिलम भरने का लवाज़मा रहता है।
फुवारा (पु0)– फववारे का ग़लत तल्लफुज़ देखो आबनी।
तम्बाकू (पु0)– गुड़ाकू हुक्के में पीने का बनाया तम्बाकू पान में खाने के तम्बाकू को ज़र्दा कहते है।
तवा (पु0)– चिलम में तम्बाकू के ऊपर ढकने का सटी का बना हुआ ढ़क्कना जो तम्बाकू को आग के रास्त असर से बचाता है और जल्द जलने नही देता (जमाना, रखना) चिलम के तम्बाकू के ऊपर तवा ढ़कना।
तोड (पु0)– देखो अर्री
टाट बाफ़िनी (स्त्री)– सुनहरी, रूपहली, कलाबत्तू और रेशम की लपेट का बना हुआ खुशनुमा नीचा।
टोटी (स्त्री)– कली में नी या सटक लगाने का मुँह देखो कली।
टेड़वा (पु0)– मोहक– कली का फववारा या आबेनी देखो कली। लफ्ज़ टेड़वा कली की आबनी के लिए इस्तलाहन बोला जाता है।

थडिया/ठड़िया (पु0)– सरेराह खड़े–खड़े पीने या पिलाने का खड़ी नी का हुक्का। सिगरेट के रिवाज से कब्ल भलड़े बरदार सड़क के किनारे थड़ पर राह सद्दो के लिए, जो हुक्का लेकर खड़े हो जाते थे वो इस्तलाहन ठडिया कहलातेक थे।
जलतरंग (पु0)– देखो आबिनी
जलेबीदार कुल्फी (स्त्री)– देखो कुल्फ़ी
चाँदी करना (क्रिया)– भन्डे बरदारों का मुहावरा मुराद हुक्के के लम्बे और जल्दी जल्दी दम खीचना जिससे तम्बाकू जल कर राख हो जाए।
चुट्टा (पु0)– दार्ख्वन की इस्तलाह चूरट का गलत तल्लफुज़ ।
चुरट (पु0)– फ्राँसीसी लब्ज शयरोट का उर्दू तल्लफुज़।
चुगल (पु0)– फारसी लत्ज़ चुग़र का गलत तल्लफुज़ भन्डे बरदारों की इस्तलाह मुराद वो ठेकरी जो चिलम के सुराख पर तम्बाकू के नीचे उरख्र जाए ताकि तम्बाकू आबिनी में न गिरे और तम्बाकू का धुँआ रूका रहे। या दम खाये।
चिलम (स्त्री)– हुक्के की अगीठी जो आमतौर से मिट्टी की बनी हुई होती है इसकी तह पर तम्बाकू जमा कर ऊपर आग भर दी जाती और आबिनी के सिरे पर टिका दी जाती है देखो हुक्का (भरना, भडकना) चिलम की आग तेज हो जाना।
चिलम चट (पु0)– हुक्का पीने का धत्ती, लतिया, रसिया या वो षख़्स जो जल्दी जल्दी हुक्के के दम लगाकर तम्बाकू को जला देता है।
चुनबल (पु0)– चिलम का धर या ऊपर का फेला हुआ हिस्सा जिसमें आग रखी जाती है।
चुनबल पोष (पु0)– चिलम के घेर पर ढ़कने का जाली दार ढ़क्कना देखो हुक्का।
चेन (स्त्री)– नीचे के ऊपर कपड़े की पट्टी लपेट के बल पे बल जब खिलाफ मालूम ऊपर से नीचे के रूख होते है तो उल्टी चेन कहलाते है।
चेनकारी (स्त्री)– नीचे पर कपड़े की पट्टी के लपेट जो मुख़तालिफ वज़ए की सादा और फूलदार खुषनुमा बनाई लाती है।
हुक्का (पु0)– अरबी लफ्ज़ बमायनी डिब्बा बगैरह भिनडे बरदारों की इस्तलाह में उस ज़र्फ को कहते है जिसमें नीचा लगाया जाता है और उस पूरे मजमूए का नाम हुक्का हो गया है। हुक्के मुख़तालिफ वज़ए के अदना और आलाहर किस्म के बनाये जाते है उसके षौक ने बड़े बड़े तकल्लुफ़ात पैदा किये ओर उसकी रोनके महफ़िल बना दिया। किसी ने उसकी हर दिल अज़ीजी पर षेर कहा है–

हुक्का हर का लाडला
सबका रखे मान
भारी सभा में यूँ
फिरे जूँ गोपन में मक्खी
सभी वाकि जल भरी
ऊपर जारि आग
जबहिं बजाए बाँसुरी
निकसो करो नाग।

और कहावत है के–

हुक्के की मारी आग बाकि का मारा गानो यानि जिस चुल्हे से चिलम भरी जाए वो चुल्हा नही बन पाता ओर जिस गानों पर लगान बाकी रहे वो गानो नही सवरता (ताजा करना, तैयार करना) हुकके के नीचे को धोकर ठण्डा करना और हुक्का का पानी बदलना।

तस्वीर – 1. हुक्का 2. नीचा 3. मुनाल 4. नी 5. कोहिनी 6. दमकष 7. कुफ़ल 8. जलतरंग बगट्टा चुम्बलपोष, कुल्फी, पैचवान और चिलम चुम्बल।

भरना (पु0)– हुक्के के लिए चिलम में तम्बाकू जमा कर आग रखना (दम खाना) हुक्के की चिलम के तम्बाकू का आग की गरमायी पकड़ना (आना) हुक्का पीने में या हुक्के का दम लगाने में तम्बाकू का धुआँ आने लगना (सुलगना और जलना) चिलम के तम्बाकू को आग का ताव लगाना (उड़ाना, बजाना) बेतक्कलुफ हुक्का पी जाना। (घुटा हुआ आना) चिलम या नी की खराबी की वज़ह से हुक्के में धुआँ रूका हुआ आना या कम निकलना।

दामन (पु0)– कली का धेर या पैर्दे का दौर देखो कली।

दस्टर/हुक्का (पु0)– मदरया अहले लखनऊ की इस्तलाह किसी जमाने में लखनऊ में मिट्टी का भरा भरा या हुक्का बाजार में पैसे दो पैसे में फरोख़्त होता था हुक्के के षौकीन उसे हाथ में लिए चलते फिरते पीते रहते और खत्म होने पर फेक देते जिस तरह आज कल सिगरेट का रिवाज है ये हुक्का दमडियाँ हुक्का कहलाता था।

दमकष (पु0)– नी सासनी नीचे की धुआँ खीचने की नली या हुक्के की हवा खीचने की नली देखो हुक्का।

दम लगान (क्रिया)– हुक्का पीना नीचे से चिलम के तम्बाकू का धुँआ खीचना।

दम्मी (स्त्री)– नारियल का हुक्का जिसमें पानी न डाला जाए।

सासनी (स्त्री)– देखो दमकष नीचे की मोहनाल।

सटक (स्त्री)– तार की बनायी हुई नली जिसको तैयार करके नी की बजाय बतौर सासनी इस्तेमाल किया जाता है आमतौर से कली में लगायी जाती है चूँके सटक लचक दार होती है और हर तरफ फेरी और गुड़ली बनायी जाती है इसी लिए उमरा और खुष मज़ाक हुक्का पीने वालो में बहुत मक़बूल है देखो कली।

सुलगा/सरस (पु0)– सोजा देखो अर्री। नी साफ करने का ख़ारदार आहिनी गज।

सिगार (पु0)– देखो सिगरेट

सुलफा (पु0)– अरबी लव्ज़ सुलफ़ा बमायनी मेहमान के लिए तुरत का तैयार किया हुआ नाष्ता भन्ने बरदारों की इस्तलाह में जल्दी तैयार हो जाने वाले हुक्के यानि बगैर तवे की भरी हुइ चिलम को कहते है जो जल्द सुलग जाए (भारना) बगैर तेव की चिलम भरना।

सूजा (पु0)– देखो सरगा

ज़ामिन (पु0)– देखो कुल्फ़ी

तलब (स्त्री)– हुक्के या किसी किस्म की आदिती इस्तेमाल चीज़ की ख्वाहिष जिसके न मिलने पर तबियत बेचौन हो (होना, लगना) लत।

फतह पेच (पु0)– सटक वाला हुक्का या कली यानि वो हुक्का जिसमें बजाय नीचे के सटक लगी हो। देखो सटक

फरषी हुक्का (पु0)– महफ़िल में इस्तेमाल का उम्दा किस्म का बड़ा हुक्का।

क़ुफल (पु0)– असबिनी और सासनी को बाहम मिलाये रखने वाली बन्दिष देखो हुक्का।

कुल्फ़ी/कुलफ़ी (स्त्री)– कोहिनी गुलठी और ज़ामिन नीचे की सासनी के बीच का जोड़ा जिसकी वजह से नी हस्बे ख़्वाहिष हर तरफ मोड़ी जा सकती है। कुलफ़ी मुख़तालिफ षक्ल की होती है। बाज़ मामूली होहिनी की वज़अ की होती है और वाज़ चक्कर दार। चक्करदार कुलफ़ी जलेबी दार कुलफ़ी कहलाती है। देखो हुक्का।
कुलयान (स्त्री)– फारसी जव्ज़ बमायनी हुक्का उर्दू में कली कहते है। देखो कली
ककड़ (पु0)– लम्बी नी का बड़ी किस्म का हुक्काजिसमें बहुत से लोग सैर हो सके रिवाजन बाज़ार में ारेराह पिलाने का हुक्का।
ककड़ बरदार (पु0)– हुक्का पिलाने वाला भन्डेबरदार।
ककड़षाही नीचा (पु0)– दरबार या उमरा की महफ़िल का बड़े नीचे और लम्बी नी वाला हुक्का (आसमान खोचा)
कली (स्त्री)– फारसी लत्ज़ कुलयान का उर्दू तल्नफुज़ जो एक खास किस्म की बनावट के हुक्के लिए बोला जाता है। जिसमें आबिनी जो कली के लिए टेडवा कहलाता है और सासनी अलैहदा अलैहदा होती है। सटक का इस्तेमाल भी कली ही के साथ किया जाता है।
कोहनी (स्त्री)– देखो कुल्फ़ी
गट्टा (पु0)– हुक्के की डाट जो आबिनी और सासनी को मिलाकर निचले सिरे से कुछ ऊपर बनायी और हुक्के मुँह पर जमा कर बिठायी जाती हो ताकि हुक्के के अन्दर हवा बन्द रहे। देखो हुक्का (बनाना, बाँधना)
गुड़ाकू (पु0)– दार्क्खन की इस्तलाह मुराद हुक्के में पीने का बना हुआ तम्बाकू और पान में खाने का तम्बाकू। सुमाली हिनद में जर्दा कहलाता है।
गुड़गुड़ा (पु0)– 1. देखो आबिनी 2. नीचा सासनी 3. मुक्कमल हुक्का
गुड़गुड़ा साज़ (पु0)– देखो नीचा बन्द।
गुड़गुड़ी (स्त्री)– गुड़गुड़े का इस्म सुसगर नारियल का हुक्का।
गुल (पु0)– चिलम का जला हुआ तम्बाकू।
गुलटी (स्त्री)– अहले लखनऊ की इस्तलाह मुराद कुल्फ़ी देखो कुल्फ़ी।
लत (स्त्री)– हुक्का पीने या इसी किस्म के चीजों के इस्तेमाल की धत जो तबियत में बस जाए।
लट्टू (पु0)– टेढ़वे में बना हुआ गोला देखो कली
मदरिया (पु0)– अहले लखनऊ की इस्तलाह मुराद हाथ में लिए फिरने का हुक्का देखो दमडिया हुक्का।
मग़ाज रोषन (स्त्री)– अहले लखनऊ की इस्तलाह मुराद हुलास देखो हुलास।
मुनाल/मोहनाल (स्त्री)– सासनी नी के मुँह की षाम जो आम तौर से गाव दुम बनायी जाती है। उमरा के हुक्को में सोने या चाँदी की भी लगायी जाती है। देखो हुक्का।
मोहक (पु0)– मोहरे का इस्मे मुसगर कली के टेढ़वे का इस्तलाही नाम देखो टेढ़वा।
नास (स्त्री)– अहले मद्रास की इस्तलाह मुराद हुलास देखो हुलास।
नी (स्त्री)– देखो दमकष और सासनी।
नीचा (पु0)– भन्डे बरदारो की इस्तलाह मुराद हुक्के पर लगाने की आबिनी और सासनी वगैरह का मुक्कमल ढ़ाचा हुक्के का साज देखो हुक्का।

नीचा बन्द (पु0)– हुक्के के लिए तैयार करने वाला पेषेवर (नीचा बन्दी) एक मुस्तकिल पेषा है। लेकिन इस पेषे की इस्तलाहत पेषा इलाका बन्द (जिल्द चहारूम) और भन्डे बरदारों के पेषो में बट गयी है। इस लिए इस पेषे की इस्तलाहत अलौदा नही लिखी गयी।
हुलास (स्त्री)– नास सूघँनी, मगज़ रोषन तम्बाकू (जर्दा) का सफाफ जो नाक से सुड़कने के लिए बनाया जाए। दार्क्खन और ख़सुसन मद्रास में इसका बहुत रिवाज है अक्सर लोम हुक्के और सिगरेट की तरह इसके आदि होते है। और बार बार उसको नाक में चढ़ाते रहते है। ये अम्ल नज़ा दफ़ा करने को किया जाता है। (लेना, सूँघना)

पेषा चाकरी

असील (पु0)– देखो पखर्दा जो ज़ाती ख़िदमत के लिए मखसूस और मुअतबर हो।
ऊपरी काम (पु0)– घर के मुत्तफरिख ग़ैर ज़िम्मेदारान काम काज।
बाँदी (स्त्री)– लौडी, ज़रख़रीद ख़ादिमा।
बुआ (स्त्री)– ददा, बच्चो की निगाह दाष्त करने वाली ख़ादिमा या तर्जुबेकार औरत।
पालकड़ा (पु0)– देखो पखर्दा
पखर्दा (पु0)– आसील पालक कड़ा वो लवारिस या जरखरीद लड़का या लड़की जिसको घर के काम काज और जाती खिदमत के लिए परवरिष किया हो ओर घरेलू खादिमों में सुमार होता हो।
पेष खिदमत/पेष दस्त (पु0)– टहलिया घरवालो के काम में हाथ बाटने वाला या हाथ तले ऊपर का काम (मुत्तफरिख गैर जिम्मेदाराना) करने वाला कमेरा।
टहलिया (पु0)– देखो पेष खिदमत
ठिकाना (पु0)– कमेरो की मुष्तरिख इस्तलाह मुराद लगी बन्धी जगह जहाँ वो अपने मुर्कररा काम या खिदमत अन्जाम देते हो।
ठिकानेदार (पु0)– वो कमेरा जो ख्दिमत गुजारी की मौरूसी या मुस्तकिल जगह रखता हो। कर्ककमेन
जजमान (पु0)– वो आजाद कारोबारी षख्स जिसपर कमेरो या चाकरों के हुकूक अदा करना और बखक़्त उनकी हिमायत और परवरिष वाजिब हो। कमेरो के हिमायती।
चाकर (पु0)– मातेहत ख़ादिम चाक बामायनी पय्या जो अपने मरकज़ में घूमे मुराद वो कमेरा जो आजाद पेषे का अहलन हो या आजाद पेषा न कर पाता हो ओर ये रोजी कमाने का सबसे अदना दर्जा ख्याल किया जाता है। हिन्दी में एक कहावत मषहुर है–
उत्तम खेंती मध्यम व्यापार
निष चाकरी भीख लाचार।
चाकरी (स्त्री)– हाथ तले की खिदमत मातहती।
छोकरा (पु0)– घरेलू अदना खिदमत करने वाला पखर्दा लावारिस लड़का।
छोकरी (स्त्री)– लौडी देखो छोकरा।
ख़ादिम (पु0)– मातहत खिदमत गुज़ार चाकर खिदमती।
खिदमतगार (पु0)– देखो ख़ादिम और चाकर ख़िदमती।
खिदमती (पु0)– देखो ख्दिमतगार।
ख़्वास (स्त्री)– वो खादिमा जो जाति चाकरी के लिए मखसूस और मोअतबर हो।
ददा (स्त्री)– देखो बुआ बच्चों की निगादाष्त ओर रखवाली करने वाली तर्जुबेकार ख़ादिमा।

देहांगी (स्त्री)– कमीरों और पेषावरों की मुषतर्क इस्तेलाह मुराद मुर्कररह रोज़ाना काम या खिदमत जो कमीरे के सुर्पुद की जाए।
कारीगरों का पूरे दिन का एक काम (लगाना, उठाना)।
रोटियाँ (पु0)– वो कमीरा या चाकर जो सिर्फ खाने और कपड़े पर खिदमत करें।
रोज़ीना (पु0)– ख़िदमतगार का यौमिया मुआज़ा ख़िदमत जो उसकी गुज़र बसर के लिए मुर्कर्रर हो।
षार्गिद पेषा (पु0)– देखो पेष ख़िदमत और चाकर।
षागिर्दी (स्त्री)– 1. षागिर्दी पेषा या ख़िदमतगार के बैठने का ठिकाना जहाँ वो हाज़िर रहें।
2 ताजदार दरवाजे की वो संगीन चौकी जिसपर मुहाफिज़े दखाजा या ख़िदमतगार बैठे (देखो जिल्द अव्वल)।
गुलाम (पु0)– ज़र ख़रीद या मफ़तूह ख़िदमतगार जो आजाद न हो।
काम चुकाना (क्रिया)–कमीरे का अपनी मुर्क़रर ख़िदमत अंजाम दे देना या पूरी कर देना।
काम निपटाना (क्रिया)– कमीरे का अपने मुर्कर्रह काम को खत्म कर देना।
करकमीन (पु0)– घर कमीन, घरेलू और जाति ख़िदमत अंजाम देने वाले कमीरे।
कमीरा (पु0)– मेहनती उजरत पर मेहनत, मज़दूरी करने वाले ख़िदमती।
कमीन (पु0)– बस्ती के अद्ना ख़िदमती घटिया और मामूली दर्जे की ख़िदमत अंजाम देने वाले।
लौडी (स्त्री)– देखो छोकरी
मामा (स्त्री)– घर की बड़ी बुढ़ी ख़ादिमा का ख़िताब।

तीसरी फसल
ज़र्राही
पेषा ऐनक साज़ी

बुरसना (क्रिया)– ऐनक के ताल हस्बें ज़रूरत काटना और कोर किनारे घिसकर दुरस्त करना।
बर्नी (स्त्री)– आँख के फफोटे का किनारा पलको की पड
उदाहरण– बर्निया खराब होने से पलके झड़ जाती है।
बैजेबी ताल (पु0)– लम्बातरे ताल देखो ताल।
बैनी (स्त्री)– ऐनक की कमानी का दरमियानी हिस्से जो नाक पर टिका रहता है देखो ऐनक।
भैंगा (पु0)– वो षख़्स जिसकी आँख के ढ़ेले मरकज़ से हटे रहे और पुतलियाँ कौवों की तरह फिरी हुई मालूम हो।
पुतली (स्त्री)– मरदुम, आँख के ढेले के बीच की स्याही या रंगीन घेरा। पुतली आमतौर से स्याह या स्याही माईल होती है। लेकिन बाज़ कौवों में नीली भुरी या षरबती पुतली होती है।
पपोटा (पु0)– आँख के ढेले के ऊपर का पर्दा।
पर्दा (पु0)– पुतली के पीछे की कुदरती झिल्ली जिसपर हर चीज़ अक्स पड़ता है। (फअना)
फलली (स्त्री)– आँख की एक बिमारी जो झिल्ली की षक्ल में तिल्ली पर पैदा होकर उसको ढक लेती है और बिनायी को खो देती है। (पड़ना)
ताल (स्त्री)– ऐनक का षीशा या षीशे देखो ऐनक।

तान (स्त्री)– काड़ी ऐनक की कमानी बगली तार जो ऐनक को टिकाये रखते है। देखो ऐनक
तिरफला (पु0)– तीन फल मुराद हड़ बहेड़ा और ऑवला। जिनका जुलाल आँख धोने के लिए मुफ़ीद होता है।
तिल (पु0)– तेवर आँख की पुतली का मरकज़ जो तील यानि गोल स्याह नुख़ते की षक्ल होता है और यही उसकी वजह तस्मीया है। इस तील पर हर चीज का अक्स पड़ता है और यही सबब बिनाई होता है।
तिल नज़र (पु0)– वो षक्स जिसकी पुतली नीचे को ढलकी रहे या पुतली नीचे करके देखें।
तंग नज़र (पु0)– कोआ नज़र वो षख़्स जिसकी बिनाई महदूद और उस हद से परे की चीज बग़ैर ऐनक की मदद न देख सकता हो।
तेवर (पु0)– देखो पुतली। पुतली की चमक कुत्वते बिनाई (बिगड़ना, खराब होना, जलना)
टेनट (पु0)– आँख के पुतली के ऊपर की मोटी झिल्ली जो सिमला की बिमारी से फटकर पैदा हो जाये ओर लाइलाज रहें (पड़ना)
जला (पु0)– धुन्ध, पुतली के पर्दे पर छा जाने वाले आबी बुख़ारात की ज़रीत जो बुनाई में नुख़्स का बाईस हो (पड़ना, आना)
हर्बे चष्मा (स्त्री)– आँख की खुजली की बिमारी।
चष्मा (पु0)– फारसी लत्ज़ चष्मा बमायनी आँख से चष्मा ऐसे आले से मुराद है जिससे आँख की बुनाई को तख़्वियत पहुँचे (लगाना)।
चुन्दा (पु0)– वो षख़्स जिसकी पुतली कमजोर हो और तेज रोषनी में आँख अच्छी तरह न खोज सकें।
चुन्दियाना (क्रिया)– पपोटे बीचकर आँख खोलना।
जोड़ी (स्त्री)– ऐनक की कमानी में जो ताल बिठाने के हल्के या तालों के घर। देखो ऐनक
चिपड़ (पु0)– आँख का मैल या खराब रत्तूबत जो आँख की कमजोरी या आषोब की वजह से निकले (आना, निकलना)।
धुन्ध (पु0)– देखो जाला
धुनैली ऐनक (स्त्री)– धुप में लगाने की ऐनक स्याही माईल रंग के तालो की ऐनक।
ढलका (पु0)– आँख के एक मर्ज़ का जिसमें टीस के साथ पानी झरता है और बिनाई को ख़राब करता हो।
ढ़ेला (पु0)– षब्बे कोर आँ ख के एक मर्ज़ का नाम जिसमें मरीज की आँखों में अन्धेरा आ जाता है और रात को बहुत कम दिखायी देता है। (आना)
रंग–ए–ख़ोरा (पु0)– बिनाई के एक नुख़्स का नाम जिसमें बाज़ मुखतलिफ या हल्के गहरो रंगों में फ़र्क नही मालूम नही होता।
रूहे/रोये (पु0)– आँखों के पपोटे या बर्नियों की एक बिमारी जिसमें पपोर्ट की एक झिल्ली में बारीक दाने हो जाते है जिन से आँख के ढेले को नुकसान पहुँचता है और बाई से तकलीफ होते है (पड़ना)
सुदाई (स्त्री)– ऐनक के तालो को सही करने का अमल करना।
षब्बे कोर (पु0)– देखो रतौंदा
ताकि़ (पु0)– वो षख़्स जिसकी एक आँख की पुतली ुिरी हुई हो यानि मरकज़ पर न हो और आँख को छोटा करके यानि दबा कर देखें।
ऐनक (स्त्री)– अरबी लत्जत्र में बमायनी आँख से ऐनक ऐसे आले से मुराद है जो बिनाई को तख़्वियत पहुँचाये। चष्मा (लगाना)

ऐनक साज़ (पु0)– ऐनक बनाने वाला माहिरे फ़न।
फ़ील चष्मा (पु0)– वो षख़्स जिसकी आँखें मामूल से ज्यादा छोटी हो।
क़ाड़ी (स्त्री)– देखो तान
काना/काँड़ा (पु0)– वो षख़्स जिसकी एक आँख जाती रही हो या उसमें टेनस हो और दिखाई न दे।
कज नज़रा (स्त्री)– वो षख़्स जो पुतली तिरछी करके या गिरा के देखें।
कमानी (स्त्री)– ऐनक के ताल ब्ठिाने का खाना या ऐनक के षीषों का घर देखो ऐनक लगाना।
कन्जा (पु0)– नीली पुतुलियों वाला षख़्स।
कोता नजर (पु0)– देखो तंग नज़र।
कोया (पु0)– आँख का कोना कटना। कोए में खराष पैदा होना या जख़्म आना।
खट्टक (स्त्री)– आँख दुखने का दर्द होना।
गुरबा चष्मा (पु0)– वो षख़्स जिसकी आँख की पुतली रंग मिलता जुलता हो।
गोहान्जनी (स्त्री)– आँख के पपोटे पर फुन्सी निकलना।
घरी (पु0)– आँख के दर्द का लेप (अफ़ीम, रसूत, फिटकरी का मुरर्कब)
मोतिया बिन्द (पु0)– आँख की बिमारी का नाम जिसमें तिल के ऊपर पानी की तरह मुन्जमित माद्दे का पर्दा या छिलका बन जाता हैजिससे बिनाई जाती रहती है। अमल जराई से जब इस पर्दे को निकाल दिया जाता हैजो फिर दिखाई देने लगता है।
नखूना (पु0)– आँ की ढेले की बिमारी जो ढेले के पर्दे में खून आ जाने का नतीजा होही है और ढेले की सफेदी में स्याही माईल सूर्ख़तिल की षक्ल दिखाई देती है। (होना, पड़ना)
नज़र (स्त्री)– निगाह बिनाई बिगड़ना बिनाइ में फर्क आना देखने में खराबी पैदा होना (तिरमिराना) बिनाइ कमजोर होना और निगाह के सामने धब्बे या जर्रे हरकत करते मालूम होना। (टिकना, ठहरना, जमना) किसी चीज़ को ग़ौर से देख सकना। निगाह मिलाये रखना (मिलाना) किसी चीज़ पर निगाह डालना।सामने की चीज़ को निगाह भर कर देखना (मोटी होना) बिनाइ कमजोर होना। करीब की बारीक और छोटी चीज़े धुधली नज़र आना।
निगाह (स्त्री)– देखो नजत्रर

पेषा कान कारी

आँकड़ी (स्त्री)– कान के अन्दर की मैल निकालने की मुड़े हुए सिरे की सिलाई (डालना)।
ऊँचा सुनना (क्रिया)– सुनाइ की नुख़्स की वजअ मामूल से ज्यादा भारी और तेज़ आवाज सुनाइ देना।
बोजा/बोचा (पु0)– वो षख़्स जिसके कान का बैरूनी हिस्सा सिकुड़ा हुआ गाँठ की षक्ल हो।
कहावत– नाक की नकटी बोजी कान
पालक बैठ मँगावे पान।
बहरा (पु0)– वो षख़्स जिसको सुनाई न दें।
पर्दा (पु0)– कान के अन्दर आवाज महसूस करने वाला बैज़वी षक्ल का बारीक हड्डी का खोल (फटना)
फुरेरी (स्त्री)– कान के पर्दे के अन्दर दवा पहुँाने की सिलाई।
टैनट/टैनटी (पु0)– कान के पर्दे के करीब पैदा हो जाने वाला ऐ किस्म का ग़दूद जो समाअत को नुकसान पहुँचाता है। (पड़ना)
चपनी (स्त्री)– कान के सुराख के ऊपर का ढ़क्कन जो तिकोनी षकल का होता है।

छिलका (पु0)– कान के पर्दे के अन्दर की बारीकी झिल्ली जिसकी षक्ल कान के दर्द का बाइस होती है।
सिलाई (स्त्री)– कान को अन्दर से साफ करने का सुऐ की वज़अ का औजार (करना, डालना)।
कान बन्द होना (क्रिया)– किसी आरज़ी या मुस्तक़िल सबब से कान की सुमाअत में नुक्स आना। बहरा हो जाना।
कान बहना (क्रिया)– किसी आरज़े की वजअ कान के अन्दर से मवाद रत्तूबद निकलना रहना।
कान देखना (क्रिया)– कान का इलाज करना। कान का दुःख पहचानना।
कान सूतना (क्रिया)– कान के पर्दे को पिचकारी से धोना और बाहर से मालिष करना।
कान कुरेदना (क्रिया)– कान के पर्दे की मैल निकालना।
कानकार (पु0)– देखो कन्नमल्लिया।
कम सुनना (क्रिया)– देखो ऊँचा सुनना नक्ल समाअत।
कनफड़ा (पु0)– वो षख़्स जिसके कान का बैरूनी हिस्सा मामूल से ज़यादा लम्बा चौड़ा हो।
कनमलिया (पु0)– कानकार कान के मामूली दुःख की देखभाल और सफाई करने वाला षख़्स।
गुन्म (पु0)– बहरापन कान में टेनर होने का वजअ पर्दे में जस होना।

पेषा दनदान साज़ी

बत्तीसी (स्त्री)– इन्सानी दाँतो का मजमूई नाम जो सोलह ऊपर, सोलह नीचे के जबड़े में कुल बत्तीस (32) होते है। (बन्द होना) किसी बिमारी की वजह से जबड़ा न खुलना (टूटना और गिरना) उम्र या बिमारी की वजअ पूरे दाँत उखड़ जाना (लगाना और चढ़ाना) मसनूई दाँतों की बत्तीसी इस्तेमाल करना या लगाना।
प्लास (पु0)– जन्तर, चोच की षक्ल का दाँत उखेड़ने का औजार। मोचना, सनसी, ज़न्बूर।
पोपला (पु0)– वो आदमी जिसके मुँह में एक भी दाँत न हो।
जबड़ा बाँधना (क्रिया)– दनदान साजो की इस्तलाह मुराद मसनूई बत्तीसी लगाना।
जड़ (स्त्री)– दाँत का वो नुकीला हिस्सा जो मसूड़े के अन्दर जमा रहता है। (छोड़ना) दाँत की जड़ का मसूड़े से बाहर निकल आना दाँत का हिलना।
जन्तर (पु0)– देखो प्लास दाँत उखेड़ने का मोचना या सनसी।
चम्मचा (पु0)– मसनूई दाँत या बत्तीसी बनाने का खाँचा या के नडा।
चोका (पु0)– कुचलियों के बीच में सामने के चार ऊपर और चार नीचे के दाँत (टूटना, गिरना, लगाना, बाँधना)
छिदरे दाँत (पु0)– वो बत्तीसी जिसके दाँत बाहम मिले हुए न हो यानि उनके बीच झिरियाँ हो।
खर्राद (स्त्री)– रेती दाँत घिसने और हमवार करने का आहनी औज़ार।
दाँत बाँधना (क्रिया)– हिलते हुए दाँत को दूसरे बगली दाँतों के साथ तार की बन्दिष करना। मसनूई दाँत लगाना।
दाँत बजना (क्रिया)– षिद्द की सर्दी या किसी बिमारी वजअ जबड़े की हरकत बेकाबू हो जाना जो दाँत बनजे की वजअ होती है।
दाँत बैठाना (क्रिया)– दाँत का किसी चीज में गढ़ जाना।
दाँत चबाना (क्रिया)– ग़फलत या नीद में बत्तीसी का हरकत करना या दाँतों का बाहम रगड़ा खाना।
दाँत लगाना (क्रिया)– 1. किसी चीज पर दाँत की नोक चुभोना।

2. मसनूई दाँत चढ़ाना।
दाँत गिरना (क्रिया)– उमर या दाँतों की बिमारी की वजअ से दाँतों का उखड़ जाना।
दाँत निकालना (क्रिया)– 1. किसी खराबी की वजअ दाँत उखेड़ देना।
2. दाँत खोलना यानि दाँतों को होठों के बाहर करना।
दन दान साज़ (पु0)– मसनूई दाँत बनाने और दाँतो की बिमारियों का ईलाज करने वाला माहिरे फ़न।
दूध का दाँत/दूध के दाँत (पु0)– कच्चे दाँत वो दाँत जो दूध पीने की उम्र में निकले और लड़कपन में गिर जाये टूट जाये और उनकी जगह दूसरे निकले।
दाड़ (स्त्री)– ग़िजा चबाने के चपटे सिरों को पिछले दाँत।
रीख़ (स्त्री)– दो दाँतो के दरमियान की झिरी जो अमूमन मसूड़े की खाल से ढकी या भरी रहती है। (छोड़ना)
रीख़ बन्द दाँत (पु0)– छिदरे दाँतो की जद यानि वो दाँत जिसमें झुर्रियाँ न हो।
रेती (स्त्री)– देखो ख़र्राद
रेगमाल (पु0)– दाँतो को जिला करने का औजार।
साँचा (पु0)– मसनूइ दाँत बनाने का केनड़ा या फर्मा (जेना)
सन्दस जन्तर (पु0)– मोचना दाँत निकालने का ज़मूरा जो मुख़तलिफ षक्ल का होता है देखो जन्तर।
सुहानी (स्त्री)– देखो सन्दस जन्तर
अक्ल दाड़ (स्त्री)– जबड़े के सिरों का दाँत (दाड) जो षुरू जवालनी में निकलता है यानि सयानी उम्र में और यही उसकी वजह तस्मिया है।
कुचली (स्त्री)– चौके के सिरों यानि बगलियों का नोकीला दाँत देखो चौका।
कमानी (स्त्री)– मसनूई बत्तीसी की बगलियों की बनी हुई तान।
कीला (पु0)– खूँटा कुचली के बराबर का नुकीला दाँत देखो कुचली।
खुलड़ी (स्त्री)– सामने के दो दाँतों के मामूल से चौड़ी रीख़।
खूँटा (पु0)– देखो कीला।

पेषा दस्तकारी (जर्राही)

आबला (पु0)– छाला एक किस्म की जिल्दी बिमारी जिसमें ख़ाल के ऊपर की बारीक झिल्ली में सफरादी असर से मुत्तासिरा मुक़ाम पर पानी की षक्ल का रक़ीफ माद्दा भर आता है। तेज़ हरारत या रगड़ के असर से भी वे कैफ़ियत पैदा हो जाती है। आबले को उर्दू में छाला कहते है। और जब ये मामूल से बड़ा होता है तो फ़ोला कहते है। और फलका कहलाता है। (आना, पड़ना, होना)
उच्छू (पु0)– पानी या किसी चीज का फनदा जो हलक यानि साँस की नली (साँसनी) के मुँह में पड़ जाए (होना, लगना)
अडैठ (पु0)– राजफोड़ा, सरतान, रगो या नसो में पैदा होने वाला फोड़ा जिसका सबब मर्ज जिया बत्तीसी होता है इस फोड़े का माद्दा बहुत जहरीला होता है और खून में चारों तरफ केकड़े (सरतान) कि वँगो की तरह फेलता है और इसी लिए इसको सरतान और केकड़ा भी कहते है।
आक़लाँ (पु0)– पलो दौड़, मर्ज़ फ़ियल, पाका वरम या माद्दा जो ऊपर को चढ़े।
आँत उतरना (क्रिया)– फिदक बावजह कमज़ोरी आसाफ आँत के हिस्से का चड्डे की खाली या फोते के खोल में आ जाना।

ऑग (पु0)– सर और वॅगो के दरमियान का हिस्सा जिस्म आम बोलचाल में पूरा जिस्म मुराद होता है (दुखना)
आप जन्तर (पु0)– परिन्दो की चोच की षक्ल का जर्राही आला जो तादाद में छोटी बड़ी पच्चीस (25) बजअ की चोचों के मुषाबे होते है।
उपहार (पु0)– नफ़क़ मैदे की फूलने जो बदहज़मी या उसकी हरकत में फ़र्क आने से पैदा हो।
औरेब चीरा (पु0)– फोड़े या रंग़ वगैरह पर नषतर से तिरछा दिया हुआ षिग़ाफ जो अस्तकार किसी मसलेहत से देता है देखो चीरा।
अन्तरमुख (पु0)– जख्म के अन्दर से मवाद निकालने का जर्राही आला।
इन्दमाल (पु0)– ज़ख़्म के भर आने की हालत या सूरत (होना)।
उॅगल बीड़ा (पु0)– देखो बेसिला।
अंगोर (पु0)– जर्राहों की इस्तलाह मुराद जख्म का नया गोस्त (बॅधना) ज़ख्म में गोस्त भर आना मवाद निकलना बन्द होना।
औरंगजेबी (स्त्री)– पिन्डली या बाँह का फोड़ा जो मामूल से बड़ा फैलाव में ज्याद ओर भरने में देर तलब होता है। किसी ख़ास वजह से जर्राहों में औरंगजेबी मषहुर हो गया।
ओंलमा (पु0)– आग या पानी से जले हुए का ज़ख्म जिसकी खाल जलकर निकल गयी हो फदफदाया हुआ जख्म (होना)।
ओगना रोग (पु0)– रेजनी बिमारी वो मर्ज़ जो आहिस्ता आहिसता इन्सान की सेहत को खराब करता रहें।
अहार जा (पु0)– मसाने से पथरी या जिस्म से रसौली।
1. जरिये अमल जर्राही निकालने का तरीका।
2. जिस्म के अन्दर के फ़ासिद माद्दे को निकालना।

ऐखना (क्रिया)– सिलाई से मसाने के अन्दर की पथरी मामूल करने का तरीका। सिलाइ से मसाने की पथरी प्वेल कर मालूम करना।
बाराबारी (स्त्री)– भैसिया, जोक जो आम जोकों से बड़ी और सख्त से सख़्त जिल्द में मुँह गड़ो कर खून चूस लेती है।
बाँसा फिरना (क्रिया)– नाक के सिरे का टेढ़ा होना जो मरीज की इन्तिहाई कमजोरी की अलामत होती है और मुराद मरीज का आखिरी वक़्त यानि मरीज का कुर्बे मौत लिया जाता है।
बाल तोड़ (पु0)– बाल की जड़ में खाल के अन्दर पैदा होने वाली फनसी या फोड़ा जो बाल की जड़ में मवाद आने से पैदा हो जाता है। (होना)
बाल खोरा (पु0)– जिल्द की एक बिमारी जो फ़सिद मद्दे के पैदा होने की वजह से होती है और जगह जगह से सर या दाड़ी के बाल गिरा देती है। (लगना)
बाँछियाँ (पु0)– होठो के जोड़ की फुंसियाँ या बाँछों के पकने की बिमारी।
बट्ट (स्त्री)– बदन में गठ्इल उठने की बिमारी जो जिगर की खराबी या बादी बवासीर के असर से होती है और खुद बखुद जाती रहती या दवाईयाँ के लेप लगाने से बैठ जाती है। (आना, निकलना)
बद :– जॉग या चड्उे का फोड़ा ये फोड़ा खून की ख़राबी या गर्मी की वजह चड्डे का वदूद पकने से होता और निहायत तकलीफ देता है। (निकलना)
बद्दी (स्त्री)– जिस्म पर बेत, कोड़े या इसी किस्म की किसी चीज की मार का निषान (पड़ना और उठना)।

बद् गोष्त (पु0)– जख़्म का ग़ैर मामूली तौर पर बड़ा हुआ गोष्त जिसपर खल न आये और जख़्म भरने न पाये (आना, निकलना)।
बुरा हाल (पु0)– मरीज की इलालत का हद से बड़ जाना और करीबुल मर्म हो जाना।
बरष (स्त्री)– बरस का गलत तल्लफुज़। छेप की किस्म की जिल्द की एक बिमारी जिसमें जिल्द पर सफेद या सुर्ख और स्याही माईल नीलगो चट्टे, धब्बे पड़ जाते है।
बरस (स्त्री)– बहक, अबैज, कोड़ जिल्द पर सफेद दाग पड़ जाने की बिमारी जो खून की ख़राबी के सबब पैदा होती है।
बुर्की (स्त्री)– ज़ख़्म को खुष्क करने का सफूफ या ज़ख़्म पर छिड़कने की खुषक पिसी हुई दवा (बुरकना)।
बिसरापना (क्रिया)– ज़ख़्म का माद्दा दबा कर और सोन्त कर निकालना।
बिसिला/बेसला (पु0)– ओंगल बेड़ा ओंगली के नाख़न की हड्डी के अन्दर से निकलने वाली निहायत तकलीफ़दे ज़हरीली फनसी जो मवाद की गाँठ होती है और चीरा देकर निकाली जाती है।
बन्धन (पु0)– रबात देखो चपनी।
भपारा (पु0)– ज़ख़्म दर्द या वरम को भाप से गरमाई पहुँाने का अमल जो हस्बे जरूरत दवा या ख़ाली पानी का होता है। (देना, लेना)
भेदना/बैधना (क्रिया)– फोड़े या फुन्सी को नष्तर से चीरना षिगाफ़ देना, फोड़े का मुँह खोलना।
भौसिया जोंक (स्त्री)– देखो बारा।
भौसिया दाद (पु0)– बड़े फेलाव का खुष्क दाद देखो दाद।
पाछना (पु0)– पीछे लगाने का नष्तर देखो सैंगी।
पष्ना (पु0)– एड़ी का दर्द जो बड़ कर चलने फिरने से माजूर कर देता है।
पित्त (पु0)– सफरादी माद्दा।
पित्ती (स्त्री)– षरा जिल्द का एक मर्ज़ जो खून में पित्त (सिपारा) के असर से खाल पर ददोडो की षक्ल में पैदा होता है इसमें खुजली और जलन भी पैदा होती है। ज़्यादती की सूरत में पानी रिसने लगता है। (उछलना)
पथरी (स्त्री)– मसाने या गुर्दे के अन्दर पेदा हो और असंग रोज़ा पड़ना।
पयर (पु0)– चुनचुनो की किस्म के लम्बे किड़े जो हाज़मे की ख़राबी की वजह से माद्दे में पैदा हो जाती है।
पट्टी (स्त्री)– 1. ज़ख़्म या किसी अंजु को बाँधने की कपड़े की चौड़ी धज्जी।
2. टूटी हुई हड्डी पर बाँधने की पतली तख़्ती।
3. लेप की पट्टी देखो प्लास्टर (चढ़ाना)।
पुर्वा/पुर्वाई (स्त्री)– जर्राहो की इसतलाह मुराद ठण्डी और बरसाती हवा जो पूरब (मषरिक) की तरफ से चले। ये हवा बाज़ ज़ख़्मो को नुकसान पहुँचाती और उनमें दर्द पेदा करती है।
पड़ौदी (स्त्री)– ऑत की अन्दरूनी सतह पर की बारीक झिल्ली वरम हो जाने से एक किस्म का ज़हरीला बुख़ार हो जाता है। किसी जिल्द मर्ज़ की वज़अ खून निकालने के लिए जिल्द पर नष्तर से कचूके देने का अमल। पहले मुत्तासिरा जगह पर सिंगी से खीच कर खाल को उभारा जाता है फिर उसको नष्तर से कचोक कर दोबारा सींगी से खून खीचा जाता है। (लगाना)
पछुवा/पछुवाई (स्त्री)– जर्राहो की इस्तलाह मुराद खुष्क हवा जो ज़ख़्म के लिए मुफ़ार्द हो (पछम की तरफ से चलनी वाली हवा)।

पसवाड़ (पु0)– फेफड़ो में वरम और बलगम पैदा होने वाली बिमारी। नमोनिया की किस्म का मर्ज़ ज़ातऊलजनब।

पकदाद (पु0)– दाद की किस्म की जिल्द बीमारी देखो दाद।

पुलटिस (स्त्री)– फोड़े का मवाद खारिज करने या तहलील होने का अलसी का लेई की तरह बनाया हुआ लेप लगाना या बाँधना।

प्लास्टर (पु0)– पट्टी अंग्रेजी लत्जत्र प्लास्टर का उर्दू तल्लफुज़ मुराद दवा की पट्टी या लेप की पट्टी जो फोड़े या दर्द के मुकाम पर लगाई जाये उर्दू में पट्टी चढ़ाना कहते है। देखो पट्टी फिकरा–3

पिंजरा (पु0)– देखो हाड़ जिस्म में सीने का हिस्सा।

पन्चूरा (पु0)– रसौली की किस्म की बीमारी जो ख़ाल के अन्दर जिस्म के मुख़तलिफ़ हिस्सो में गोष्त के साथ की झिल्ली में पानी रूक जाने से डुमैल की षक्ल पैदा हो जाती है।

पिन्गा (पु0)– फैन्गड़ा वो षक्स जिसकी पिन्डलियों की नलियाँ (हड्डियाँ) पैदाइष्‍ टेढ़ी हो।

पूरब करम (पु0)– ईलाज हिफ्ज़े माँ तकदम किसी मर्ज़ के होने के अन्देषे पर उसके रूकने का इलाज।

फाया (पु0)– ज़ख़्म के मुँह पर लगाने को मरहम की छोटी सी पट्टी जो उसको सब तरफ से ढ़क ले (धरना, रखना, जमाना, लगाना)

फफोला (पु0)– फलका देखो आबला फिकरा–2

दिल के फफोले जल उठे, सीने के दाग से।

इस घर को आग लग गयी,घर के चिराग से ।। (फोहना)

उर्दू मुहावरा मुराद जली कटी बाते करना गम व गुस्से की बड़ास निकालना।

फुरेरी (स्त्री)– तिनके या सिलाई के सिरे पर लिपटा हुआ रूई का फोया या सिलाई जिसके मुँह पर रूई का फोया लिपटा हो और ज़ख़्म वगैरह पर दवा लगाने को इस्तेमाल की जाये फेरना।

जिस्म की इस्तदारी हरकत (आना, लेना)

फलका (पु0)– देखो फुोला और आबला।

फुन्सी (स्त्री)– फोड़े के किस्म की जिल्द की बिमारी जो खून की ख़राबी की वजअ खाल में पैदा होती है। जिल्द का फाासिद माद्दानिकालने का ज़ख़्म (निकलना, उठना)।

फोड़ा (पु0)– जिस्म के फाासिद माददे का बड़ा और गहरा ज़ख़्म जो गोष्त में पेदा होता है।

ताल जन्तर (पु0)– ताड़ के पत्ते की षक्ल का आला जर्राही।

तलवा भेद (स्त्री)– एक ज़हरीला किस्म का फोड़ा जो तालू पर बड़े दल की स्याही माइल रंग की फुन्सी षक्ल पैदा होता है। और बहुत जल्द बड़कर उसका असर गर्दन तक आ जाता है, और उस वक्त लाइलाज हो जाता है।

तलील (पु0)– देखो मस्सा

तबोड़ी (स्त्री)– देखो रसूली

तिल (पु0)– खाल के ऊपर पैदा हुआ व तबई स्याह नुख़ता जो जिस्म के हर हिस्से पर निकलते है बाज़ देर पा होते है बाज़ जल्द मिट जाते है। बाज़ लोगो के सफेद और सुर्ख तिल भी निकलते है।

तोमड़ी (स्त्री)– महाजम नारी पछने से खून खीचने का सेंगी की वजअ का जर्राही आला।

तूनस (स्त्री)– प्यास की बिमारी (लगना, होना)

टड़ (पु0)– बेपन्जे का पूचा कलाई जिसका पन्जा कट गया हो या काट दिया गया हो।

मुन्डा (पु0)– वो षख़्स जिसका एक या दोनो हाथ कटे हुए हो।

टेटुआ (पु0)– हंजरा, सासनी (नरख़रा) का मुँह जो खाने की नली से मिला रहता है।
टीस (स्त्री)– ज़ख़्म का दर्द जो ज़ख़्म के अन्दर हो (होना)
ठिकोना (स्त्री)– बैसाखी लगड़े लुले को चलने में सहारा देने वाली लकड़ी। जानकनी (स्त्री)– वक़्त–ए–निज़ा सुकरात जान निकालने की हालत।
जाँग (पु0)– जिस्म का नाफ से नीचे का हिस्सा मुराद पूरा निचला धड़।
जावरसिया (पु0)– देखो चैपिया
जर्रा (पु0)– जिल्दी इमराज़ फोड़ा फुन्सी और ज़ख़्म का इलाज करे नेज़ जिस्म के किसी अंजु को हस्बे जरूरत काटने चीरा देने या फसद खोलने वाला माहिरे फन, दस्तकार जर्रा को इस्तलाहन दस्तकार कहा जाता है और उसके फ़न को दस्तकारी।
जर्राही (स्त्री)– सत्तर करम दस्तकारी जर्राही का पेषा या काम देखो जर्राही।
जमरा (पु0)– देखो सुर्ख़ बादा।
जन्तर (पु0)– सरसला दाँत तीर का फल और पथरी निकालने का ज़म्बूर की षक्ल का जर्राही आला। जन्तर एक आम इस्तलाही है जो मूचने, चमटे या सड़सी की वजअ के आलात के लिए इस्तेमाल होती है।
जनीव (पु0)– दाख़स गोष्त से नाखून मिलाये रखने वाली झिल्ली की बारीक कोर या गोट जो नाखून की जड़ पर जीम रहती है (निकालना, फअना, पकना)
जोंक (स्त्री)– केचुए की किस्म का लम्बोत्तरी थैली की षक्ल का एक आबी किड़ा जो तीन चार जात के होते है और मुख़तलिफ नामों से मौसूम किये जाते है। चूके फितरतन ये खून चुसने वाला कीड़ा है और हैवान या इन्सान की खाल पर मुँह गड़ो कर खून चूस लेता है। इसलिए जर्राह मरीज़ के जिस्म के ख़ास मुक़ामात का फासिद खून निकालने के लिए जोंक से काम लेते है।
जोंकिया (पु0)– जिस्म का फासिद खून निकालने के लिए जोंके रखने और उनसे काम लेने वाला षख़्स।
झाजन/झांजन (स्त्री)– हाथ पेर की उँगलियों की घायों की खुजली जिसमें छोटी छोटी फुन्सियाँ निकल आती है। और उनमें से मवाद रिसता है।
झाई (स्त्री)– जिल्द की बिमारी जो खून की ख़राबी की वजह अकसर मुँह पर पैदा होती है पहले दर्ज में स्याही माईल सूर्ख व नीले धब्बों की षक्ल होती है फिर बढ़कर दूसरे दर्जे में सूर्ख और स्याह नुख़तो की सूरत हो जाती है। इस हालत को जर्राही इस्तलाह में ब्रुष कहते है। देखो ब्रुष।
तीसरे जर्दे में जिल्द पर ज्यादा ख़राब किस्म के धब्बे हो जाते है। मर्ज़ का ये दर्जा इस्तलाहन नमष कहलाता है।
झुलसा (पु0)– देखो चरक
झन्दा (पु0)– चीरा दिया हुआ फोड़ा।
झोंज (स्त्री)– खुष्क किस्म की खुजली जो सिफरा के असर से जिल्द में पैदा हो जाये (होना)
चपनी (स्त्री)– बन्धन, घुटनो के जोड़ के ऊपर की नर्म किस्म की हड्डी जो उसपर बतौर ढक्कन होती है और जोड़ पर बन्धन का काम देती है इसलिए उसको बन्धन भी कहते है।
चिट (स्त्री)– नाखून के किनारों की खाल के ऊपर की बारीकी झिल्ली जिसके उखड़ने या चिटक जाने से तकलीफ होती और नाखून को नुकसान पहुँचाता है।
चरक/चरका (पु0)– झुलसा किसी नोकदार चीज़ के चुभने का छोटा सा ज़ख़्म या आग से झुलसने का हल्का सा निषान। झुलसने का दाग़।

चुल (स्त्री)– देखो कु लन।
चमक (स्त्री)– ज़ख़्म के अन्दर रूक रूक कर उठने वाला दर्द (होना) देखो टीस।
चुनचुना/चुनचुने (पु0)– हाज़मे की ख़राबी की वज़अ माद्दे के अन्दर या आँतो में पैदा हो जाने वाले तागे की षक्ल सफेद रंग के बारीक छोटे कीड़े जो आतौर से बच्चो को होते है।
चूफाक चीरा (पु0)– फोड़े पर चपीले (ृ) की शक्ल का लगाया हुआ शिगाफ (चीरा)
चैपिया/चेपिया (पु0)– जादर सिया छोटी छोटी फनिसयाँ निकलने की बीमारी जिसमें से चिपचिपा माद्दा निकलता और उससे दूसरी फन्सियाँ निकलती ओर फैलती है। और यही उसकी वजह तसमिया है। ये बीमारी आमतौर से बच्चो को होती है।
चीरा (पु0)– दस्तकारी अमल जर्राही सिग़ाफ़ फोड़े या किसी जिस्म के किसी में इलाज की ग़र्ज़ से अमल जर्राही षिग़ाफ फोड़े या जिस्म में किसी हिस्से में इलाज की ग़र्ज से निष्तर से षिग़ाफ़ लगाने का अमल (लगाना, देना) फोड़े को निष्तर से खोलना।
चीरे ख़ाना (पु0)– अमल जर्राही (दस्तकारी) करने का मकान या कमरा।
छाला (पु0)– देखो आबला। फिकरा–2
छेप (स्त्री)– झाइ की किस्म का एक मर्ज़ देखो झाई इसमें जिल्द पर छोटी छोटी सफेद बुन्कियों जैसे धब्बे पड़ जाते है इसके इलाज के लिए फसद खुलवाना मुर्फ़ाद होता है। अगर गौर न किया जाय तो मर्ज़ बढ़ जाता और बरस की षक्ल इख्तियार कर लेता है।
हालत गैर (स्त्री)– देखो बुरा हाल।
हजामत (स्त्री)– अरबी लत्ज़ बमायनी पचने लगाकर सैंगी से ऊन खीचना (देखो पचना) उर्दू में लत्ज़ हजामत का मफ़हूम ख़त बनाना यानि सर या दाढ़ी के बालों की छाट कर इस्तलाहन करना होता है।
हजजाम (पु0)– हजामत करने वाला। देखो हजामत
ख़जरा (पु0)– देखो टेटुआ।
ख़तना (स्त्री)– अजु तनासुल का घुँघट यानि उसके मुँह को दिपाने वाली खाल के काटने का अमल जो मुसलमानो में इस्लाफ़ का तरीका और एक मज़हबी फ़रीजा समझा जाता है जिसको उर्दू में इस्तलाहन मुसलमानिया कहते है (करना, होना)
खुराज (पु0)– एक किस्म के फोड़े का नाम जो निहायत तकलीफदें और दर्द वाला होता है।
ख़नाज़ीरे (पु0)– देखो कण्ठमाला
दाख़न (पु0)– नाखून की कोर और गोष्त के जोड़ (जनेव) का वर्म जिसके बड़ने और पक जाने से नाखून गिर जाता है।
दाद (पु0)– ख़ारिज की किस्म की जिल्द की एक बिमारी जो चट्टो (धब्बों) की षक्ल जिल्द पर कही कही पैदा हो जाती है। बाज़ में छोटे छोटे दाने निकलते है जिन में सोजष जोती है। और बाज़ स्याह दाग़ की षक्ल खुषक होते है। इनमें झोन्ज होती है ये बढ़ते और फेलते रहते है और इस्तलाहन भैसियाँ दाद कहलाते है।
दबिला (पु0)– दुम्बल की किस्म को फोड़ा मगर उससे ज्यादा बड़ा और बहुत देर में अच्छा होने वाला होता है। देखो दुम्बल
ददोड़ा (पु0)– जिल्द पर कही कही फुन्सी या फोड़े के वज़े के निषान जो जिल्द के खून में सिफरा के असर से पैदा होते है किसी जहरीले कीड़े मसलन पिस्स मच्छर या खटमल के काटने से भी हो जाते है (पड़ना, उठना, आना)
दस्तकारी (स्त्री)– देखो जर्रा और जर्राही।

दल (पु0)– जख्म की सूजन या उसके चारो तरफ का फेलाव जो वरम की वजह से सख़्त हो जाता है।
दुम्बल/दुम्मल (पु0)– ऐसा फोड़ा जिसमें मुँह न बने और मवाद फेलाकर सूजन बड़ जाये उसका मवाद निकालने के लिए चीरा लगाने की ज़रुरत होती है।
दवाली (स्त्री)– जिल्द की रगो में या उसके साथ गुठ्ठल पैदा होने की बिमारी जो सौदा और बलगम की ज्यादती की वजह आमतौर से बाजारों पिण्डलियों और कभी कभी चेहरे पर भी हो जाती है और मुसतक़िल तौर पर रहती है।
देवली (स्त्री)– सेतला की फुन्सियों का कुरण्ड (उतरना)
धॉस (स्त्री)– हलक़ (सासनी) की मामूली ख़राष जो गैर मामूली कसीफ़ हवा में सॉस लेने में पैदा हो (लगना)।
धड़ (पु0)– जिस्म वैग़र सर यानि गर्दन से नीचे का जिस्म।
धूपलियॉ (स्त्री)– गर्मी दाने बारीक़ सुर्ख दाने जो गर्म मुल्को की खुष्क गर्मी और धूप के असर से जिल्द पर निकल आए और यही उसकी वजह तस्मीया है।
ढ़ॉच/ढ़ॉचा (पु0)– देखो पिजरा
ढडी (स्त्री)– राड़ की हड्डी की जड़।
राटेर (पु0)– देखो सुर्ख़ बादा
राज फोड़ा (पु0)– देखो अढ़ेर और सरतान।
रॉघन/राघन बाई (स्त्री)– अरकुननिसा रान की रग का दर्द जो कुल्हे की हड!डी की नोक से षुरु होकर अॅगुठे तक आता है यही उसकी वजह तसमिया है।
रसौली (स्त्री)– खाल के नीचे या जिस्म के किसी हिस्से के अन्दर पैदा होने वाला गूमड़ा जिसमे पानी की तरह का मवाद भरा रहता है। ये गूमड़ा चने के दाने से लेकर ख़रबूज़े तक बड़ा होता है फिराने से फिरता और उसकी चार किस्मे होती है। एक सख़्त किस्म की जिसमे दर्द होता है दूसरी नर्म किसम की, तीसरी नर्म और बेहिस, चौथी स्याही माईल किसी कद्र सख़्त उसको हिन्दी में त्योडी कहते है।
रिन्जना (क्रिया)– मर्ज़ का तदरीजी तौल पर जारी रहना। बिमारी की हालत में फर्क न आना। मर्ज़ और मरीज का उलझे रहना।
ज़बान मोटी पड़ना (क्रिया)– इलालत की ज्यादती और मरीज की क़मजोरी की पजह से ज़बान की कुत्वत गोयाई में फ़र्क आना। बोलना बन्द होना ये हालत बाज़ मरीजों में असखिरी वक्त होती है।
ज़ख़्म (पु0)– घाव बिमारी या कटे की वजह से खल या गोष्त के खराब होने की सूरत (भरना, ज़ख़्म का अच्छा होना, पड़ना, होना) बिमारी चोट या काट से जिस्म में गहरा निषान पड़ना या खाल या गोष्त का फट जाना (फटना) ज़ख़्म का मुँह खराब हो जाना या बड़ जाना (फदफदाना) ज़ख़्म में सड़ाव पेदा होना और मवाद भर जाना (फरेरा होना) ज़ख़्म खुष्की पर आना अच्छा होने पर आना (हरा होना) ज़ख़्म ताजा होना, दुबारा मवाद आ जाना।
सॉस उखड़ना (क्रिया)– कमजोरी या मरने से क़ब्ल सॉस का हसबे ऊपरी सॉस आना उस हालत को सॉस चलना भी कहते है।
सॉस चलना (क्रिया)– देखो सॉस उखड़ना।
सुपारी/सुपयारी (स्त्री)– जर्राहो की इस्तलाह मुराद अजु तनासुल का मुँह।
सतक जन्तर (पु0)– चीरा लगाने का नष्तर जो हस्बे जरुरत छोटा बड़ा 24 वज़े का होता है।

सुर्रा (पु0)– जर्राहो की इसतलाह मुराद ऑत में फुलजे की गाँठ (पड़ना)
सुर्ख़ बादा (पु0)– जुमरा राटेर, जिल्द की बिमारी जिसमें जिस्म पर सुर्ख चट्टे पड़ जाते है। और उसमें खुजली और जलन होती है। मज़ की ज्यादती की सूरत में चट्टों में रत्बूत्त पैदा हो जाती है। और ख़ारिष ज्यादा होती है। इस हालत को नारफारसी कहते है।
सरसला (पु0)– देखो जन्तर
सरतान (पु0)– देखो राजफोड़ा
सन्तर कर्म (पु0)– देखो जर्राही और दस्तकारी।
सकरात (स्त्री)– निज़ा और जान कनी की हालत की ग़षी।
सलाका जन्तर (पु0)– सलाई की वजअ का आला जर्राही जो हस्बे ज़रुरत बारीक मोटा और छोटा बड़ा होता हैं।
सम्भाला (पु0)– मरने से से कुछ कब्ल की हालते सुकून या सकरात का वक़फा जैसे बुझते हुए चिराग़ का सॉस (लेना)
संग ताऊ/संग तावा (पु0)– जिस्म के किसी हिस्से पर वर्म चोट या दुम्बल की गर्म ईट से सिकाई (करना)
सूजन (स्त्री)–वर्म फूलन जोर जिस्म के किसी हिस्से पर आर्जे की वजह से पैदा हो।
सेतला (पु0)– माता फुन्सियों का मुत्ताअदी मर्ज़।
सीसिया (पु0)– ज़ख़्म को टॉके लगाने का अमल (करना)
सैंगी (स्त्री)– सैंगी का चुसनी जो पचनों का खून खीचने या सॉस खीच कर सॉस को उभारने के लिए बतौर आला जर्राही काम आती है (लगाना, खीचना) सैंगी की हवा खीचकर पचनों से खून निकालना या खाल को उभारना।
सैंगीकार (पु0)– सैंगी का अमल करने वाला या सैंगी लगाने वाला पेषावर।
षाफा (पु0)– साफे का ग़लत तल्लफुज।
षरा (स्त्री)– देखो पित्ती
षुर्त (पु0)– देखो पचना
षिगाफ (पु0)– देखो चीरा (लगाना, देना) खाल को नष्तर से चीरना।
साफा (पु0)– षाफा ऑत की सफाई के लिए प्ख़ाने की जगह से पिचकारी देने का अमल यानि पिचकारी के जरिए ऑत धोने का अमल।
कब्ज़ के इलाज के लिए दवा की बत्ती रखने का अमल (दना)
ग़ैर जोहिन्दा (पु0)– वजोहिन्दा फ़ोड़े का माददा जो दवा या बैरुनी ईलाज से ख़ारिज न हो और चीरा देने की जरुरत हो।
फसद (स्त्री)– जिस्म के किसी रग से खून निकालने का अमल जो निष्तर की नोक से रग में षिगाफ लगाकर किया जाता है। फसद का अमल मुख़तलिफ हिससों की रगसे पर किया जात है। और जिन रगों पर किया जाता है। उनके नाम से फसद को मौसूम करते है। जहाँ फसद से काम नही चलता वहाँ जोको और पाचनो से काम किया लिया जाता है। खून की ख़राबी और जिल्दी इमराज़ का ये कदीम यूनानी में फसद के नाम हस्बे जौल है।

1. फसद–उल–बत्ती
2. फसद–उल–उसलिम
3. फसद बासलीक

4. फसद हिबलुल ज़र्रा
5. फसद जबा
6. फसद चहार रग
7. फसद रग सलासा
8. फसद सिर रद्
9. फसद सुरैनी
10. फसद साफ़िन
11. फसद अरिकुन निसा
12. फसद दाजीन
13. फसद हफतनदाम
14. फसद यानतोख़

पहली अमराज़ जेरे नाफ़ के लिए
दूसरी अमराज़ जिगर और तिल्ली के लिए
तीसरी गर्दन से नीचे की तमाम बिमारियों के लिए
चौथी, तीसरी और आठवी फसद का बदल है
पाँचवी अमराज़ आँख के लिए
छठी अमराज दहन और होठों के लिए
सातवॉ अमराज कान और सर के बुख़ारात के लिए
आठवे सर और गर्दन के अमराज के लिए
नवें नाक के अमराज के लिए
दसवें आजाए तनासुन के अमराज के लिए
ग्यारवें रान के दर्द के लिए
बरवें अमराज खुनाक और जुज़ाम और दसा वगैरह के लिए
तेरेवें पूरे जिस्म के अमराज के लिए
चौदहवें आँख की खुजली सुर्खी और ढलके लिए खोली जाती है (खोलना, लेना)

फेलपा (पु0)– पैरों की फुलन का मर्ज़ जो घण्टों तक फेलता है और वर्म की ज्यादती की वज़ह फेल पास से मौसूम किया जाता है।

कुरहा (पु0)– ऐसा ज़ख़्म जिसमें पीप और गड़हा पड़ जाऐ और अच्छा होने में देर लगे।

कुरा (पु0)– देखो बाल ख़ोरा

क़रन्द तेना (पु0)– एक किस्म का आला जर्राही जिसको सरसला भी कहते है। देखो सरसला

कुब (पु0)– गर्दन के नीचे रीढ़ की हड्डी के बाज़ जोड़ो की ख़राबी जिससे वो फूल कर गूमड़े की षक्ल ऊपर उीार आती है और इन्सान की कमर के ऊपर कोहान की सी सूरत बन जाती है।

कुबड़ा (पु0)– वो षक्ल जिसके कुब निकल आया हो।

कपडूता/कपडूती (पु0)– ज़ख़्म या टुटी हुई हड्डी के ऊपर कपड़े की पट्टीयों की बक़ायदा बन्दिष (करना)

कद्दू दाना (पु0)– बद्हजमी की वजह माद्दे में पेदा हो जाने वाले कद्दू के बीज के षक्ल के कीड़े। यही उसकी वजह तसमीया है।

करहाना (क्रिया)– देखो कूलना

कुरन्ड़/खुरन्ड़ (पु0)– ज़ख़्म के मुँह के ऊपर आ जाने वाली पपड़ी या खुष्क छिलका (आना, निकलना)
ककराली (स्त्री)– बगल के अन्दर निकलने वाला दुम्बल
कुलन (स्त्री)– चुल ज़ख़्म के अन्दर होने वाली सिलसिलाहट जिसमें किसी कदर दुःख महसूस हो (होना)
कंठ (पु0)– मनका, हल्क़ का मुँह या कुरकुरी हड्डी का पर्दा जो सासनी के मुँह पर होता हैं।
कंठमाला (स्त्री)– जहरीले माद्दे के गदूद पेदा होने की बीमारी जो एक लड़ी की षक्ल अममन गर्दन की रगो में पैदा होती है और यही उसकी वजह तसमिया है जिस्म के दूसरे हिस्से में भी निकल आती है और महलक होती है।
कनसूआ (पु0)– गलसुआ कान के नीचे जबड़े की हड्डी के सिरे पर निकलने वाला दुम्बल।
कूठा (पु0)– सीने और टॉगो के दरमियान का हिस्सा जिस्म, माद्दा, देखो पेषा दाई।
कोर (स्त्री)– नाखून की बगल या किनारा जो गोष्त से जुड़ा रहता है (पकना) कोर में ज़ख़्म पेदा होना।
कोड़/कोड़ह (स्त्री)– देखो छेप और बरस।
कोलना (क्रिया)– कराहना ज़ख़्म के दर्द या मर्ज की तकलीफ़ से हुनकारा भरना। तकलीफ़ की आवाज़।
कौवा (पु0)– सासनी के सिरे पर लटका हुआ गुत्रदूद की षक्ल का गोष्त (लटकना)
केड़ी (स्त्री)– जोक की एक किस्म का नाम देखो जोंक
केवाड़ी (स्त्री)– सीने की पसलियों का हर एक रुख़
खाज (स्त्री)– खुष्क किस्म की खुजली देखो खुजली।
गट्टा (पु0)– नली की हड्डी का गोल सिरा जो जोड़ पर बाहर को उभरा रहता है। जिस्म के किसी जगह की खाल के सख्त होने का छोटा निषान जो रगड़ या दबाव से पड़ जाता है।
कुज्जीमार (स्त्री)– ऐसी चोट जिसका असर या निषान जिस्म के ऊपर न मालूम हो और अनदर नुकसानदेह हो।
गर्मी दाने (पु0)– देखो धुपलियाँ।
गलसुआ (पु0)– देखो कनसुआ
गन्ज (पु0)– एक किस्म की जिल्दी बीमारी जिसमें सर के बाल पूरे या कही–कही से उड़ जाते है और फिर नही निकलते है।
गंजा (पु0)– वो षख़्स जिसके सर के बाल जिल्द की बीमारी से गिर गये हो।
गुमड़ा (पु0)– सर या जिस्म की किसी हड्डी या जोड़ पर चोट का वरम (पड़ना, उठना)
घाव (पु0)– गहरा ज़ख़्म जो खाल से गुज़र कर गोष्त तक पहुँच जाए (पड़ना)
घाई पकना (स्त्री)– हाथ या पैर की दो उँगलियों को जोड़ की जगह पर ज़ख़्म आना या मवाद पड़ना। (घाई दो उँगलियों के जोड़ का मुकाम)
घुँघरु बोलना (क्रिया)– जर्राहों की इस्तलाह मुराद हल्क़ के बन्द होने की आवाज़ जो मरते वक्त असखिरी सॉसों में पैदा हो।
घोड़ी (स्त्री)– जर्राहो का चिमटे की षक्ल का औज़ार जिससे खतना करते वक़्त खल को पकड़ते है या खल को उसके अन्दर दबा लेते है (चड़ाना) ख़तने की सेहत की तक़रीब यानि ख़तने से सेहत

होने बाद बच्चे को घोड़े पर बिठाकर मस्जिद ले जाते है और इस तकरीब को इस्तलाहन घोड़ी चढ़ना या चढ़ाना कहते है।
घेंघा (पु0)– गिलड़ एक बीमारी का नाम जो गर्दन की खल में एक बड़ी रसौली की षक्ल पैदा हो जाती है। तुज़के जहाँगीरी में इसव बीमारी का नाम बोग़मा लिखा है और बोग़मा घोड़े के पसीने आने की बीमारी को कहते है यहाँ मुराद ऐसा दुम्बल जिंस में पानी भर जाए।
लपक (स्त्री)– हल्क़, ज़ख़्म के अन्दर होक या सॉस की हरकत जो दौराने खून या मवाद के पकने की हालत में होती है। (होना)
लखेदना (क्रिया)– ज़ख़्म को चीरा देकर फासिद माद्दा निकालना।
लंग (पु0)– टॉग की हरकत का नुक्स (करना) किसी आरजेत्र की वजह एक टॉग पर जोर डालकर चलना।
लहसन (पु0)– जिस्म के किसी हिस्से की खल पर पैदाइष्ष सुर्ख़ या स्याह या सफेदी माईल धब्बा जो उॅगली पोर के बराबर हो इस्तलाहन लहसन कहलाता है। इसमे बाज़ भलाई की इलामत समझे जाते है बाज़ बुराई की।
लेप (पु0)– जिस्म के किसी हिस्से के वरम या दर्द पर चिपड़ने की दवा (करना,लगाना)
लिखेनद (पु0)– फोड़े या ज़ख़्म के किसी हिस्से को चीरा देने का अमल।
माता (स्त्री)– सेतला का इस्तलाही नाम देखो सेतला।
महाजन दारी (स्त्री)– देखो लोमड़ी
मरहम (पु0)– ज़ख़्म पर लगाने की लेप की किस्म की दवा (पट्टी करना) ज़ख़्म साफ करना और दवा लगाकर बाँधना।
मरहम अकाला (पु0) ज़ख़्म बड़ाने यानि काट करने वाला मरहम जो बदगोषा को साफ करने के लिए चीरे के बजाए इस्तेमाल किया जाए।
मरहम रादे (पु0)– माद्छे को रोकने वाला मरहम जो बतौर प्लस्तर लगाया जाये।
मस्सा (पु0)– तालील वदूद कि किस्म का दाना जो जिस्म के मुख़्तलिफ हिस्सो में खाल के ऊपर पैदा हो जाता है या पैदाइष्ष होता है। लौंग के दाने से लेकर लहसन के चूए तक बड़ा होता है। बाज़ मससे मुबारक समझे है।
मुसलमानियाँ (स्त्री)– देखो खतना
मनदला (पु0)– नष्तरी किस्म का आला जर्राही जिसका मुँह एक इंच लम्बा ओर दो धारा होता है।
मनका (पु0)– देखो कंठ (ढ़लना) मौत की कमजोरी से कंठ का अपनी जगह छोड़ देना।
मोंहॉसा/मुहॉसा (पु0)– चेहरे की खाल पर फुन्सी की षक्ल के दाने जो उठती जवानी में खून की हरारत की वजह निकलते रहते है।
कहावत– बुढ़े मुँह मुहॉसा लोग देखो तमासा।
मोंच (स्त्री)– हाथ या पैर की किसी हड्डी के जोड़ का अपनी जगह से सरक जाना या खीच जाना।

अॅगूठे के जोड़ निषान (आना, खाना) हाथ या पैर की हड्डी के जोड़ का अपनी जगह से सरकना।

नासूर (पु0)– कुरहा, न भरने वाला ज़ख़्म जो घाव की सतह पर झिल्ली आ जाने की वजह गोष्त को बढने या भरने नही देता और हमेषा रिस्ता और तकलीफ देता रहता है।

वफात हज़रत इकबाल हाषमी है –

जिग़र में कौंम के नसूरे ग़म रहेंगा ये साल।

नार (पु0)– देखो सुर्ख़ बादा
नारू (पु0)– एक किस्म का फोड़ा जो एक आबी कीड़े के पानी में पी जाने से निकल आए उस कीड़े को नारू कहते है। और यही इस फोड़े की वजह तसमियाँ है।
नारी जन्तर (पु0)– नायज़ा लोटे की टोटी की षक्ल का नली की वाज़े का जर्राही आला।
नाल जन्तर (पु0)– नाक कान या किसी रग का मवाद निकलने का मछली के जबड़े की षक्ल का आला जर्राही।
नरकवर चक (पु0)– अत्तरंक ज़ख़्म में से मवाद निकालने का आला जर्राही।
नज़ा (स्त्री)– देखो सकरात
नषजात करम (पु0)– मर्ज़ लौटाने की रोक का इलाज जो दफा मर्जत्र के बाद एहतियात के लिए किया जाए।
नकसीर (स्त्री)– नाक से खून जारी होने का मर्ज़ (फूटना, छुटना)
नमष (पु0)– देखो साई फिकरा न.–2
नमला (पु0)– चिपियें के किस्म की बीमारी (देखो चिपियाँ)
नमला मुताकला (पु0)– चिपियें की किसम की बीमारी जिसमें इब्तिदा में छाला पड़ता है और फिर बढ़कर घाव डाल देता है।
वजहिनद/वजहनद (पु0)– देखो गैर झन्द
वजहेदना (क्रिया)– ज़ख़्म के बदगोष को दवा लगाकर या काट कर साफ करना।
बवासीर के मसो को निकालना।
वज़म (स्त्री)– देखो सूजन (आना, होना)
हाड़ (पु0)– जिस्म का ढ़ाचा
कदोक़ामत जिस्म
हिचकी (स्त्री)– ठसका, सॉस की आमदरफत में रुकावट जो हलक में पैदा हो जाए। (आना, लगना)
हुलुक (क्रिया)– देखो लपक (होना) फोड़े में मवाद पकने की कैफियत।
हुँकारना (क्रिया)– देखो कोलना कराहना
यरधावन करम (पु0)– मर्ज़ को अलामत जाहिर होने या मर्ज़ पैदा होने के बाद इलाज करने का तरीका।

चौथी फ़सल
तकियेदारी
पेषा गवरकनी और अचारच

आँख बनद होना (क्रिया)– मर जाना इन्तकाल करना, गुज़र जाना।
उदाहरण– घर वाले की आँख बन्द होते ही सारा काम दरहम हो गया।
उठावनी (स्त्री)– हिन्दुओं में मुर्दो के वारिस को पगड़ी बाँधने यानि उसका क़ायम मुक़ाम बनाने की रस्म जो तीजेत्र के रोज़ अदा की जाती है। और मुर्दो की राख और हड्डियाँ मुब्तबर्रफ़ मुक़ाम को भेजी जाती है। (होना)
अचारज (पु0)– हिन्दुओं में मइय्यत उठवाने और क्रिया करम् करने वाला षख़्स।

अर्थी (स्त्री)– टट्री (ठट्री) हिन्दुओं में मइय्यत उठाकर ले जाने की हस्बे जरुरत बॉस की बनाई हुई टट्टी।

अरखा (पु0)– देवता पर चढ़ाने के फूल रखने का प्याला।

दक्कन के मुसलमान अर गजा जो अरखा का गलत तल्लफुज है उस प्याले को कहते है जिसमें मइय्यत के सोम के रोजत्र कब्र पर चढ़ाने को फूल और बाज़े खुषबूदार चीज रखी जाती है। यही तरीका हिन्दुओं से मुसलमानो में आया मालूम होता है। चूँकि कब्र पर फूल चढ़ाने को नेक काम ख़्याल किया जाता है इसलिए हर षख़्स जो मइय्यत के सोम में आता है उस काम में हिस्सा लेना अपना एख़लाक़ी फर्ज समझ कर अपने हाथ से दो चार फूल उस प्याले में डाल देता है ताकि कब्र पर प्याला ले जाने औरी फूल चढ़ाने में वो भी षरीक समझा जाए।

अरगजा (पु0)– अरखा का गलत तल्लफुज़ देखो अरखा फिकरा– 2

इजत्रआर (स्त्री)– देखो कफ़न फिकरा–2

अस्त/अस्थी (स्त्री)– देखो फूल

अगूँठे बाँधना (क्रिया)– दम निकलने के फौरन ही बाद मुर्दे की टाँगे साध और बाहम मिली रहने के लिए तरीक़ा अम्ल ताकि लाष ठण्डी होकर टाँगे टेड़ी और एक दूसरे से अलहैदा फेली न रह जाए।

ओढ़नी (स्त्री)– देखो कफ़न फिकरा–3

बर्सी (स्त्री)– पहले साल के खत्म पर मइय्यत की याद की तकरीर जो पूरा सोग उतरने या ख़त्म करने की इन्तहाई मुद्दत समझी जाती है। इस तक़रीर पर अज़ीज़ अक़ारिब जमा होकर मइय्यत के कारोबारी मामलात और तर्के वगैरह की भी तकमील कर देते है। (करना, होना)

बर्सी की याद की रस्म जो साल बसाल की जाए षुमाली हिन्द में इस्तलाहन वासिया कहलाती है।

बिछड़ना (क्रिया)– गवरकनो की इस्तलाह मुराद इनसान का हमेषा के लिए अपनो से जुदा होना। यानि मर जाना इन्तकाल कर जाना।

बग़ली कब्र (स्त्री)– देखो कब्र फिकरा–2

बमान (स्त्री)– हिन्दुओं में मइय्यत को उठाने की एक ख़ास किस्म की बनी हुई अर्थी देखो अर्थी।

बीसवॉ (पु0)– पहले बीस रोज़ के खत्म पर मय्यत की याद की तकरीब जो उसके नाम पे ख़ैरो खैरात करने के लिए की जाती है (करना, होना)

बैन (पु0)– बयान नौहा मइय्यत के हालात बयान करके रोना, मातम करना। लत्जत्र बैन या तो बयान का मख़फ़ फ़िफ़ है अरबी लत्ज़ बैनू नत बमानी जुदाई का उर्दू में इस्तलाही लत्ज़ हो गया है। (करना) मइय्यत के हालात बयान करके मातम करना।

भदरा (पु0)– हिन्दुओं में मइय्यत के वारिस का मइय्यत के उठाने से क़ब्ल सर और दाढ़ी मूँछे वगैरह मुड़वाने की रस्म जो उनके यहाँ मइय्यत के वारिस की षिनाख़्त का एक क़दीम तरीक़ा है (करना, कराना)

भद्दर होना (क्रिया)– मइय्यत के वारिस का भद्रे की रस्म को पूरा करना।

पया (पु0)– देखो कब्र फिकरा–3

पटाऊ (पु0)– देखो कब्र फिकरा–4

पचरषनी (स्त्री)– मोंगा, मोती, सोना, चाँदी ओर ताँबे के अजज़ा जो हिनदुओं में मरते वक्त मुँह में डालते हैं।

पचरस दान (पु0)– हिन्दुओं में मइय्यत के नाम पर दान देने (ख़ैरात करने) की पाँच चीज गुड़, घी, तेल, रुई, नमक मय जोड़ा। इसको क्रिया करम भी कहते है।
पुरसा (पु0)– अज़र ख़्वाही इज़हारे ताज़ियत मइय्यत के वारिसो से हमदर्दी और उनके गम में षिरकत करना। (लेना) मइय्यत के वारिस का रफीक़ो और हमदर्दो के इज़हारों गू को षुक्र के साथ तसलीम करना। (गुन मानना)
पक्की कब्र (स्त्री)– ईट या पत्थर और चूने वगैरह से तैयार की हुई कब्र।
पजंगड़ी दार तावीज़ (पु0)– देखो तावीज फिकरा 2
पिण्ड (पु0)– हिन्दुओं में मुर्दे के नाम पर दान देने के लड्डू जो आमतौर से चावलो के बनाये जाते थे। (दुनिया)
पोट (स्त्री)– देखो कफन फिकरा–2
फूल (पु0)– अस्त (अस्थी) हिनदुओं की इसतलाह मुराद मुरदे की जली हुई राख ओर हड्डियाँ वगैरह जो किसी मुत्तबर्रक़ मुक़ाम को भेजने के लिए जमा कर ली जाऐं।
2. षुमाली हिन्दी के मुसलमानो ने मइय्यत के सोग की मजलिस का नाम फूल रख लिया है जो उमूमन तीसरें रोज़ होती है जिसमें अज़ीज कारिब दोस्त रहबाब इज़हारे गम के लिए षरीफ होते है और मइय्यत के लिए दुआ करते है। कुछ ख़ैर ख़ैरात की जाती और सोग तोड़ा जाता है। यानि मइय्यत के वारिस अपना कारोबार षुरु करते है।
3. दक्कन के म1सलमान मसकोर अल सदर रस्म को ज़ियारत के नाम से मौसूम करते है। इस मौके लिए लत्ज फूल का उनके यहाँ कोई मफ़हूम नही है। (करना, कराना) उदाहरण– आज के अजीज के यहाँ फूलों में जाना था लेकिन न जा सका।
   एक दोस्त का इन्तकाल हो गया परसो उनके फूल है।

ताबूत (पु0)– लाष रखने का संदूक ईरानियों और नुसरानियों में आमतौर से इसका रिवाज है और उसी में लाष दफन की जाती है। (उठाना)
तबारक (स्त्री)– मइय्यत के नाम पर ख़ैरात करने की इस्तलाह और उसका मफहूम मइय्यत की रुह का दूसरी रुहो में षरीक होना लिया जाता है।
3. मुर्दो का मिलना माह षबान (षबरात) की चौदहवी तारीक़ को वाकै होना ख़्याल किया जाता है और वह रोज़े अरफ़ा कहलाता है इालिए इस रस्म को अरफ़ा भी कहते है। इस रोज हलवा या मीठी रोटियाँ पका कर मुर्दे के नाम पर ख़ैरात करते है और इस रोटी को तबारुख़ की रोटी कहते है। (करना)

हिन्दुओं में मजहबन इस किस्म की एक रस्म होती है। जिसको इस्तलाहन कनागत या सरात कहते है।
तुरबत (स्त्री)– मिट्टी का ढ़ेर मुराद कच्ची कब्र या कब्र
तजहीज़ (स्त्री)– अरबी लत्ज़ जहाज़ बमानी समाने सफर से उर्दू में इस्तलाहन तजहीज़ मइय्यत के दफ़्न का सामान करना मुराद लिया जाता है और लत्ज़ तकफ़ीन के साथ मिला कर बोला जाता है।
तजहीज़ व तक़फ़ीन (स्त्री)– गवर कफ़न करना। मइय्यत के दफ़न कफ़न का इन्तज़ाम करना।
तावीज़ (पु0)– अरबी लत्ज़ बमानी पनाह देना बचाव करना। गवरकनों की इस्तलाह उस पत्थर को कहते है जो तुरबत पर रखने के लिए बनाया जाता है। इस तरह की पूरी कब्र को ढ़क ले। तावीज़ मुख़लिफ़ षक्लो का बनाया और मुख़तलिफ़ इस्तलाही नामों से मौसूम किया जाता है। आमतौर से ईट

और चूने से पत्थर के नमूने का तावहज़ कब्र पर बनवा दिया जाता है। हिन्दुस्तान में सबसे ज्याद क़ीमती और नादिर रोजगार तावीज़ रौज़ा ताजगंज में है।
2. पलंग की षक्ल का तावहज़ इसतलाहन पलगड़ी का तावीजत्र कहलाता है। जो मुस्ततील हौदे की षक्ल का होता है जिसके बीच में मिट्टी भर दी जाती है।
3. वो तावीज़ जिसकी सतह पर भरने को छोटी सी हौदी बनी हो हौदे का तावीजत्र कहलाता है। इस हौदी में परिन्दो के पीने को पानी भरा रखते है।
4. वो तावीज़ जिसका ऊपर का हिस्सा मेहराबदार हो उोले का तावीज़ कहलाता है और मेहराबी भी कहते है।
5. ज़नानी कब्र का तावीज़ जिसके ऊपर वस्त में तकिएनुमा षक्ल बना देता है। जो ज़नानी कब्र की अलामत समझी जाती है। इस्तलाहन गहवारे का तावीज़ के साथ बोला जाता है।
तकफ़ीन (पु0)– मइय्यत को कफ़नाना या कफ़न का इन्तजाम करना। देखो तजहीज़ और तजहीज़ व तकफ़ीन लत्ज़ तकफ़ीन आमतौर से तजहीज़ के साथ बोला जाता है।
तकिया (पु0)– बस्ती के बाहर फकीरों वनबासियों ओर आजाद मंष के लोगों की गुज़र बसर या वक्त गुजारी की जगह। ऐसा मुक़ाम आमतौर से ग़ैर आबाद जगह होता है। इसलिए दुनिया से बेतालुल्क़ या किनाकष लोगों का ठिकाना बना रहता है। और यही इसकी वज़ह तसमिया है। इस मुकाम के करीब कुछ ऐसे फक़ीर पेषा भी रहने लगते है। जो दफ़न कफ़न के काम मामूली मुआवज़े पर जरुरत मंदो की ख़िदमत कर देते है। और यही वजह है कि तकियेदार का ताल्लुक तकिये से करीब के कब्रस्तान से भी हो जाता है।
तकियेदार (पु0)– तकिये का मुत्तवल्ली या ऐसा षख़्स जो उस जगह की निगाह दाष्त रखता हो या वहाँ रहता हो।
तोषा (पु0)– सुमाली हिनद के मुसलमानों की ख़ास इस्तलाह मुराद हलवारोटी जो मइय्यत के साथ कब्रस्तान भेजी जाए और दफत्रन के बाद किसी फक़ीर को खिला दी जाए। दक्कन और खसूसन हैदराबाद रियासत में आमतौर से मुषाफिर के साथ के नाष्ते को कहते है। षुमाली हिनद में इस लफ़्ज का इस्तेमाल बदषगुनी समझा जाता है जिस तरह दक्किन में ज़ियारत का लत्ज़।
तीजा (पु0)– सोम, सोयम, सोयम मरने वाले के सोक की तक़रीर (मज़लिस) जो आमतौर से तीसरे दिन की जाती है इसलिए षुमाली हिन्द में इसको तीजा या सोम कहते है। तफसील के लिए देखो फूल फिकरा–2 (करना, होना)
टड़ी/ठडी (स्त्री)– देखो अर्थी
जनाज़ा (पु0)– अरबी बयामनी ताबूत उर्दू में मइय्यत के लिए बोला जाता है यानि मइय्यत जो दफ़न करने के लिए तैयार कर ली गई हो। उदाहरण– मस्जिद में एक तरफ को जनाज़ा रखने को जगह बची हुई हो।
चालिसवाँ (पु0)– देखो चहलुम
चिराग़ा (पु0)– गोर कनो की इस्तलाह मुराद कब्र के सराहने चराग रोषन रखने का अमल। कब्र के सराहने चराग़ रखने को बनी हुई बुर्जी–ताके मज़ार।
चुनरी (स्त्री)– हिनदुओं में सुहागन की मइय्यत पर डालने का सुर्ख़ कपड़ा। दक्किन के बाज नौ मुस्लिम घरानों में भी यही खाज है।

चहल्लुम (पु0)– मइय्यत की मजलिस सोम जो चालिस रोज गुजत्ररने के बाद जाए और यही उसकी वजह तस्मिया है। इस रोज़ मइय्यत के नाम पर ख़ैरात की जाती है। और इसी किस्म की बाज़ दूसरी रस्मे पूरी की जाती है (करना) उर्दू में इस रस्म को चालिसवाँ कहते है।
छमाही (स्त्री)– मइय्यत की मजलिस सोग जो छः माह गुजरने के बाद की जाए और उस रोज उसके नाम पर खैरात भी की जाती है। रस्म है मुर्दे की छः माही एक ख़ल्क का ही इसी चलन में मंदार मुझको देखो तो हूँ बकैद हयात और छः माही हो साल में दो बार।
हाजिरी (स्त्री)– वो खाना जो मइय्यत के रिष्तेदार मइय्यत के वुरसा वग़ैरह के लिए सोग के तीन दिन तक हस्बे हैसियत बारी–बारी से भेजे सोम तक ये सिलसिला जारी रखने का रिवाज है (देना, भेजना)
दफ़न कफ़न के बाद का पहला खाना।
दामिनी (स्त्री)– पारसियों (आतिषपरस्त) के मुर्दे रखने का कुएँ की षक्ल का बना हुआ तहख़ाना।
दसवाँ (पु0)– मइय्यत की मजलिसे सोग जो दस दिन गुज़रने के बाद की जाए। देखो चहलुम, छः माही वगैरह (करना)
दफ़नाना (क्रिया)– देखो तदफ़ीन
दम निकलना (क्रिया)– जानदार की मौत वाक़े होना
देसा (पु0)– देखो बर्सी फिकरा–2
डोला (पु0)– दक्किन के मुसलमानों मइय्यत के उठाने की चारपाई की वजा की बनी हुई चीज षुमाली हिन्द में डोला और डोली का मफ़ूम बिल्कुल जुदा है देखो जल्द पंजम
डाटा (पु0)– कपड़े के तीन चार उँगल चौड़ी पट्टी जो दम निकलने के बाद फौरन मइय्यत की ठोढ़ी के गिर्द लेकर सर पर बाँधी जाए ताकि मइय्यत का मुँह बन्द रहे और खुलने न पाए (बाँधना)
ढॉडी (स्त्री)– ढ़ाटे का दूसरा तल्लफुज़ देखो ढ़ाटा
रौज़ा (पु0)– देखो मकबरा फिकरा–2
ज़ियारत (स्त्री)– देखो फूल फिकरा–2,3
सरदाबा/सरदावा (पु0)– फ़ारसी में तहख़ाने को कहते है। जो गर्मी के मौसम में दोपहर के वक़्त गुजारने को जमीन के अन्दर बना लिया जाए। उर्दू इस्तलाह में ख़ाली क़ब्र जो किसी के लिए क़ब्ल अज़ वक़्त बना कर तैयार की गई हो या कब्र के लिए मख़सूस की हुई जगह को कहते है। (बनाना)
संगे तुर्बबत (पु0)– देखो तावीज़ और लौ।
सोग (पु0)– मइय्यत का गम (करना) में होना मइय्यत के गम की मुद्दत जो रिवाज़न मुक़र्रर हो गुज़ारना।
सोम/सोयम (पु0)– देखो तीजा
सीना बन्द (पु0)– देखो कफत्रन फिकरा–3
षाहिद (पु0)– वो पत्थर जो मइय्यत को दफ़न करने के बाद ताज़ा कब्र के सराहने बतौर निषानी लगा दिया जाए। ताकि उस जगह का कब्र का होना मालूम हो।
षहरे ख़मोषा (पु0)– गोरकनो की इस्तलाह मुराद क़ब्रस्तान
सन्दूक (पु0)– गोरकनो की इस्तलाह मुराद क़ब्र का घड़ा (लहद) जिसकी षक्ल सन्दूक की सी बनाई जाती है। और षायद यही उसकी वजह तसमिया है।
ताक़े मज़ार (पु0)– देखो चिरागा फिकरा–2
उज़्र ख़्वाही (स्त्री)– देखो पुर्सा (करना)
उर्स (पु0)– बुर्ज़ग गसे दीन की वफ़ात की याद का सलाना जलसा। बर्सी दैसा (करना)

अरफ़ा (पु0)– देखो तबारुक फिकरा–2 (करना)
ग़ससाल (पु0)– मुराद षू मइय्यत को गुसुल देने वाला ये लत्ज़ मइय्यत ही को गुसुल देने वाले के लिए मख़सूस है।
कब्र (स्त्री)– 1. गोर, मरक़द, मज़ार, लाष के दफ़न करने का गढ़डा, लहत आमतौर से सन्दूकी कब्र बनाई जाती है जो सन्दूक की वज़ा पर होती है।
2. एक ख़ास तरह की कब्र को बगत्रली कब्र कहते है। जो कब्र के गढ़डे के बगत्रली पाखे को खोल कर खोली षक्ल बना ली जाती है और लाष को उसके अन्दर रखकर असल गढ़डे (लहद) को मिट्टी से भर देते है इसमे पटाव की जरुरत नही होती।
3. सन्दूकी कब्र की बग़लियाँ जिसमें पटाव रखा जाता है इस्तलाहन कब्र का पाया कहलाता है।
4. लकड़ी या पत्थर जिसमें लहद ढ़की या बन्द की जाती है। पटाव कहलाता है। और कड़ा भी कहते है।
कब्रस्तान (पु0)– गोरस्तान क़ब्रो का मैदान यानि मुक़ाम जो क़ब्रे बनाने के लिए मखसूस हो।
कब्रपोष (पु0)– कब्र पर डालने की चादर बग़ैर अज सब्जा पनोषद कसे मज़ार मेरा की कब्रपोष गरीबा है गया बस अस्त।
कुल (पु0)– तकियेदार की खास इस्तलाह मुराद कब्रों पर हाजिर होकर मुर्दो के लिए दुआए ख़ैर करना जिसको इस्तलाहन फातिहा ख़्वानी कहा जाता है। ये इसतलाहन हज़रत ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार का भी रहमतआले की दरगाह के लिए मख़सूस है (करना, होना)
काल करना (क्रिया)– इन्तकाल करना।
कच्ची कब्र (स्त्री)– देखो तुरबत ऐसी कब्र जिसमें चूना, ईट या पत्थर वगैरह न लगाया गया हो।
किरपाल (पु0)– करयाल हिन्दुओ में लाष के जलने के दौरान में खोपी फोड़ने की रस्म जो लाष का वारिस अदा करता है ये रस्म अदा करना निहायत जरुरी और लाजिम होती है। (करना)
क्रियाकरम (पु0)– देखो पचरसदान
कड़ा (पु0)– गोरकनो की इस्तलाह मुराद कब्र के पटाव का कोई सिरा या पटाव के ऊपर का पूरा हिस्सा जो चालिस रोज के बाद कब्र को पक्का बनाने के लिए खोला जाता है। (खोलना)
कफ़न (पु0)– 1. मइय्यत को पहनाने का लिबाज़ या कपड़े जो हरमजहब के रिवाज़ के बमुअज्जब होते है। मुसलमानों में मर्द के लिए तीन कपड़े औरत के लिए पाँच कपड़े होते है।
2. वो कपड़े जो मर्दानी और जनानी मइय्यत के लिए मुशतरक है। कफ़नी इज़ार और लिफ़ाफा कहलाते है। लिफ़ाफे का दूसरा नाम पोट है। कफ़नी कुर्ते को इज़ार अन्दर की चादर को और लिफ़ाफा (पोट) ऊपर की चादर को कहा जाता है यानि वो दोनों चादरें जिसमें मइय्यत को लपेटते है।
4. औरत के कफ़न में दो जायद कपड़े ओढ़नी और सीना बन्द होते है ओढ़नी को दामिनी भी कहते है। (देना) मइय्यत के लिए कफ़न फराहम करना।
कफ़नाना (क्रिया)– देखो तकफ़ीन कफ़न पहनाना।
कफ़न चोर (पु0)– वो षख़्स जो कब्र में से मुर्दे का कफ़न निकाल लें।
कफ़न दोज़ (पु0)– कफ़न सीने वाला।
कफ़न काठी करना (क्रिया)– देखो तजहीज़ व तकफ़ीम करना। कफ़न दफ़न करना।
कफ़नी (स्त्री)– देखो कफन फिकरा–2

कुमर गढ़ढ़ा (पु0)– हिन्दी इस्तलाह मुराद नबालिग लड़के की कब्र। हिन्दुओं में नबालिग बच्चे की लाष को अगर छोटी हो तो दरिया में बहा देते है और बड़ी हो तो गढ़ढ़ा खोद कर दबा देते है। ऐयी कब्र कुमर गढ़ढ़ा कहलाती है।
कन्धा देना (क्रिया)– मइय्यत के ढ़ोले को कन्धे पर उठाना। मइय्यत को कब्रस्तान ले जाने के लिए साथियों का बारी बारी से ढ़ोले को कन्धे पर उठाकर चलना।
गुज़रना (क्रिया)– इन्तकाल करना, फोत हो जाना।
उदाहरण– आज एक बहुत बड़ा आदमी दुनिया से गुज़र गया।
उदाहरण– वबा में हजारो आदमी गुज़र गये।
गिल दर गिल करना (क्रिया)– गोरकनो की इस्तलाह मुराद लहद में मिट्टी का पतला गारा बना कर मइय्यत को उसके अन्दर उतार देना यानि दलदल बना कर उसके अन्दर रखना।
गवर (स्त्री)– देखो कब्र
गवरस्तान (पु0)– देखो कब्रस्तान
गवरकन (पु0)– कब्र खोदने और लाष दफ़न करने वाला मजदूर। कब्र खोदने और बनाने का काम मामारी से मुत्तलिक़ है। गवरकनी कोई अलहैदा पेषा नही था लेकिन बड़े बड़े षहरो में जहाँ 24 (चौबिस) घण्टे मौते होते रहती है वहाँ बाज मजदूर कब्रस्तानों के करीब रहने लगते और कब्र खोदने (गवरकफ़न) का पेषा इख़्तियार कर लेते है। इस तरह यह एक अलहैदा पेषा कहलाने लगा।
गवर व कफ़न (क्रिया)– देखो तजहीज़ व तक़फीन
गोले का तावीज़ (पु0)– देखो तावीज़ फिकरा–4
घन्ट (पु0)– हिन्दी इस्तलाह मुराद मइय्यत के नाम पर पानी रखने का मटका जो किसी दरख़्त में लटका दिया जाता है।
महवारा (पु0)– पारसी में षेर ख़्वार बच्चे के सोलाने की झूले की पलगॅड़ी को कहते और गोरकनो की इस्तलाह में जनाना मइय्यत के पर्देदार ढ़ोले को कहते है जिसमें लाष छिपी रहे।
माहवारे का तावीज़ (पु0)– देखो तावीज़ फिकरा–5
लाष (स्त्री)– नाष मुर्दा जिस्म
लहद (स्त्री)– गवर का गढ़ढ़ा लाष को दबाने गढ़ढ़ा (खोदना, बनाना)
लिफ़ाफा (पु0)– देखो कफ़न फिकरा–2
लोहे (स्त्री)– संगे तुरबत इस्तलाहन कब्र के सिराहने लगी हुइ पत्थर की सिल जो हस्बे जरुरत बनाई और मइय्यत का नाम ओर तारीख इनतकाल वगैरह कुन्दा करके लगा दी जाती है।
मिट्टी देना (क्रिया)– लाष को कब्र में रखकर हाजिर अलवक्त लोगो का रस्मन गढढे में मिट्टी डालना।
नठ्ठा (पु0)– लाष के ऊपर लिपटी हुई चादरों के सिरों का बन्द जो सर और पैर की तरफ धज्जी से बाँध दिया जाता है।
मद्फन (स्त्री)– लाष के दफ़न करने की जगह मुराद कब्र।
मुर्दा षो (पु0)– देखो ग़ताल
मरक़द (पु0)– अरबी लत्ज़ बमाने ख़्वाब गाह उर्दू में मिजाजन व इस्तलाहन कब्र को कहते है। और अपने असली मानो में नही बोला जाता है।
मरघट (पु0)– हिन्दु के मर्दे जलाने की जगह।
मुरैठा (पु0)– देखो ढ़ाटा

मज़ार (पु0)– अरबी लत्ज़ बमानी जियारत की जगह उर्दू में क़ब्र के लिए बोला जाने लगा है।
पसमर्ग मज़ार पे मेरे जो दिया किसी ने जला दिया।
मेरी आह दामने बाद ने आखिर षाम उसको बुझा दिया।
मकबरा (पु0)– क़ब्र की जगह इस्तलाहन क़ब्र के लिए बनाई हुई इमारत मुराद ली जाती है।
2. बुर्ज़ग गाने दीन और काबिले एहतराम अषख़ास के मकबरे को अदबन रौज़ा कहते है जिसके मानेहरा भूरा बाग है।
मौता/मोती (स्त्री)– मइय्यत की जमा उर्दू में मर जाने के मानो में वाहिद बोला जाता है। और मइय्यत के मानो में भी।
उदाहरण– हमारे मुहल्ले में कल एक मौता हो गई।
मइय्यत (स्त्री)– लाष, नषा, मुर्दा मौता, इन्सान का जिस्म बेजान (सौपना) लाष को आरजी तौर पर कुछ दिन के लिए दफ़न रखना ऐसी सूरत में जब कि उसको किसी दूसरी जगह दफ़न करना मंजूर होता है।
हौदा (पु0)– पटाव से ऊपर क़ब्र का गढ़ढ़ा जो मिट्टी से भर दिया जाता है।
हौदे का तावीज़ (पु0)– देखो तावीज़ फिकरा–3

पेषा गदागरी

इस हाथ दे उस हाथ ले (मुहावरा)– गदागरों का मुहावरा मुराद भलाई या बुराई का बदला फौरन मिलता है या जैसा करना वैसा भरना।
बरकत है (मुहावरा)– गदागर के सवाल का नफ़ी में जवाब बरकत के मानी ज्यादती के है। लेकिन गदागर के सवाल पर किसी चीज का न होना कहने के बजाए बरकत है कहते है। जैसे दस्तरख़्वान बढ़ाना चराग़ ठण्डा करना वग़ैरह।
भागवान का भला– दाता का भला। गदागरों का कलमा दुआइयाँ मुराद नसीबा वरो और ख़ैरात करने वालों को खुदा अच्छा रखें।
भिखारी (स्त्री)– भिखमंगा भीख पर गुज़र बसर करने वाला।
भण्डार (पु0)– देखो लंगरख़ाना
भीख (स्त्री)– सदक़ा या ख़ैरात की तलब (माँगना) दान तलब करना।
भिखमंगा (पु0)– भीख मागने वाला
टक्कड़गदा (पु0)– रोटी के टुकड़े को मोहताज भिखारी।
टक्कुड़गदाई (स्त्री)– रोटी के टुकड़ो के लिए सवाल।
जुमेरात भरी मुराद (मुहावरा)– गदागरो का तकिया कलाम मुराद जुमेरात का दिन। मुरादे पूरी होने (दुआ कुबूल होने) का होता है इस लिए खैरात का दिन है।
झोली (स्त्री)– परोता परतवा, पर्ती, गदागर की थैली।
दाता की ख़ैर :– गदागरो का तकिया कलाम मुराद ख़ैरात करने वालो का भला हो।
दिलअद्दर (पु0)– तंगहाली नहूसत, बुरे हाल (दूर होना)
वोह दर दुनिया सत्तर वर आख़ेरत :– गदागरो का तकिया कलाम मुराद ख़ैरात करने का बदला दुनिया में दस गुना और आख़रत में सत्तर गुना मिलता है इस लिए ख़ैरात करना अच्छा है।

धन्य हो (कलमा दोआइयाँ)– भलाओं यानि ख़ैरात करने वालो का भला हो।
राहे मौला (स्त्री)– मालिक (खुदा) के नाम पर ख़ैरात माँगने का सवाल।
सॉई (पु0)– सरदार, आक़ा, मालिक, एख़लाकन गदागरो को कहते है।
सख़ी का भला :– गदागरो का तकिया कलाम मुराद नेक काम में खर्च करने वालो की ख़ैर रहें।
सदा बरत (पु0)– लंगर ख़ैरात जारिया सदका जो जारी रहें।
सराद (स्त्री)– ख़ैरात का खाना।
सवाल करना (क्रिया)– माँगना तलब करना। गदागरों की इस्तलाह में भीख माँगना।
सदक़ा रद्द बला :– गदागरों का तकिया कलाम मुराद ख़ैरात देने से बलाए और मुसीबते दूर होती है।
फ़ाका (पु0)– रिज़्क़ से महरुमी खाने को न होना। ख़ाली पेट (होना, करना)
फ़कीर (पु0)– गदागर तंगहाल रिज़्क का मारा।
कजकोल (पु0)– कषकोल का गलत तल्लफुज़ देखो कषकोल।
किरपा करना (क्रिया)– मेहरबानी करना। मुराद ख़ैरात देना।
कषकोल (पु0)– कजकोल, कठकारी, कासागदाई, भिखमंगो का प्याला।
कंगाल (पु0)– भुख्खड़, फ़ाक़ा ज़दा, भुखा, महरुम, फ़कीर।
खोजड़ा (पु0)– तबाह हाली महरुमी, सत्यानाष (निकलना)
गुप्त दान (पु0)– छिपी ख़ैरात
कठकारी (स्त्री)– देखो कषकोल
लंगर (पु0)– सदाब्रत ख़ैर जो ख़ैरात के तौर पर फ़कीरो को रोजाना तकसीम हो।
लंगर ख़ाना (पु0)– वो मकान जहाँ फ़कीरों को रोज़ाना ख़ाना तकसीम करने का इन्तजाम हो।
माई का भला :– गदागरों का तकिया कलाम मुराद घरवाली का भला हो।
मुर्ग़ फड़फड़ाना (मुहावरा)– मुर्ग़ को सदके में उतारना मुर्ग़ वारना।
मँगता (पु0)– भीख माँगने वाला गदागर
निर्धन (पु0)– मोहताज, मुफ़लिस फ़कीर, बेनवाँ वो षख़्स जिसके पास खर्च को कुछ न हो।
वारना (क्रिया)– सदक़ा उतारना
हथ उठवा (पु0)– दस्त नगर ख़ैरात पर बसर करने वाला।

पेषा बनबासी (त्यागी)

———————————

आसनी (स्त्री)– साधू के बैठने की गद्दी या जगह।
अतीत (पु0)– रोषन ज़मीर दखेष साधू ऋृशि, पहुँचा हुआ सॉई।
अचुत (पु0)– नेक सालह परहेज़गार
अधकार (पु0)– ज़ाहिद, नेकूकार, अल्लाहवाला
उरनास (स्त्री)– जोगियों के इबादत को बैठने की ऊनी गद्दी।
अरहन्ट (पु0)– जीतनी पेषवाँ, मौ देवता का लक़ब
स्तहान (पु0)– देखो धार
इमाम (पु0)– तसबी के सिरे के निषान का लम्बोतरा दाना जो ढ़ोरे में खड़ा पिरोया हुआ होता है।

ओरवा (स्त्री)– बारीक बटे हुए तॉगो की बनी हुई जीतनी फ़क़ीरो की चौहरी।
बाग़ अम्बर/बागम्बर (पु0)– षेर या चीते की खाल जो साधू आसनी के लिए इस्तेमाल करते है।
बानपरस्त (पु0)– वो बनबासी जो औरत के साथ होने के बावजूद जनसी जबड़े पर पूरा–पूरा काबू रखता हो। और औरत की सोहबत कोई असर न कर सकें।
बिजिया होम (पु0)– जोगी की हालते जज़्ब
बरम गात्री (स्त्री)– देखो पूजा पाठ और ध्यान जान
बरम मुण्ड (पु0)– जोगियो की इस्तलाह मुराद दिमागत्र की एक खुफ़िया कूबत का नाम। मुसलमान दरवेष अख़फ़ा कहते है।
2. दिमाग का एक मुक़ाम
ब्रह्यचारी (पु0)– तारक ख़्वाहिषात दरवेश, खुदा की राह में नफ़्स को मारने और उसपर काबू पाने वाला फ़कीर या साधू।
बलहारी (पु0)– फ़िदाई दीन वा मज़हब के षयदाई।
बैरागी (पु0)– तर्के दुनिया जोग लेनाफ़कीरी अख्तियार करना।
2. बैरागियों की इमदात का चनदा जो किसान से लिया जाए।
बैरागी (पु0)– त्यागी, तर्के दुनिया
बैरागन (स्त्री)– तर्के दुनिया औरत
2. बैरागी के हाथ की लकड़ी या असा।
भभूत (पु0)– राख जो जोगी इबादत के वक़्त बदन पर मले (रमाना)
भगत (पु0)– परहेज़गार जाहिद खुदा की राह में जिन्दगी बसर करने वाला।
भक्ति (स्त्री)– परहेज़गारी ज़ोहद मज़हबी रियाज़त
पाठ (स्त्री)– ध्यान जान करना।
पखण्डी (पु0)– जोगी के रुप में चण्डाल, फ़रेबी धोखेबाज़।
पूजापा (पु0)– चढ़ावा, नज़र व न्याज़ की चीज़
पिरभी (स्त्री)– दुआ कुबुल का वक़्त निजात का वक़्त।
प्रतिमा (स्त्री)– मूरत का एक मन्दिर से दूसरे मन्दिर में मुन्तक़िल करना। स्थापन
परमहंस (पु0)– देखो मजजूब
पषपटा (स्त्री)– पूजा पाठ, नजर व न्याज़ की चीज रखने का वर्तन व थाली।
पंच अमृत/पंचमरत (स्त्री)– नज़र व न्याज़ या चढ़ावे की पाँच पाक और मुत्तबरर्क़ चीज़े।
2. गाय से हासिल की हुई पाँच चीज़े।
पंच चारिनी (स्त्री)– दरगाह या मन्दिर में रोषन रहने वाला चिराग। दीपदान
पक्ति (पु0)– पाक चीज़
पूजा (स्त्री)– इबादत
पूजा पत्र (पु0)– देखो पषपटा
पूजा वरा (पु0)– नज़र व न्याज़ की मखसूस एषिया
पहुँचा हुआ (पु0)– कल मिल दरवेष, रौषन ज़मीर देखो अतीत।
पीर औतार (पु0)– दरवेषो या तर्के दुनिया लोगो का रोज़ीना।
तामहान (पु0)– तामण कण्ड, कोसी बुत को गुसल देने का वर्तन।
तपस्या (पु0)– सेवा, ख़िदमत इबादत करना।

तिरसूल (पु0)– आहनी, ताषाख़ा महादेव का हथियार बयान किया जाता है इसलिए महादेव के पुजारी इसका नमूना हर वक़्त हाथ में रखते है।
उदाहरण– कबीर के मारने को तिरसूल उठाया। कबीर रम (4) कहकर ग़ायब हो गया।
तरकटी (स्त्री)– मुराक़बे के अमल का नाम जिसमें आँखो की नज़र (नाक के सिरे) पर कायम की जाती है।
तसबी (स्त्री)– जप माला, एक मुर्कर्रर तादात में अल्लाह का नाम लेने या उसकी तारीफ़ करने को षुमार दानो की लड़ी।
तमोगन (स्त्री)– नफ़्से अतारा बदी के जज़बात
तत्वजो (स्त्री)– रुखाई दरवेषो की इस्तलाह मुराद ध्यान ख़्याल की एक सूई कायनात में गौर (देने) अपने मुकाविल के ख़्यालात पर बातिनी असर डालना। ये असरे एहतेयात इस्लाह या ऐतक़ा के लिए होता है। इालिए ऐतेहादी इसलाही और अरतक़ाई तत्वजा कहलाती है।
त्यागी (पु0)– तर्के दुनिया
जात देना क्रिया)– मन्नत उतारना नज़र पेष करना।
जप माला (स्त्री)– जपनी देखो तसबी
जपना (क्रिया)– विज़्र करना, अल्लाह के नाम को दोहराते रहना या जबान पर जारी रखना।
जपनी (स्त्री)– सुमिरन तसबी, देखो जपमाला।
जत्ती (पु0)– जैनी फ़रको में के एक फरर्क़ का पुजारी।
जटा धारी (पु0)– सर के बाल बढ़ाने और लटके रखने वाले साधु।
जुग (पु0)– 30 (तीस) हज़ार साल का एक जमाना जिसका हर एक दिन चार जुग का होता है।
जगमोहन (पु0)– मन्दिर के भजन या भजन टोली।
जोगी (पु0)– आज़ाद कलन्दर वो बनबासी जो न किसी मज़हब का मुख़तालिफ हो और न किसी ख़ास मज़हब का पीर हो। बल्कि अपने गुरु (मुरार्षद) के हुक़्म से अपने लिए इबादत का कोई ख़ास तरीका इख़्तियार करें।
जोगन (स्त्री)– जोगी का इस्म तानीज़
2. षहवते नफ़सानी
जोन (स्त्री)– जिन्दगी ज़माना हयात (बदलना) दूसरी जिनदगी हासिल होना तबदील जिस्म।
जीव आत्मा (स्त्री)– छत्र यज महान रुहे एहसास
2. दूसरी रुह जिसमें पहली रुह आराम या तकलीफ़ पाती है।
झाड़ना (क्रिया)– दम करना मन्त्र प्ढ़कर किसी मर्ज या इसरार का ईलाज करना, दूर करना।
चरन अमृत (पु0)– गुरु का पैर धोवन
चरन बरत (पु0)– देखो चरन अमृत, तब्बरुक़, प्रसाद।
चिल्ला (पु0)– चालिस रोज़ की गोषागीर अबादत ध्यान ज्ञान जो दरवेष दिल की सफाई के लिए किया करते है।
2. वो मुक़ाम जहाँ चालिस रोज़ बैठकर इबादत की जाए।
चन्दन खोरी (स्त्री)– देवताओं की मूरत के लिए सन्दल घिसने की कटोरी।
चन्डाल (पु0)– नफ़्स के धौख में आया हुआ षख़्स बद नफ़्स।
चेला (पु0)– मुरीद देखो मुरीद

चौथा खण्ड (पु0)– साधू की इस्तलाह मुराद फ़कीरी का वो दर्जा जिसमें जिसमानी रन्ज व खुषी में तमीज़ न हो। मंजिल तौहिद फनानी अल्लाह
चौथे खण्ड चढ़ करे जो बासा मरन जीवन का रहे न सासा।
चोला (पु0)– साधुओं की इस्तलाही मुराद जिस्म ख़ाक़ी जिसमें रुह कैद रहती है (बदलना)
दर्षन (पु0)– बुर्जुग कि ज़ियारत दीदार (देना, होना)
दक्षना (पु0)– पेषकश नज़राना नकदी वगैरह जो तर्के दुनिया लोगो को दी जाए।
दम करना (क्रिया)– देखो झाड़ना
दोधारी (पु0)– साधुओं का एक फ़र्क़ा
ध्यान जान (पु0)– बर्म गात्री पूजा पाठ, जिक्र फ़िक्र यादे इलाही और उसकी मख़लूक़ पर गौर।
धार (पु0)– स्थान बुद्ध फ़कीरो की इबादत करने का तनहाई का मुक़ाम।
धुलकार/धुलकर (पु0)– षिव की मूर्त का हिनडोला
दण्डवत (स्त्री)– गुरु पेषवा या देवता के सामने इजहार कमतरी जो हाथो को कोहिनियों तक जोड़ करकी जाए (करना)
ढोंड़े (पु0)– चीनी मज़हब का एक फ़रका जो नापाक रहना और मुँह के सामने कपड़ा बधा रखना बुर्जुर्गी समझता है।
ज़िक्र व फ़िक्र (पु0)– यादे इलाही और मख़लूक़ में गौर
ऋृशि (पु0)– अल्लाह का वली अल्लाह का भेजा हुआ पयअम्बर।
रुखाई (स्त्री)– रुख़ का गलत तल्लफुज़, मुराद तत्वजा (करना, देना) देखो तत्वाजा।
रमना (पु0)– बनबासी का किसी एक मुकत्राम को पसन्द करके वहाँ मुक़ीम हो जाना।
2. जंगली जानवरों के आराम लेने की महफूज और सूनसान जगह।
रुप दर्षन (पु0)– बुर्जुगो के दीदार का नज़राना पेषकष, नकदी चढ़ावा।
रहे नाम सॉई का :– फ़कीरो का तकिया कलाम मुराद अल्लाही का नाम बाक़ी रहने वाला है।
जाहिद (पु0)– पाक और परहेज़ गारी की जिन्दगी बसर करने वाला, हराम व हलाल में तमीज करने वाला, अल्लाह का वली।
सालिक (पु0)– पाबन्दे षरियत या मज़हब का पाबन्द आलिम बअम्ल दरवेष।
सतोगन (स्त्री)– नेकी के जज़बात नेक नफ़सी बदी से पाक।
सुर्ती (स्त्री)– ख़्याल, ध्यान, कायामत में फ़िक्र करने वाला सफ़ात–ए–ईलाही का षाहिद।
सरगती (पु0)– अलहे सफ़ात
सरुप (पु0)– भगवान का रुप देखो रुप
समपष्त (पु0)– बुत बिठाने का तीन ख़ानो का ज़र्फ़
सधीची पलि (स्त्री)– बुत को नहलाने के पानी का जर्फ़
संकल्प (स्त्री)– मज़हबी रस्म अदा करने की नियत (करना)
सन्यासी (पु0)– त्यागी बनबासी जिसने तमाम ख़्वाहिषान्त को तर्क कर दिया हो।
सिंहासन (स्त्री)– करोपरष्त पूजा के वक्त बुत बिठाने की चौकी।
स्वामी (पु0)– मालिक, आक़ा, ऋृशि
स्वतम्बरी (पु0)– जैनी फर्के के फ़कीर जो अपने मुँह के सामने कपड़ा बाँधे रखते हैं।
सेवा (स्त्री)– ख़िदमत, अताअत, पुजा (करना)
सेवड़े (पु0)– जौनी फ़र्के के फ़कीरो का एक गिरोह।

षश्य ज़रबी (पु0)– असमॉस्ता जोगियो में जिक्र ईलाही का एक तरीका जिसमें छः कलमे बतौर मोअम्मा वित करते है।
षुमार दाना (पु0)– तसबी में 11 (ग्यारह) दानो की एक लड़ जो जिक्र की तादात षुमार करने को होती है।
फ़िदाई (पु0)– देखो बलहारी वो दरवेष जो अपने को किसी ख़ास अक़ीदे के लिए वक़्त कर दें।
कलन्दर (पु0)– देखो जोगी
कामी (पु0)– नफ़्स का षहवानी जज़बा।
षहवत परस्त (पु0)– ख़्वाहिष पर काबू न पाने वाला।
कपाली (स्त्री)– जिस दम जोगियों की एक रियाजत जिसमे सॉस को पेट में रोकने की मूष्क की जाती है। और रुह को दिमाग की तरफ मुन्तक़िल करने की। बाज़ जोगियो ने इस रियाज़त में कमाल हासिल किया है। और मुद्दतो एक हालत में बैठे रहे है। कपाली के दो अम्ल होते है एक चेतनताड़ी कहलाता है उसमें होष हवास दुरुस्त रहते है। दूसरा चढ़तारी इसमें होष व हवास बाक़ी नही रहते। (चढ़ाना)
करामाती (पु0)– वो दरवेष जिसमें ख़िलाफ़ आदत काम जाहिर हो। ख़र्के आदत।
करुपरत/गरुरपरत (स्त्री)– देखो सिंहासन
कुषासन (स्त्री)– घास फस की बनी हुई गद्दी (आसनी) जिसपर साधू बरवक़्त इबादत बैठते है। (षीतल पाटी)
कमण्डल (पु0)– साधू के हाथ का दस्पना। या लोहे का गज जो किसी अकीदे के तौर पर रखा जाता है।
कनफटा जोगी (पु0)– वो जोगी जो गुरु के नाम पर कान छिदवा कर कड़ा डाल ले।
कंचल क्रिया (स्त्री)– हाथी का फ़ाल साधुओं की इस्तलाह मुराद पानी पीकर पेट साफ करना ताकि रियाज़त में ख़राबी न हो।
कोसी (स्त्री)– देखो तामहान
केलना (क्रिया)– मन्त्र से किसी को काबू में करना, बन्द करना, रोक रखना।
गुरु (पु0)– मुरार्षद, पीर, राहे हिदयत दिखाने वाला।
ग्रन्थी (पु0)– साधुओं का एक फिरक़ा।
2. जैनियो की गाँठ को ग्रन्थ कहते है।
गोसाई (पु0)– नेक, बुर्जुग अल्लाह वाला, फ़क़ीर बनबासी।
गुण्डा (पु0)– गण्डा अुआ दम किया हुआ मनत्र पढ़ा हुआ डोरा जो किसी मर्ज़ या इसरार के लिए मरीज़ के बाँधने के लिए किसी आमिल से लिया जाए। (बाँधना)
गंगाजली (स्त्री)– गंगा का पानी बतौर तब्बरुक रखने का ज़र्फ़।
लोग (पु0)– देवताओं का मकान या ठहरने का मुकाम।
माठ (स्त्री)– ख़ानकाह तकिया, किसी महन्त का आश्रम।
मजज़ूब (पु0)– वो दरवेष या बनबासी जो इष्क़ ईलाही के जज़्बे में बेख़द हो और मासवाँ की ख़बर न हो।
मुरषिद (पु0)– गुरु पीर राहे हिदायत बताने वाला।
मिक्र झाला (पु0)– हिरण की खाल जो साधू ओढ़ने बिछाने के काम लाये।
मुरीद (पु0)– चेला, षागिर्द, गुरु का फरमाँ बरदार।

मुनि (पु0)– वो बनबासी जो चुप साध ले यानि बात करना तर्क कर दें।
2. जैनी फ़र्क़ो का एक फ़क़ी जो नंगा रहता है।
मौज (स्त्री)– फ़कीरो की इस्तलाह मुराद सुख जज़बा खुषी (आना) अच्छे ख़्याल में होना खुषी में आना।
महन्त (पु0)– बड़े बुर्जुग साधू ज़हिद।
नाती (स्त्री)– जोगियो की इस्तलाह मुराद मोम चढ़ी रेषमी धज्जी जिसको वाहे जस दम की मष्क के लिए नाक के नथने साफ करने के लिए नाक में डाल कर हलक़ से निकालते है। (करना)
2. निसबती रिष्तेदार
नानक पन्थी (पु0)– नानक के मानने वाले साधुओं का एक फ़र्क़ा।
नरक (स्त्री)– नफ़्स अज़ाब रुहानी तकलीफ़ (दोज़क)
निर्जन (पु0)– प्पी या कोई और अच्छा रोग़न जो मन्दिर के चरागत्र में जलाया जाए।
नरंगनी (पु0)– एहले जात दुनिया से मुँह मोड़ने और अल्लाह की तरफ रुज होने वाला फ़नि चीज़ो से बेपरवाह।
हलकाँरनी/हलकोरनी (स्त्री)– खुषबुऐं जलाने का ज़र्फ़ जिसमें खुषबूदार मसाला आहिसता आहिसता जल कर धुआ दें।